जाहरपीर : गुरु गुग्गा

डा० सत्येन्द्र एम० ए० पी-एच० डी०
रीडर—आगरा विश्वविद्यालय हिन्दी विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा प्रकाशन

प्रकाशक
सागर विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
सागर।

मुद्रक—
सागर यूनीवर्सिटी प्रेस सागर।

प्रथमावृत्ति ५] दिसम्बर १९९९ [मूल्य

जाहरपीर : गुरु गुग्गा

[एक लोक-पाषड तथा तद्विषयक लोक-साहित्य का अध्ययन]

'जाहरपीर' को ही गुरु 'गुग्गा' भी कहा जाता है। जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा का व्रज में बहुत महत्व है। पेंजर महोदय ने 'कथा-सरित्सागर' के प्रथम भाग के प्रथम परिशिष्ट 'पश्चिमोत्तर प्रदेश' के सबध में लिखा है—"In the census returns 123 people recorded themselves as votaries of Guga, the snake-god"

'जनसख्या-गणना में १२३ व्यक्तियो ने लिखाया कि वे सर्प-देवता गुग्गा के भक्त हैं'।[१]

गोगा चौहान के सबध में टाड महोदय ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ में तीन स्थानो पर कुछ उल्लेख किया है। एक स्थान पर उन्होने लिखा है—

"गोगा चौहान वछराज का पुत्र था। सतलज से हरियाना तक के समस्त प्रदेश पर उसका अधिकार था। उसका स्थान मेहरे या 'गोगा की मेढी'[२] सतलज पर स्थित था। महमूद के पहले भारतीय आक्रमण में गोगा चौहान ने अपने पैंतालीस पुत्रो और साठ भतीजो के साथ इस स्थान की रक्षा में प्राण त्यागे।" वह रविवार था, तिथि थी नवमी। राजपूताने के छत्तीसों कुल[३] इस दिन को गोगा की स्मृति में पूज्य मानते हैं। मरुभूमि में जहा 'गोगा देव का थल' है, वहाँ तो इसकी बहुत मान्यता है। गोगा के घोडे 'जवाडिया' का नाम भी बहुत लोकप्रिय हो गया है। राजपूताने भर में श्रेष्ठातिश्रेष्ठ युद्ध के अश्व को 'जवाडिया' का प्रशसा सूचक नाम दिया जाता है"।[४]

---

१ The Ocean of Story Vol I p 203 (Tawney & Penzer)

२ "His tomb 200 miles to S W of Hissar, 20 miles beyond Dadrera His territory Hansi to Garra (Gharra) capital Mehera on river" यह सूचना ईलियट महोदय ने दी है।

३ टाड ने पाद-टिप्पणी में लिखा है 'छतीस पौन'। 'Chatees Pon'

४ Tod Annals and Antiquities of Rajasthan (popular edition) Volume II P 362

टाड महोदय ने मन्दौर में जो भव्य स्मारक नागदा के किनारे देखे थे उनमें से एक म उन्होंने देखे गणेश भैरु (हम) चामुंडा कंकाली मातली[१] उसके बाद की पंक्ति में सबसे आगे मल्लिनाथ तब पाबू जी रामदेव राठौर, हरबा सांकला गोगा चौहान तथा मेवोह मंगलिया। इसी वर्णन में गोगा चौहान के संबंध में टाड ने फिर लिखा है कि—

'गोगा चौहान जो अपने सेंतालीस पुत्रों के साथ महमूद के आक्रमण में सतलज मार्ग की रक्षा करता हुआ बलि गया'।[२]

गोगा चौहान (मन्दौर)

टेम्पल महोदय ने जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा का एक बड़ा लोकगीत अपने संग्रह में दिया है। यह गीत वास्तव में 'स्वांग' है जो बागड़ में खेला जाता था। इसकी भाषा हिन्दी है। एक दूसरा गीत उन्होंने सिरसो के मिरासी गायक से लिया है। जे० डी० कनिंघम महोदय ने 'हिस्ट्री आफ द सिक्स' (संवत् १८५१) में पृष्ठ ११ पर पाद-टिप्पणी में गोगा का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि "पंजाब के निचले हिमालयों में गूगा अथवा गोगा के बहुत से मन्दिर हैं और मैदानों का बागड़ वर्ग भी ऐसे ही प्राचीन

१ Is a statue of the Nathji or spiritual guide of the Rahtores in one hand he holds his mala or Chaplet in the other his Churri or patriarchal rod for the guidance of his flock. Tods Raj Vol. I p 574

२ Tod's Rajasthan Vol I p 574

वीर की स्मृति के प्रति श्रद्धा रखता है। उसके जन्म अथवा उद्भव के कितने ही विवरण दिये जाते हैं। एक उसे गजनी का प्रमुख बताता है, और अपने भाई उर्जुन और सुरजन से लडाई करने वाला कहता है। दोनो भाइयों ने उसे मार डाला पर अचानक एक चट्टान फटी और उसमें से गूगा शस्त्रास्त्र सज्जित घोडे पर सवार प्रकट हुआ। एक अन्य विवरण में उसे रजवर्रा (Rajwarra) जगल के दर्द दरेहरा का स्वामी कहा गया है। यह टाड के वर्णन से कुछ कुछ मिलता है, जो इसी वीर के सबध में है, जो महमूद की सेना से लडते लडते मारा गया। वोगेल ने 'इडियन सर्पेण्ट लोर' मे लिखा है कि गूगा पर बहुत लिखा जा चुका है।[७]

इनके बाद जाहरपीर अथवा गुरु गुग्गा पर अन्य आधुनिक उल्लेख मिलते हैं। इनसे यह अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है कि गुरू गुग्गा राजस्थान, पजाब और पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में विशेष मान्य रहा है।[८] गुजरात में भी इसकी प्रतिष्ठा है पूर्व मे इसका नाम प्राय नही मिलता।

राजपूताना गजेटियर के उल्लेखो मे बताया गया है कि —

स्वय मदौर मे, मोतीसिंह के बाग के पास कुछ चैत्य हैं जो मारवाड के अतीत गौरव की गाथा कहते हैं। इसके समीप ही एक और महत्त्वपूर्ण स्थान है जिसे तेतीस करोड देवताओ का स्थान कहा जाता है। इसमें १६ विशाल प्रतिमाएँ हैं। इन प्रतिमाओ में से सात प्रतिमाएँ इस प्रकार है —

१ गुसाई जी एक बडे धर्म गुरु।

२ मल्लिनाथ जी ये राव सलखा के ज्येष्ठ पुत्र थे। उन्ही के नाम पर मल्लानी जिले का नामकरण हुआ है।

---

७ वही उसने निम्नलिखित साहित्य का उल्लेख किया है —

1 A Cunningham A S R Vols XIV p 79 ff
2 A Cunningham ,, ,, XVII p 159
3 Ind Ant. Vols XI-p 53f
4 ,, ,, XXIV pp 51 ff
5 D. Ibbetson Karnal Settlement Report. P 379
6 W Crooke Popular Religion Vol. 1 pp 211 ff
7 Kangara District Gazetteer p 102 f
8 H A Rose Punjabi Glossary Vol 1 pp 171 ff
9 Mandi State Gazetteer pp 144 ff
10 Chamba state Gazetteer pp 183 f

८ राजपूताना गजटीयर खड ३ अ (Vol IIIa) द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट रेजीडेंसी तथा बीकानेर एजेंसी टेक्स्ट लेखक मेजर के० डी० आर्सकाइन I A, C I E पायोनियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, में पृष्ठ १९७, २५६ तथा ३८७-३८८ पर टिप्पणिया हैं।

विमर्श

सबसे पहला प्रश्न उठता है कि भारतीय धर्मों के विकास में इस जाहरपीरी अनुष्ठान का क्या स्थान है ?

यदि इस समस्त लोकवार्त्ता का विश्लेषण किया जाय तो विदित होगा कि

(अ) (१) गुरु गुग्गा एक योद्धा अथवा वीर हैं ।
     (२) वे ऐतिहासिक पुरुष हैं ।
     (३) उनकी अकाल मृत्यु हुई है ।
(आ) वे जाहरपीर कहलाते हैं ।
(इ) उनकी लोकवार्त्ता का संबंध गायों से है । नाग उनकी पूजा के माध्यम हैं ।
(ई) वे सिर खाने वाले या सिर बोलने वाले देवता हैं ।
(उ) सिर खाने के अनुष्ठान में उनके जीवनवृत्त का वर्णन और गायन प्रधान माध्यम है । दर्शन के लिए 'पट-चित्र' रहता है ।
(ऊ) कोड़ा या चाबुक एक प्रधान उपादान है ।
(ए) गुग्गा का संबंध घोड़े से भी है जो उनके साथ पैदा हुआ ।

पहले दो प्रश्नों का संबंध 'नाम' से भी है । 'गुरु गुग्गा' अथवा गोगापीर और जाहरपीर ऐसे नाम क्यों ? लोकवार्त्ता न नाम साम्य से एक व्युत्पत्ति बताती है ।

गुरु गोरखनाथ की सेवा की बाछल ने फल देने का अवसर आया तो उसकी बहन काछल गुरु गोरख के पास पहुँची । गुरु गोरखनाथ ने उसे फल दे डाले । बाद में पहुँची बाछल । अब गुरुजी के पास क्या था ? जो देना था वे दे चुके । पर सेवाएँ तो बाछल ने की थीं । फलतः गुरुजी ने झोले में से 'गूगल' निकाल के दी । गूगल से पैदा होने के कारण ही गुरु गुग्गा नाम पड़ा । गूगल' गूगल गुग्गा अथवा गोगा भी । ऐसे विश्वासों के आधार पर ऐसे नाम रखे जाते हैं इसमें संदेह नहीं । यह गुग्गा भी इसी नियम से रखा गया है । किन्तु आज ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता । नाम निश्चय ही कुछ अद्भुत है और अभी अनुसंधान चाहता है । गोगा की कहानी में गौओं से भी उसका संबंध है उस संबंध से गोगा गौओं की रखवाली करनेवाला भी हो सकता है ।[१] किन्तु यह नाम जितना लौकिक विदित होता है उतना संस्कृत नहीं ।

इसी के साथ इसके आगे प्रश्न आता है फिर यह 'जाहरपीर" क्यों कहलाये ।[११]

---

१ डा वासुदेवशरण अग्रवाल के परामर्श पर श्री अम्बाप्रसाद सुमन ने लिखा है 'जाहरपीर' को गूगापीर (सं गोवह-गोग्गह-गोगा—यह मध्यकालीन नाम था । जो लोग गायों की रक्षा के लिए मरते मरते प्राण दे देते थे वे गोगा कहाते थे) भी कहते हैं । "पीर शब्द "वीर शब्द का पूर्तिका वैशाची रूप विदित होता है । डा रांगेय राघव ने इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा है
"यदि गूगा "जहर" का अपभ्रंश है तो"

११ ईलियट ने लिखा है कि मराठे इन्हें जाहिरपीर कहते हैं [Mahrattas call him Zahir Pir' —M H T R. of N W Pr पृ सं (२२२)

'वीर'[१२] शब्द का अर्थ वुजुर्ग या गुरू होता है, अत "गुरू" को पीर नाम दिया गया। यह ठीक ही है। पर, यह 'जाहर' क्या है? समस्त कथा में इस "जाहर" शब्द का रहस्य नही खुलता। 'जाहर" यदि 'जाहिर' का ही दूसरा रूप है तव तो 'प्रत्यक्ष' या प्रकट अर्थ हो सकता है। तव "जाहरपीर" का अर्थ होगा, ऐसा गुरू जो अपने गुरुत्व को प्रकट दिखा रहा हो। कोई कोई जाहर को 'जहर' भी कहते हैं। जहर अथवा विप से सम्वन्ध रखने वाला गुरु। गुरू गुग्गा का सवध सर्पों से माना जाता है। क्रुक्स ने उसे सर्पों का देवता माना है। गुरू गुग्गा की प्राय प्रत्येक वार्त्ता में यह उल्लेख है कि उसने माता के पेट में से ही सर्पों को विवश किया था कि वे उसकी माँ के वैलो को डस लें, जिससे मा अपने मायके न जा सके। तव जाहरपीर का अर्थ हो सकता है जहर वाले सर्पों से सवध रखने वाला गुरू। किन्तु ये सभी वातें अधकार में टटोलने के समान प्रतीत होती हैं।" मूल कथा में 'जाहरपीर' का रहस्य नही खुलता। इस शब्द का उसमें अर्थद्योतक प्रयोग तक नही हुआ। 'पीर' शब्द धार्मिक क्षेत्र में विविध पीरो की परपरा की ओर सकेत करता है। उधर "जाहरपीर" का सवध नाथ सप्रदाय से है। आज तक "नाथ" लोग ही इसे अपनाये हुए हैं। प्रत्येक कथा में गुरू गोरखनाथ अवश्य आते हैं। इससे इसका सवध गोरखपथी नाथ-सप्रदाय से होना चाहिये।

नाथ सप्रदाय में एक "जाफरपीरी" सप्रदाय का उल्लेख मिलता है। [देखिये—नाथ-सप्रदाय, लेखक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी] जाफर का जाहिर या जाहर होना असभव नही है। या तो यह "जाफरपीर" ही "जाहरपीर" है या "गुरू गुग्गा" "जाफरपीर" के सप्रदाय के प्रसिद्ध पीर हैं। पीर के सवध में योगियो में जो रिवाज प्रचलित हैं उनकी ओर ध्यान जाता है।[१३] इनसे भी यह सिद्ध होता है कि 'पीर' का

---

१२. पीर शब्द वीर से उत्पन्न माना जाय तो प्रश्न यह आता है कि वह 'गुरू' का पर्यायवाची कैसे हुआ? योगियों के सवध में डा० रांगेय राघव न अपने प्रवध 'गोरखनाथ' में वताया है कि "योगियो में श्राद्ध नही होता। वरसी होती है। बरसी पर सात गद्दिया वनायी जाती हैं जो १ पीर, २ जोगिनी, ३ साख्य, ४ वीर ५ धन्दारी (गोरखनाथ के रसोइये) ६ गोरखनाथ और ७ नेक के लिए होती हैं। पीर की गद्दी को सोने चादी के सिक्के और गाय दी जाती है, वीर को तावा आदि [गोरखनाथ (प्रवन्ध) टकित प्रति पृ० ३५६।] यहा पीर और वीर दोनो शब्द अलग अलग अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

१३ प० झावरमल्ल शर्मा ने एक पाद-टिप्पणी में लिखा है—

"अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अन्यतम आदि कार्यकर्ता प्रख्यात प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पचानन का अनुमान है कि गोगाजी चौहान को जो मुसलमान जाहिरपीर कहने लग गये, इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होने गोगाजी के "गो" और "गाजी' टुकडे कर लिए। और "गो" के साथ "गाजी का योग देखकर अपने विश्वासानुसार पीर कहने लग गये। जाहिर का अर्थ तो "प्रकट" या प्रकाश है, किन्तु यहा जाहिरपीर का मतलव जौहर या जुझार मालूम होता है। (शोध पत्रिका भाग १, अक ३, 'गोगा चौहान पर एक दृष्टि'।) यह भी एक अनुमान ही है।

३ पाबूजी राठौर राजपूत इनके विषय मे कहा जाता है कि ऊंट का पहले पहल इन्होंने ही प्रयोग किया। ये गायो के रक्षक थे।

४ रामदेवजी ये तोमर राजपूत थे इनका संबंध दिल्ली के अनंगपाल के घराने से था। इन्होने रामदेवरा नामक ग्राम बसाया था (पोकरन से लगभग १ मील)। यहा प्रतिवर्ष अगस्त या सितम्बर मे रामदेवजी के सम्मान में एक मेला लगता है। रामदेवजी कभी कभी रामशाह पीर भी कहे जाते हैं। निम्नवर्गीय जनता इनकी पूजा करती है। कहा जाता है कि इन्होने कभी मूठ नही बोला था। सन् १४५८ में आपने जीवित समाधि ली थी यह कहा जाता है।

५ हरभूजी ये पँवार राजपूत थे। इनका संबंध साकली से माना जाता है। ये फँमोदी के समीप बैंगटी गाँव के रहने वाले थे। यहा पर इनकी एक गाड़ी बताई जाती है जो आज भी पूजनीय है। राउ जोधा के ये कृपापात्र थ।

६ जाम्भा जी ये भी पँवार राजपूत थे। ये बीकानेर के हरसर नामक स्थान के थे। बिश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक के रूप में मान्य है।

७. मेहाजी गहलौत या सिसोदिया वश के एक राजा थे।

८ गोगाजी चौहान राजपूत थे। ये मुसलमान हो गये थे। हाँसी से सतलज तक इनका राज्य था। कहा जाता है कि ये दिल्ली के फिरोजशाह द्वितीय के साथ लड़ते लड़ते मारे गये। यह युद्ध ११ वी शती के अन्त की घटना बताया जाता है।

९ जसधरनाथ जी नाथ सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध योगी थे। इनके एक मंधव देवनाथ थे जो महामन्दिर में एक विश्राम मन्दिर के नीव डालने वाल के रूप में मान्य हैं।

राजपूताना गजेटियर्स खड तृतीय ए, पृष्ठ २९७
दी वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एण्ड दी बीकानेर एजेंसी
बाइ मेजर के डी आर्सकाइन आई॰ए सी आई ई इलाहाबाद
द पाइनियर प्रेस १९ ९

गुरु गोगा जी —

गुरु गोगा जी योद्धा संत थे। इनके सबध में जो विवरण राजपूताने के विभिन्न भागो में प्रचलित है उनमें बहुत भिन्नता मिलती है। साप के काटे हुयो की रक्षा करने वाले के रूप में इनकी प्रसिद्धि है। इनका मूर्ति की पूजा या कभी में होती है घोडी पर चढ़े हुए अथवा सर्प के रूप में। इनकी पूजा कई वर्गों में प्रचलित है।

[राजपूताना गजेटियर खड तृतीय ए॰ पृष्ठ २२६, द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजीडेंसी एण्ड द बीकानेर एजन्सी आदि।]

"उत्तर पूर्व में गोगाना नामक स्थान पर एक पशुओं का मेला अगस्त तथा सितबर में होता है। इस मेले में १ ।१२ हजार आदमी भाग लेते हैं। इसे गोगा मेड़ी मेला के नाम से पुकारा जाता है। यह नामकरण 'गोगा चौहान' राजपूत के नाम पर हुआ है। ये मुसलमान हो गये थे। इनका राज्यकाल ११ वी शती माना

जाता है । इनका राज्य हाँसी से सतलज तक बताया जाता है । अनेक गाँवों की जनता का विश्वास है कि इनकी मढ़ी में मन्दिर के एक बार दर्शन करने से साँप के काटने से मुक्ति हो जाती है । यहाँ से एक मील की दूरी पर एक गोरख टीला है । इसके संबंध में बताया जाता है कि यह स्थानीय संत गोरखनाथ का पहला निवास-स्थान है । इनके संबंध में केवल इतना ही ज्ञात है कि ये एक पहुँचे हुए सिद्ध योगी थे ।

[वही, पृष्ठ ३८७]

राजगढ़ तहसील रेनी से दक्षिण पूर्व में एक दद्रेवा[६] नामक गाँव है । यह पश्चिमी किनारे पर है । यह मुसलमान चौहान सन्त गोगा की राजधानी बताया जाता है । इसका वर्णन पहले 'नोहर तहसील', वाले विवरण में आ चुका है । यहाँ गोगा के सम्मान में प्रति वर्ष भादो (अगस्त-सितम्बर) में एक छोटा सा मेला लगता है ।

[वही पृष्ठ ३८८]

यहाँ तक साहित्यिक और ऐतिहासिक उल्लेखों का विवरण दिया गया है ।

लोक-साहित्य में इसके दो रूप मिलते हैं । एक तो सामान्य मनोविनोदार्थ स्वांग वाला रूप जिसका संकलन टैम्पल महोदय ने किया है । यह जालंधर में खेला जाता था ।* ब्रज अथवा पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में स्वांग वाला रूप नहीं मिलता ।

ब्रज में गुरू गुग्गा के गीत का आनुष्ठानिक महत्त्व है । गुरू गुग्गा या जाहरपीर एक देवता के रूप में माने जाते हैं । इनके अनुयायी भक्त अपने घरों पर इनका जागरण भी कराते हैं और इनके थान की यात्रा भी करते हैं, यात्रा को 'जात' कहते हैं । जागरण के अवसर पर कपड़े पर कढ़ा हुआ इनका जीवनवृत्त दीवाल पर टाँग दिया जाता है, और एक बड़ा लोहे का कोडा या चाबुक जागरण करनेवाला नाथ हाथ में लिये रहता है । जागरण में गुरू गुग्गा का गीत गाया जाता है । इस गीत में गुरू गुग्गा का ही जीवन-वृत्त रहता है । उसे गाते गाते नाथ पर गुरू गुग्गा का आवेश आ जाता है, नाथजी खेलने लगते हैं । जागरण अब सफल माना जा सकता है । इस समय गुरू गुग्गा अथवा जाहरपीर से मनचाही मुराद माँगी जा सकती है और अन्य विविध बातें भी पूछी जा सकती हैं ।

जात में गुरु गुग्गा के सोहले गाये जाते हैं ।

इस प्रकार गुरू गुग्गा विषयक इस दूसरे प्रकार के लोक-साहित्य का धार्मिक महत्त्व है ।

---

६ एक जातक में उल्लेख है कि दर्दर (पालि० दद्दर) दर्दर-नाग पहाड़ के नीचे रहते थे । इ० सर्पेण्ट लोर-वोगेल, पृष्ठ, ३२

*दूरान्वय से तो यह स्वांग वाला रूप भी अनुष्ठान का अंग माना जा सकता है । यक्ष-पूजा में किसी विशिष्ट यक्ष से संबंधित घटनाओं का नाटक खेला जाता था । बौद्ध जातक में उल्लेख है कि जीवक ने एक यक्ष का मंदिर बनवाया था और उसके जीवन की घटनाओं को नाटक के रूप में अभिनय द्वारा प्रस्तुत कराया था ।

विमर्श

सबसे पहला प्रश्न उठता है कि भारतीय धर्मों के विकास में इस जाहरपीरी अनुष्ठान का क्या स्थान है ?

यदि इस समस्त लोकवार्ता का विश्लेषण किया जाय तो विदित होगा कि

(अ) (१) गुरु गुग्गा एक योद्धा अथवा वीर हैं ।
(२) वे ऐतिहासिक पुरुष हैं ।
(३) उनकी अकाल मृत्यु हुई है ।

(आ) वे जाहरपीर कहलाते हैं ।

(इ) उनकी लोकवार्ता का संबंध गाथा से है । गाथ उनकी पूजा के माध्यम हैं ।

(ई) वे सिर आने वाले या सिर बोलने वाले देवता हैं ।

(उ) सिर आने के अनुष्ठान में उनके जीवनवृत्त का वर्णन और गायन प्रधान माध्यम है । दर्शन के लिए 'पट-चित्र' रहता है ।

(ऊ) कोड़ा या चाबुक एक प्रधान उपादान है ।

(ए) गुग्गा का संबंध घोड़े से भी है जो उनके साथ पैदा हुआ ।

यहाँ दो प्रश्नों का संबंध 'नाम' से भी है । 'गुरु गुग्गा' अथवा गोगापीर और जाहरपीर ऐसे नाम क्यों ? लोकवार्ता न नाम साम्य से एक व्युत्पत्ति बताती है ।

गुरु गोरखनाथ की सेवा की बाछल ने फल देने का अवसर आया तो उसकी बहन काछल गुरु गोरख के पास पहुँची । गुरु गोरखनाथ ने उसे फल दे डाले । बाद में पहुँची बाछल । अब गुरुजी के पास क्या था ? जो देना था दे दे चुके । पर सेवाएँ तो बाछल ने की थीं । फलतः गुरुजी ने झोले में से 'गूगल' निकाल के दी । गूगल से पैदा होने के कारण ही गुरु गूगा नाम पड़ा । गूगल' गूगल गूगा अथवा गोगा भी । ऐसे विश्वासों के आधार पर ऐसे नाम रखे जाते हैं इसमें संदेह नहीं । यह गुग्गा भी इसी नियम से रखा गया है । किन्तु आज ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता । नाम निश्चय ही कुछ अद्भुत है और अभी अनुसन्धान चाहता है । गोगा की कहानी में गौओं से भी उसका संबंध है उस संबंध से गोगा गौओं की रखवाली करनेवाला भी हो सकता है ।[१] किन्तु यह नाम जितना लौकिक विदित होता है उतना संस्कृत नहीं ।

इसी के साथ इसके आगे प्रश्न आता है फिर वह "जाहरपीर" क्यों कहलाये ।[११]

---

१ डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के परामर्श पर श्री अम्बाप्रसाद सुमन ने लिखा है 'जाहरपीर' को गूगापीर (सं० गोग्रह-गोम्मह-गोग्गा — यह मध्यकालीन नाम था । जो लोग गायों की रक्षा के लिए मरते मरते प्राण दे देते थे वे गोगा कहाते थे) भी कहते हैं । 'पीर शब्द "वीर' शब्द का चूलिका पैशाची रूप विदित होता है । डा० रांगेय राघव ने इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए लिखा है
'यदि गूगा "गुग्गल' का अपभ्रंश है तो'

११ ईलियट ने लिखा है कि मराठे इन्हें जाहिरपीर कहते हैं [Mahrattas call him Zahir Pir' —M. H. F R. of N W Pr पृ० खं० (२६२)

'वीर'[१२] शब्द का अर्थ बुजुर्ग या गुरू होता है, अत "गुरू" को पीर नाम दिया गया। यह ठीक ही है। पर, यह 'जाहर' क्या है ? समस्त कथा में इस "जाहर" शब्द का रहस्य नही खुलता। 'जाहर" यदि 'जाहिर' का ही दूसरा रूप है तव तो 'प्रत्यक्ष' या प्रकट अर्थ हो सकता है। तव "जाहरपीर" का अर्थ होगा, ऐसा गुरू जो अपने गुरुत्व को प्रकट दिखा रहा हो। कोई कोई जाहर को 'जहर' भी कहते हैं। जहर अथवा विष से सम्वन्ध रखने वाला गुरू। गुरू गुग्गा का सबध सर्पों से माना जाता है। क्रुक्स ने उसे सर्पों का देवता माना है। गुरू गुग्गा की प्राय प्रत्येक वार्त्ता में यह उल्लेख है कि उसने माता के पेट में से ही सर्पों को विवश किया था कि वे उसकी माँ के बैलो को डस लें, जिससे मा अपने मायके न जा सके। तव जाहरपीर का अर्थ हो सकता है जहर वाले सर्पों से सबध रखने वाला गुरू। किन्तु ये सभी वातें अधकार में टटोलने के समान प्रतीत होती हैं।[१३] मूल कथा में 'जाहरपीर' का रहस्य नही खुलता। इस शब्द का उसमे अर्थद्योतक प्रयोग तक नही हुआ। 'पीर' शब्द धार्मिक क्षेत्र में विविध पीरो की परपरा की ओर सकेत करता है। उधर "जाहरपीर" का सबध नाथ सप्रदाय से है। आज तक "नाथ" लोग ही इसे अपनाये हुए हैं। प्रत्येक कथा में गुरू गोरखनाथ अवश्य आते हैं। इससे इसका सबध गोरखपथी नाथ-सप्रदाय से होना चाहिये।

नाथ सप्रदाय में एक "जाफरपीरी" सप्रदाय का उल्लेख मिलता है। [देखिये—नाथ-सप्रदाय, लेखक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी] जाफर का जाहिर या जाहर होना असभव नही है। या तो यह "जाफरपीर" ही "जाहरपीर" है या "गुरू गुग्गा" "जाफरपीर" के सप्रदाय के प्रसिद्ध पीर हैं। पीर के सबध में योगियो में जो रिवाज प्रचलित हैं उनकी ओर ध्यान जाता है।[१२] इनसे भी यह सिद्ध होता है कि 'पीर' का

---

१२ पीर शब्द वीर से उत्पन्न माना जाय तो प्रश्न यह आता है कि वह 'गुरू' का पर्यायवाची कैसे हुआ ? योगियो के सबध में डा० रागेय राघव न अपने प्रवध 'गोरखनाथ' में वताया है कि "योगियों में श्राद्ध नही होता। वरसी होती है। वरसी पर सात गद्दिया बनायी जाती हैं जो १ पीर, २ जोगिनी, ३ साख्य, ४ वीर ५ धन्दारी (गोरखनाथ के रसोइये) ६ गोरखनाथ और ७ नेक के लिए होती हैं। पीर की गद्दी को सोने चादी के सिक्के और गाय दी जाती है, वीर को तावा आदि [गोरखनाथ (प्रवन्ध) टकित प्रति पृ० ३५६।] यहा पीर और वीर दोनों शब्द अलग अलग अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

१३ प० झावरमल्ल शर्मा ने एक पाद-टिप्पणी में लिखा है—

"अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अन्यतम आदि कार्यकर्ता प्रख्यात प० जगन्नाथ प्रसाद जी शुक्ल आयुर्वेद पचानन का अनुमान है कि गोगाजी चौहान को जो मुसलमान जाहिरपीर कहने लग गये, इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने गोगाजी के "गो" और "गाजी' टुकडे कर लिए। और "गो" के साथ "गाजी का योग देखकर अपने विश्वासानुसार पीर कहने लग गये। जाहिर का अर्थ तो "प्रकट" या प्रकाश है, किन्तु यहा जाहिरपीर का मतलव जौहर या जुझार मालूम होता है। (शोध पत्रिका भाग १, अक ३, 'गोगा चौहान पर एक दृष्टि'।) यह भी एक अनुमान ही है।

संबंध किसी न किसी रूप में नाग से अवश्य है। क्योंकि बरसी पर केवल पीर को ही नाग की जाती है।

नाग अथवा सर्प-पूजा और गुरु गुग्गा :

गुरु गुग्गा का संबंध नागों या सर्पों से माना जाता है। इसे सर्पों का देवता भी कहा गया है। प्लूटार्क ने लिखा है कि 'पुराने जमाने के मनुष्य वीरों से सांप का संबंध विशेष दिखाते थे। अन्य पशुओं से उतना नहीं।[१४] वीरों का सांपों से किसी न किसी प्रकार का संबंध प्राचीन काल से ही चला आया है। ऐनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने आगे लिखा है कि —

'सालमिस के युद्ध व जहाजों में एक सर्प प्रकट हुआ था उसे वीर साइक्रीयस माना गया था। ये वीर किसी पाखंड (cult) की वस्तु हो जाते हैं या रोग निवारक स्थानीय देवी-देवता बन जाते हैं। इनकी समाधि के पास से जब लोग निकलते हैं तब आतंकित रहते हैं अथवा इनकी समाधि पर लोग भविष्य जानने या मानताएँ करने जाते हैं। (एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका)

इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नाग या सर्प का वीर-पूजा से घनिष्ठ संबंध है। किन्तु नागपूजा का इतिहास बहुत लम्बा और बहुत पुराना है। यह जानना आवश्यक है कि नागपूजा का कौन-सा रूप जाहरपीर गुरु गुग्गा से संयुक्त हुआ और क्यों?

गुरु गुग्गा का सर्पों से संबंध मानने का आधार यह है —

१ जैसा बीकानेर गजेटियर में लिखा है कि गूगा को सर्पदंश से बचाने वाला माना जाता है।[१५] गोगामेडी गाँव में जहाँ गोगामेड़ी का मेला होता है गोगाजी की समाधि है। इसकी जाति करने से सर्प कभी नहीं काटता।[१६]

२ मथुरा के भट्टानाथ वाले जाहरपीर के गीत में ये पंक्तियाँ आयी हैं

'बाहर को पैंच में स्योंपु लहरिया लेइ
पासों बेला डसि लए दादा ऐ दर्सन देइ

इस गीत के अन्तर्गत ही यह कथा है कि जब बाछल घर से निकाल दी गयी तो वह अपने मायके के लिए चली। मार्ग में गाड़ी रुकी। गूगा पेट में थे। उन्होंने सोचा कि यदि मेरी मां ननसाल पहुँच गयी और वहाँ मैं उत्पन्न हुआ तो मेरा नाम "निगुर्यो" पड़ जायगा। गूगा की मां का ननसाल जाना पसन्द नहीं आया। वह शक्ति के बल से पाताल में वासुकि के पास पहुँचा और उससे कहा कि चलकर मेरी मां की गाड़ी के बैलों को डस लो। सर्पों को उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ा।

---

१४ 'The men of old time as Plutarch observed associated the snake most of all beasts with heroes (Enc. Brit.)

१५. राजपूताना गजेटियर खंड तृतीय ए.पृ २२६

१६ " " पृ १४७

इस 'अभिप्राय' में कही कही कुछ हेर फेर भले ही हो पर यह मिलता सभी में है ।

३ कही कही 'नागपचमी' को भी गुरू गुग्गा का ही त्योहार माना जाता है ।

४ गुजरात की लोकवार्त्ता में उल्लेख है कि गूगा के साथ ही एक साँप भी उसकी माता के गर्भ से पैदा हुआ था। दोनो में बहुत प्रेम था। बाद मे यह साँप गूगा को आडे समय मे सहायता करता रहा था।

नाग-पूजा में साम्प्रदायिक पापड की स्थापना होने तक हमें निम्न विकास-क्रम विदित होता है —

अ	ऐनिमिस्टिक अवस्था [17]	१	किसी जाति का 'नाग' टोटम से सबध होना।
		२	जाति और टोटेम का एक नामकरण।
		३	वह जाति 'टोटम' की पूजा करने लगी।
आ	माइथिलाजिकल (पौराणिक अवस्था)	४	उस जाति में पूज्य टोटेम विषयक गाथाओ का निर्माण
इ	सिद्ध अवस्था	५	'टोटम' को पूजा के लिए प्राप्त करन के प्रयत्न, तत्सबधी सिद्धियाँ।

---

१७ ओ' मल्ले (O' Malley) ने 'पापुलर हिन्दुइज्म' में एक स्थान पर लिखा है —"इस प्रकार उदय होती है ऐनिमिज्म (Animism) अर्थात् यह विश्वास कि सभी वस्तुओ में आत्मा है, अथवा और विस्तृत अर्थ में, ऐसी प्रत्येक वस्तु जो किसी न किसी रूप में मनुष्य को प्रभावित करने की कुछ भी कार्यक्षमता रखती है, रूह (Sptrit) से तथा मनुष्य जैसी इच्छा-शक्ति (will) से युक्त होती है। फलत विश्व को उन आत्माओ से परिपूर्ण माना जाता है जो मानव को प्रभावित करने की शक्ति रखती है। इसका अनिवार्य परिणाम होता है कर्तव्यो का असाधारण वैविध्य, जिनका अच्छा सार मोनियर विलियम्स ने दिया है कि चट्टानें, लाट तथा पाषाण-खड, पेड,पुष्कर तथा नदिया, उसके व्यवसाय के औजार, उपयोगी पशु, भयावह सरीसृप, मनुष्य जो अपने असाधारण गुणो के लिए विख्यात हो चुके है, महान शौर्य, पवित्रता, गुण या दुर्गुण के लिए भी, अच्छे या बुरे दैत्य (demon), भूत और पिशाच, मृतपूर्वजो की आत्माए, अर्द्ध देव, प्रत्येक ही, नही सभी के सभी, दैवी समादर या पूजा में अपना अपना भाग रखते है।" ए० सी० टरनर ने कुमायू की जातियो का विवरण देत हुए डोमो के धर्म पर प्रकाश डाला है। डोमो का धर्म ऐनिमिस्टिक और दैत्य पूजापरक (demonistic) है। "अब भी डोमो के अपने देवता और मदिर हैं और अल्मोडा में इनके देवता हैं भोलानाथ, गगाराम, हरु, श्याम, ग्वाल, निरकार, आदि। इनमें से कुछ तो ऐसे मनुष्य थे जिन्होने घोर पाप कृत्य किये थे, इनके भूत की पूजा करनी पडती है, ऐसे भी हैं जिन्हें भयानक आघात मिला, या जो मार डाले गये, ये लोगो के सिर आ जाते है। डोमो में जगारिया (स्याने) यह बताते है कि कौन सा देवता सिर आया है। गाना और नाचना होता है, भेंट चढ़ती है, देवता या देवताओ की आत्मा जगारिया के सिर आती है, और वह तब निदान और प्रतिकार बताता है।"

ई	साम्प्रदायिक स्थिति	६	विशेष सम्प्रदाय अथवा पार्षद के रूप में स्थिति
उ	ह्रास	७	सम्प्रदाय का ह्रास अन्य पापडों से संबंध
		८	और सर्प से रक्षा की चिकित्सा का प्राधान्य पार्षद के सम्प्रदाय रूप का अभाव।

नागपूजा के इस विकास-क्रम में 'गुरु गुग्गा' के पार्षद का प्रारंभ 'ह्रास' काल में हुआ माना जायगा। अतः निश्चय ही गुरु गुग्गा का सर्पों या नागों से कोई मौलिक संबंध नहीं। यह संबंध उसे संयोग से प्राप्त हुआ है।

'संयोग' किस प्रकार घटित हुआ होगा। इसके संबंध में निम्न विकल्प हो सकते हैं —

१ गुग्गा का जन्म भादों में हुआ। इसमें 'नागपूजा' का महत्त्व है।
२ नागों से आजीविका करनेवाले समुदाय नाथ सम्प्रदाय में सम्मिलित हुए और उन्होंने ही 'गुग्गापीर' को अपना लिया।
३ वह स्थान जहाँ गुग्गा ने समाधि ली पुराना नाग-पूजा का स्थल हो या नागों से संबंधित किसी सिद्ध आदि से संबंधित हो।
४ अथवा ऐसे सिद्धों-पीरों से सामान्यतः यह भावना संलग्न ही हो कि उनके प्रभाव से नाग या सर्प का वश काम नहीं करता।

मुझे ऐसा विदित होता है कि ये सभी संयोग के कारण इस संबंध में प्रस्तुत रहे हैं।

(१) गुग्गा का जन्म भादों में नवमी को हुआ यह प्रसिद्ध है। यह नवमी नागा नवमी कही जाती है। इस दिन सर्प के रूप में गोगा की पूजा होती है। या कहीं कहीं नागपंचमी को गोगा या गूगा पंचमी भी कहा जाता है। इस तिथि के एकीकरण से और गूगा को सर्पों को विवश करने वाली लोकवार्ता से गूगा और सर्पों का संबंध सिद्ध हुआ होगा।

(२) सँपेरे भी कभी नाथ-सम्प्रदाय के अन्तर्गत न आज भले ही न हों। वे जोगी तो विदित होते ही हैं। सँपेरों के उद्भव के संबंध में एक लोकवार्ता भादों में प्रचलित है—

'गुरु गोरखनाथ अपने १४ चेलों के साथ कामरू पहुँचे। वहां शहर के बाहर एक स्थान पर उन्होंने अपने डेरे तम्बू लगा दिये। सब चेलों में शिरोमणि थे मछिन्दरनाथ। मछिन्दरनाथ के आदेश समस्त चेलों को गोरखनाथ जी ने भिक्षा के लिए नगर में भेजा। सभी जब नगर में इधर उधर भिक्षार्थ गए तो वहां की स्त्रियों ने जादू कारी मार कर, किसी को मैना बना लिया किसी को तोता किसी को दूबा बैल। गोरखनाथ ने बहुत प्रतीक्षा की। बहुत देर हो जाने पर भी कोई शिष्य लौटता नहीं दिखायी पड़ा। तब गोरखनाथ ने अपने बैल में से भोलनाथ को निकाला। भोलनाथ ने कामरू के सभी दूधा का जल सोख लिया। अपने डेरे के पास जो कुआँ

था उसमें ही रहने दिया। कामरूँ की स्त्रिया जल लेने उसी कुए पर आयी, तो मोख-नाथ ने उन्हें गदहिया बना कर एक पास की गुफा में वद कर दिया। अब कामरूँ म शोर मचा। गोरखनाथ ने कहा—हमारे चेलो को तुम लोग मुक्त करदो तो तुम्हारी स्त्रिया भी मुक्त हो जायगी। पुरुषो ने घरो में वद तोतो मैंनो के गले के वधो को तोड डाला, गोरखनाथ के शिष्य अपना अपना रूप पाकर गुरू के पास आगये। औघड-नाथ रह गये। वे एक तेलो के यहा वैल बने पाट चला रहे थे। गोरख ने वताया तो लोगो ने उन्हें भी मुक्त किया। तव गोरखनाथ ने मोखनाथ से कहा कि अव स्त्रियो को मुक्त कर दो। सोखनाथ ने सवको तो मुक्त कर दिया, पर वह एक धोविन पर रोझ गया, उसे नहीं किया। उसने गुरू से कह दिया "भले ही मुझे 'भेख' के वाहर कर दीजिये पर मैं इसे नही दूगा। गुरूजी ने धोवी को समझा दिया और सोखनाथ को शाप दिया कि तुम जगलो में रहोगे और साप खिला खिला कर अपनी जीविका चलाओगे। इन्ही मोखनाथ की परपरा में सँपेरे है।"[१८]

इससे यह विदित होता है कि सँपेरे कभी पूरी तरह गोरख सप्रदायानुयायी थे। गोरखनाथ ने कितने ही पथो को अपने क्षेत्र में से वहिष्कृत कर दिया था। सँपेरे उन्ही में से एक हैं। इस प्रकार सापो का गोरख-सप्रदाय से अप्रत्यक्ष सवध तो विदित होता ही है। गोरखनाथ सिद्ध थे, और उनकी आन मत्रो में विद्यमान है*। सापो को कीलने में अथवा उनका विप उतारने में भी गोरख-विधि का उपयोग होता होगा। अत गोरख-सप्रदाय से सवधित होने के कारण गूगाजी में भी गुरू विपयक सिद्धि की स्थापना हुई होगी, और गूगाजी सापो से सवधित हो गये होगे। भादो में जन्म लेने से जो मान्यता उन्हें मिली वह इस सयोग से और दृढ हुई होगी। यहाँ यह वात लिख देना आवश्यक है कि गोगाजी का सँपेरो से भी कोई सीधा सवध है, इसके प्रमाण नही मिले। नाथ सप्रदाय की सँपेरोवाली शाखा भी गूगाजी को मानती है यह विदित अभी तक नही हो सका है। गूगा को मानने वाले औघडनाथजी की परपरा में ही प्राय मिलते हैं। (३) गोगामेंडो अथवा गोगानो पशुओ के मेले के लिए प्रसिद्ध है, गोगाजी की कथा से यह विदित होता है कि माता से अपमानित होने पर वे गोरखनाथ जी से मिले। गोरखनाथ जी ने कहा कि यहा तुम अपना घोडा घुमाओ घोडे से वारह कोस का चक्कर लगाया, उसके वीच में धरती फट गयी, जिससे घोडे के साथ गोगाजी समा गये। वारह कोस का वह घेरा जगल होगया। यह कथाश यह सकेत करता है कि जहा गोगाजी ने समाधि ली वहा गुरू गोरखनाथ विद्यमान थे। इसमें ऐतिहासिक गोरखनाथ का उल्लेख है या नही, यह तो दूसरी वात है, पर यह कथाश इतना तो अवश्य ही वताता है कि जहा गूगा ने समाधि ली वह स्थान गोरख-नाथ का स्थान था। वह अवश्य गूगाजी से पूर्व गोरख के नाम से प्रसिद्ध रहा होगा। वही प्रसिद्धि वहाँ गूगा को मिली। यह वात लक्ष्य करने योग्य है कि समाधि से कुछ ही दूर, सभवत एक कोस पर, एक गोरखटीला आज भी गोगानो में विद्यमान है। इस

१८ सूखानाथ से प्राप्त। ये सिरोठी अछनेरा के हैं।

* देखिये—'भारतीय साहित्य' प्रथम अक, 'मत्र' शोर्पक लेख।

संभावना मे गूगा का नागों मे संबंध दृढ़तर किया होगा। और (४) इसमें भी कोई सदेह नही कि सिद्धों और नागों का एक विशेष प्रकार का संबंध लोकवार्ता मानती है। घर के व्यक्ति मृत्यु पाने पर सर्प-योनि में पितृ की स्थिति प्राप्त करता है। और घर में अपने प्रियजनों के बीच बने रहते हैं। जो व्यक्ति बहुत धन छोड़कर मरता है वह सांप बनकर उसकी रक्षा करता है। इस प्रकार सर्पयोनि पितृयोनि है अथवा प्रेत योनि है। गोगाजी मृत्यु के उपरान्त भी सिरियल से मिलते थे यह प्रेत की स्थिति है और इसके कारण उनका सांपों से संबंध परिकल्पित हुआ। (५) सांपों को भूमि-पुत्र माना जाता रहा है। भूमि गोक्ष होती है। गौ की रक्षा में प्राण देने और भूमि में समा जाने के कारण भी गूगा को सर्पों से संबंधित माना गया होगा। भूमि में समाकर गोगाजी पाताल में गये होंगे। पाताल ही सर्प-लोक है क्योंकि वे वहीं के देवता है। सीता जब भूमि में समायीं थी तो पृथ्वी माता सर्पों द्वारा वाहित सिंहासन पर बैठ कर पृथ्वी में से निकली थीं।

गूगा के संबंध में मिलनेवाली लोकवार्ताओं में सर्पों या नागों से एक संबंध तो ब्रज की कहानियों में आता ही है कि गूगा ने वासुकी को अपने चमत्कार से विवश किया कि वह या को गाड़ी के बैलों को डस ले। इसके अतिरिक्त भी सांपों से कई संबंध ब्रज से बाहरवाली गूगा कहानियों में हैं। गूगा जब विवाह के लिए गये तो मार्ग में सर्पों ने एक झील के ऊपर पुल बना लिया था। जिससे बरात पार उतर सके।[१९] दूसरी धाहर में जो किसी-किसी वार्ता में गूगा की ससुराल मानी गयी है, वासुकी की आज्ञा से सर्पों ने कोट का घेरा डाल लिया था। लुधियाने में यह माना जाता है कि गूगा मूलतः नाग था पर एक सुंदरी से विवाह करने के लिए उसने मनुष्य रूप धारण किया अंतत फिर नाग बन गया।[२०] यह भी कहीं माना जाता है कि बचपन में वह पालने में एक सांप का मुह चचोरते देखा गया था। वासुकि नाग ने उस सिरियल से विवाह करने में सहायता दी थी। राजा ने जब सिरियल का गूगा से विवाह करना अस्वीकार कर दिया तब बंगाल में जाकर गूगा ने बांसुरी बजायी जिससे वासुकि नाग आया और उसने तक्षक नाग को उसके साथ कर दिया। तक्षक नाग ने सिरियल को डस लिया फिर वैद्य बन कर राजा के पास पहुँचा और वचन लेकर कि राजा गूगा से सिरियल का विवाह कर देगा तक्षक ने सिरियल का विष उतार दिया।[२१] पंजाब की वार्ता में वासुकि नाग गूगा का प्रतियोगी था जिसे गूगा ने परास्त कर दिया था। गूगा की एक वार्ता में गुरुघर नामकी वासुकी नाग की पुत्री थी। गूगाराम की लोकवार्ता में गूगा के साथ साथ ही उसकी माँ के ही पेट से एक सांप भी पैदा हुआ था। इसी कारण उस महाराज की वह बहुत प्यार करता था। इस प्रकार लोकवार्ता ने गूगा और नाग के जिन संबंध की कल्पना की है वह ऊपर बताये गये कारणों से ही सिद्ध नहीं होती।

१९. Ind Ant XXVI p 51 quoted in Indian Serpent Lore
२० Ludhiyana Gazeteer 1901 p 88.
२१ R C Temple Legends of the punjab—vol. I p 121ff

किन्तु इन सबसे भी अधिक जो सभावना इन लोकवार्त्ताओ की झाँकी से मिलती है वह यह है कि 'नाग पापड" भारत का एक मौलिक और प्राचीन, सभवत वेदो से भी प्राचीन पापड है। यह एक लोक-सम्प्रदाय था। जब बौद्धधर्म लोक-सम्प्रदाय के रूप में खडा हुआ तो उसने 'नाग सम्प्रदाय' को तो 'आत्मसात' करने की चेष्टा की, और इसके लिए एक विधि का उपयोग किया। उसने नागो से किसी न किसी प्रकार का सबध स्थापित कर लिया। अत नागो का बौद्ध-धर्म से घनिष्ठ सबध हो गया। बौद्ध-धर्म के उपरात नाथ सम्प्रदाय ने यही चेष्टा की, और बौद्ध-धर्म के अवशेष का नागो से जो सबध रहा, वह गोरखनाथ से जुडा, वही जाहरपीर या गोगाजी से होगया। जाहरपीर के वृत्त में कई बौद्ध अवशेप विद्यमान हैं —

१ भगवान बुद्ध की मा अपने मायके जा रही थी, बुद्ध मायके में नही पैदा हुए बीच में एक कुज में पैदा होगये। यह बात गूगा की कहानी में है। गूगा ने अपने नाना के घर जन्म लेना ठीक नही समझा, मायके के लिए बाछल चल पडी थी, पर बीच ही से लौटना पडा।

२ भगवान बुद्ध ने एक नाग को अपने तेज से वश में किया था[२२]। पैदा होने के पूर्व ही गूगा ने अपने तेज से वासुकि को परास्त किया और उसे अपना आदेश पालने के लिए विवश किया।

३ नागो ने भगवान बुद्ध के लिए पुल तैयार किया था।[२३] ऐसा ही पुल सर्पों ने एक झील के ऊपर गोगाजी और उनकी बरात के लिए किया था।[२४]

४ भगवान बुद्ध का घोडा उसी दिन उत्पन्न हुआ था जिस दिन भगवान बुद्ध हुए थे। इसी प्रकार गूगा और उसके घोडे नीला या जवाडिया का जन्म भी साथ-साथ हुआ था।

जे० पी० ऐच० वोगल, पी-ऐच० डी० ने अपनी पुस्तक "इडियन सर्पेंट लोर" में नाग-पूजा के मूल और महत्त्व पर सक्षेप में विचार करते हुए कई मतो का उल्लेख किया है, जिन्हें हम अत्यन्त सक्षेप में यहा देते हैं

---

२२ उरुविल्व के कश्यपो के यज्ञगृह में एक भयानक सर्प था जिसके तेज को अपने तेज से भगवान बुद्ध ने हर लिया था। तब उस सर्प को उन्होंने भिक्षा-पात्र में में डाल लिया था (महावस्तु, विनयपिटक, महावग्गा में 'इडियन सर्पेंट लोर' में उल्लेख।)

२३. दे० दिव्यवदान। तक ISL पृ० ११६

२४ इम सबध में वोगल महोदय की टिप्पणी सभिप्राय है —

'This and some other details of his story seem to be reminiscences of Buddist Lore, ISL p 264

१ मत	२ माननेवाले	३ साहित्य
१ नाग मूलतः सर्प नहीं थे। ये सर्पपूजक थे। ये उत्तरी भारत में बसे हुए थे और तूरानी शाखा की आदिम जाति के थे। इन्हें आर्यों ने आकर अपने आधीन किया। आर्य या द्रविड़ सर्पों की पूजा करने वाले नहीं थे।	जेम्स फरगुसन	ट्री एंड सर्पेंट वरशिप (१८६८)
२ नागों का संबंध उन दैत्य-सत्ताओं (demoniacal beings) से है जिनका सबसे अच्छा स्वरूप (were wolve) में प्रगट होता है। ये मनुष्य के रूप में भी दिखायी पड़ते हैं। इनका मूल वह भावना है जो पशुओं और मानवों में अविच्छिन्न अभेद मानती है इसी भावना के परिणाम स्वरूप 'नाग' देखने में आदमी लगते हैं जब कि हैं वे वस्तुतः सर्प। एक बौद्ध ग्रंथ के अनुसार उनका सर्प-स्वभाव दो अवसरों पर उद्घाटित होता है मैथुन समागम तथा शयन में।	श्री ओल्डनबर्ग	Die Religion des Veda
३ नाग भारत जल-आत्माएँ (water spirits) हैं। ये प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण हैं। साँपों की तरह फुफकारें मारते बिजली चमकते हुए, वर्षा के बादल आकाश के नाग हुए, ये ही झीलों और तालाबों में पृथ्वी पर उतार लिये गये और अन्त में विषधर सर्पों से इनका एकीकरण होगया।	हेन्रिक कर्न	Over den Vermoldelijkan oorsprong der Naga Vereeringe Bijdr etc
४ नाग सूर्यवंशी एक जाति थी फनधारी नाग इसका टोटेम था। उत्तरी भारत में तक्षशिला इसका प्रधान नगर था। तक्षक उनका नायक था।	१ डा सी ऐफ ओल्डम २ ई डबल्यू हॉपकिन्स	1 The Sun and the Serpent (London. 1905) २ ऐपिक माइथालोजी
५. यह मान्यता कि मृत राजा प्राचीन काल में सर्प-योनि में जन्म लेते थे इसी कारण उनकी पूजा प्रचलित हुई।		

१ मत	२ माननेवाले	३ साहित्य
६ नागपूजा का मूल जटिल है। किसी एक बात को उसका कारण नही माना जा सकता — १. सर्प की पशु रूप में पूजा है। २ सर्प केल हरने के साम्य से जल, स्रोत तथा नदी के देवी-देवताओ का प्रतीक भी यह होगया है। ३. इसमें वैदिक 'अहि' की जैसी भावना का भी आरोप हुआ है—जिससे तूफान और प्रकाश के अधकार से होनेवाले सघर्ष विषयक महान गाथा (myth) का सवध भी दिखायी पडता है।		
७ नागपूजा के आरभ का पहला वीज वस्तुत सर्पके भय से ही उगा। तव उनके विशिष्ट स्वभाव के कारण विविध कल्पित तत्त्व जुडे १ सांपो को पृथ्वी, अतरिक्ष और स्वर्ग में व्याप्त २ उनमें माना गया। विलक्षण शक्तियो की उद्भावना की गयी।		

(अ) वर्षा में विलो में पानी भरने से इनके वाहर निकलने से उद्भावना कि सर्पो में वर्षा लाने की चमत्कारिक शक्ति है।

(आ) उसके चलने में आवाज न होने, से उद्भावना—नाम लेते ही प्रकट होते है। अत इनका नाम लेना ही वर्जित होगया।

(इ) सर्प दो जीभें निकालता है इससे उद्भावना कि सर्प हवा पीकर जीता है। हवा खाकर रहना तपस्वी का चरम उत्कर्ष, अत सर्प तपस्वी का आदर्श।

(ई) केंचुली उतारना देखकर उद्भावना कि इस कचुली में आख से लगा लेने पर आदमी अदृश्य हो सकता है।[२५] केंचुली में चमत्कारक गुण माना गया है।[२६] इसीसे सर्पों को अमर माना गया कि वे केंचुली उतारकर नया शरीर धारण करते है और अमर हो जाते है।[२७]

(उ) सर्प काटने से तुरत मृत्यु होने के कारण उद्भावना कि सर्पो में वह जादुई

---

२५ सर्प में (आ) गुण के कारण और केंचली पडी मिलने के कारण यह धारणा वनी होगी।

२६ अथर्ववेद

२७ ताड्य महाब्राह्मण (२५, १५)

मणि होती है जिसे नागमणि कहते हैं। उनके नथुनों से आग की लपटें निकलती हैं। साँप अपनी सांस से ही प्राण ले सकता है।

(ऊ) छोल आदि के निकट मिलने से और बिलों में प्रवेश करने और निकलने से उद्भावना कि ये पाताल निवासी हैं।

(ए) जंगलों तथा घास-पातों में घूमने के कारण उद्भावना कि ये औषधियों के ज्ञाता हैं।

(ऐ) सर्प का प्रादुर्भाव वर्षा में अतः उद्भावना कि ये उर्वरत्व के देव हैं।

(ओ) हवा खाकर रहने से तपस्वी भाव का फल (औ) से मिल कर ये संतान प्रदान कर सकते हैं।

(अं) घरों में दिखलायी पड़ते हैं उद्भावना कि ये घर के देवता हैं। इसी का विस्तार कि ये पुरखे हैं जो इस योनि में आये हैं।

(अ:) घरों में जमीन में प्राचीन लोग धन गाड़ते थे। जिसा से सर्प निकलता देख उद्भावना कि पुरखे धन की रक्षा के लिए सर्प बने हैं।

(क) ऐसे ही अद्भुत कर्मों के कारण नागों को देवता माना गया। उन्हें रूप बदलने वाला भी माना गया। रूप बदलने में मनुष्य रूप को प्रधानता मिली।

इस समस्त ऊहा-पोह के उपरांत भी यह प्रश्न उठता है कि नाग और नाग जाति में सम्बन्ध कैसे हुआ। 'नाग' पशु का नाम है या जाति का नाम है, या दोनों की अलग-अलग उद्भावना है। किन्तु इससे भी अधिक महत्व की समस्या यह है कि नाग-और नाग जाति का संबंध कब और कैसे हुआ? यह संबंध आरम्भ में संयोग से हुआ होगा। *जहां नाग लोग रहते होंगे वहीं सर्प भी विशेष होंगे। इनके प्रति उनका* आकर्षण हुआ होगा उनका ज्ञान प्राप्त किया होगा उन पर अधिकार किया होगा और उनसे अपना धार्मिक संबंध जोड़ा होगा। तब नाग और नाग-जाति का संबंध टोटमवादी जाति के जैसा ही बनेगा। इस संबंध के स्थिर हो जाने के उपरांत और नाम पड़ जाने पर उक्त कारणों से 'नाग' लोग उसकी पूजा में प्रवृत्त हुए होंगे और उसके आधार पर उन्होंने अपनी जाति का पायक स्थापित किया होगा। बौद्ध-पूर्व युग में भारत के सामान्य जन में नाग पायक का बहुत प्रचार था जैसा ऊपर बताया जा चुका है। डब्ल्यू डब्ल्यू हन्टर, सी आई ई ऐल ऐल डी ने 'दि इम्पिरियल गज़ेटियर' (लंदन १८८२) में (पृ १७१—१७१) बताया है कि 'बौद्धधर्म ने आर्य-पूर्व की इन जातियों को भारतीय तन्त्र (Indian Polity) में घुला-मिला लेने में बहुत प्रयत्न किया था। यूनानी-बाल्हिक तथा सिथियन आक्रमणों (१२७ ई पू० से ५४४ ई) के दीर्घ संघर्ष-युग में भारतीय आदिम जातियों ने पुनःपर अधिक महत्व प्राप्त किया होगा चाहे शत्रु के रूप में चाहे मित्र के रूप में। इसके बाद ये जातियाँ पूर्व में उत्तरी भारत के अच्छे क्षेत्रों में बिखरी मिलती हैं। अब भी ऐसे ध्वस्त नगरों और किलों को हम मध्य और उत्तरी भारत में विद्यमान् पाते हैं जिनका संबंध इन आदिम जाति के लोगों

से स्थानीय वार्त्ता में वताया जाता है , ये जातियाँ इस क्षेत्र का कभी शासन करती थी। जनगणना के फलस्वरूप इनके अस्तित्व को और पुष्टि हुई है। इसीमें तक्षको का उल्लेख हृटर महोदय ने किया है—इसी सवध में वे कहते हैं 'ये सिदियन तक्षक ही वस्तुत महान् नागजाति का स्रोत माने जाते हैं—ये तक्षक या नाग सस्कृत-साहित्य में और कला में वहुत प्रमुख स्थान रखते हैं । आज भी इन्ही के नाम की नाग जाति विद्यमान है। सस्कृत में तक्षक और नाग दोनो का अर्थ साँप होता है अथवा सपुच्छ दानव (monster)। तक्षको को सिदियन टक्को से सवधित माना जाता है, अत प्रमाणाभाव में अनुमान से एलखान के दूसरे पुत्र 'नगम' से इन नागो की उत्पत्ति वतायो जातो है, जो सदिग्ध है । ये दोनो नाम सस्कृत के लेखको के द्वारा विविध अनार्य जातियो के लिए उपयोग में लाये गये हैं। महाभारत में पाडवो ने खाडव वन के तक्षक को जलाया था । तक्षक तथा नाग वृक्षो और साँपो के पूजक थे। इन जातियो के रिवाजो और देवताओ ने भारतीय वस्तु तथा चित्र-कला को वहुत अधिक प्रभावित किया है। चीनी भाषा में प्राचीन भारत की नाग-भूगोल का पूरा विवरण दिया हुआ है। नाग-राज्य वहुत से थे और शक्तिशाली थे। वौद्धधर्म ने अनेक नाग राजाओ को अनुयायी वनाया था । इस नाग-सप्रदाय को च्युत करके वौद्ध धर्म ने वुद्ध के समय में ही नाग-सप्रदाय के अनुयायी नागो को अपने वश में किया, और अपना अनुयायी वनाया। भगवान वुद्ध का नागो से घनिष्ठ सवध हो गया, और वौद्ध धर्म का जो रूप लोक-क्षेत्र से सवधित रहा, उस रूप में आगे की ऐतिहासिक गति से वौद्ध सिद्धो में उसने परिणति पायी और तव नाथो से उसका गठवधन हुआ । उनके माध्यम से गुरु गुग्गा को नाग-सवध प्राप्त हुआ। और यह सवध उन कारणो से विशेष रूप से पुष्ट हुआ जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

यक्ष और गुरू गुग्गा

गुरु गुग्गा का नागो से सवध तो लोक-वार्त्ता में भी प्रसिद्ध है। उन्हें नाग-देवता हो माना जाता है। किन्तु गोगाजी विपयक अनुष्ठानो का समाधान इस से नही होता इसीलिए यहीं हमें एक और सभावना पर विचार करना है। क्या 'गूगा' का यक्ष-पूजा से कोई सवध हो सकता है। वौद्ध युग में, नही, वुद्ध के समय में ही, यक्ष भी उतने ही प्रवल थे, जितने नाग। यक्षो और नागो से सवध वाली वौद्ध कथाएँ प्राय एक-सी ही प्रतीत होती हैं। यक्षो को भगवान वुद्ध ने जिस विधि से वश में किया, कुछ वसी ही विधि नागो के लिए भी रही। यहा तक कि यक्षो और नागो के प्रमुख नामो में भी वहुत साम्य मिलता है। यक्षो के स्थानो पर भी वुद्ध और वौद्धो ने युक्ति से अधिकार किया था। अत यक्ष-पक्ष का लोक में उस आधार पर कुछ न कुछ प्रभाव रहना ही चाहिये जो वौद्ध धर्म के विकास अथवा ह्रास की कडी के रूप में प्रस्तुत हो। आज भी लोकवार्त्ता में व्रज में 'यक्ष' जखया के नाम से पूजा जाता है। साधारणत 'यक्ष' पूजा 'वीर' के नाम से होती है। अनेको वीरो के थान आज भी जहाँ तहा विखरे पडे हैं। (देखिये जनपद वर्ष १, अक ३, वैशाख सवत २०१०,

वीर-बरसा' नामक निबन्ध लेखक डा वासुदेव शरण अग्रवाल। तथा 'ब्रजभारती')। गुरु गुग्गा के पार्श्व में जिन बातो से यक्ष प्रभाव सूचित होता है व ये हैं —

१ गूगुल का महत्त्व।
२ सिर मारने की प्रक्रिया।
३ मामा से संबंध।
४ यक्ष-ध्वज।
५ चामरध।
६ यक्ष प्रश्न।
७ वीर पूजा।

१ यक्षों का संबंध गूगुल से है यह बात इससे सिद्ध है कि संस्कृत में गूगल का नाम ही यक्षधूप' है। गुरु गुग्गा का जन्म लोकवार्ता के अनुसार गूगुल से हुआ है। फल तो कायान से मयी को बाबा गोरख की झोली में गूगुल ही था जो बाछल को मिला। इस प्रकार गुग्गा' का जन्म ही 'यक्ष योनि' से लोकवार्ता के द्वारा संबद्ध हो जाता है। परा-प्राकृतिक जन्म संबंध में 'दैवी फल' का अभिप्राय (कथानक रूढ़ि) बहुत प्रचलित है। कथासरित्सागर में महारानी वासवदत्ता ने पुत्र कामना से शिव का व्रत किया। शिव प्रसन्न हुए। उन्होने वरदान दिया कि पुत्र होगा। एक रात को स्वप्न में एक जटाधारी ने आकर वासवदत्ता को एक फल दिया।[२८]

इसी स्थल पर पेंजर महोदय ने टिप्पणी में बताया है कि 'मार्बे' समाज तथा रिवाजो में परा-प्राकृतिक उत्पत्ति के समस्त प्रश्न पर 'दी लीजेण्ड ऑफ परसियस' खण्ड १ मे पृ ७१ से १८१ तक हार्टलैंड ने भली प्रकार विचार किया है।[२९] (श्री शौविन (V Chauvin op cit, V P 43) के Conception extraordinaries शीर्षक भी देखिये।)

परित्यागसेन उसकी धूर्त स्त्री और उसके दो बेटो की कहानी' में दोनो पत्नियो को दुर्गा से दो दैवी फल' मिलते हैं। यह कहानी Ocean of story V II P 136 में दी हुई है। अध्याय cxx में भावी सम्राट् विक्रमादित्य की मा को शिव ने सतान निमित्त एक फल दिया। यह फल कभी आम होता है।[१] स्टोक्स में पृ ११ पर लीची फल दिये गये हैं। अन्य कहानियो में 'अनार' दिया गया है।

किन्तु गुग्गा के सबध में 'टाड' ने जो का उल्लेख किया है और ब्रज में तथा टेम्पल के पंजाबी गीतो में 'गूगल' आता है। ब्रज लोकवार्त्ता में यक्ष-पूजा आज भी जखैया' के रूप में होती है। जखैया पर घेंटे (सूअर के बच्चे) बलि दिये जाते

२८. Ocean of story V II P 136
२९ The Ocean of story Part I Appendix I P 203
१ Stokes Indian Fairy Tales, पृ ४ और Old Deccan Days पृ २२४ नाटकी फोकमोर इन सदर्न इण्डिया पृ १४

है। घेंटो का हिन्दू समुदाय में भगियो और महतरो से ही विहित सबध है। अत भारतीय रिवाज में दूरान्वय से यक्ष या जखैया का पूजने वाला समुदाय कभी महतरो में परिज्ञात हुआ। गुरू गुग्गा के प्रति महतरो की भक्ति का एक जातीय कारण यह भी हो सकता है।

२ सिर आने की प्रक्रिया का सबध सामान्यत यक्षो से लगाया जाता है। यक्षो में कितनी ही प्रकार की शक्तिया मानी गयी हैं। ये चाहे जब, चाहे जैसा रूप बदल सकते हैं। ये अदृश्य हो सकते हैं। वस्तुत जैन साहित्य के विद्याधर और यक्ष एक ही विदित होते हैं। कथासरित्सागर में पेंजर ने बतलाया है कि यक्ष के अर्थ ही है, विद्या-शक्तियो का धारण करनेवाला (बीइग पजैस्ड आव मैजिकल पावर्स)[२१]। सिर आने की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाय तो विदित होगा कि सिर आने के दो रूप हैं। एक तो देवता सिर आता है। देवता सिर पर इसलिये बुलाया जाता है कि उससे होने वाले अन्य अनेक कष्टो से छटकारा पाया जा सके और अभिलषित वस्तुओ का वरदान पाया जा सके। पीर अथवा देवी का सिर आना ऐसा ही होता है।

दूसरे प्रकार में खोरवाला सिर आता है। किसी को खोर हो जाने पर उस खोर करने वाले को अनुष्ठान द्वारा बुलाया जाता है, और उसे भगा देने की विधियाँ की जाती ह। भूत लग जाने या प्रेत लग जाने या मियाँ की खोर पर तो ये सिर आते ही हैं, साँप के काट लेने पर साँप भी सिर आता है। इस प्रकार के सिर आने का सबध 'डेविल डान्स' से है, जिसके सबध में यह कहा गया है कि

A form of exorcism, said to be allied to the Shamanism of Northern Asia, prevalent in Southern India and appearing also in Ceylon, Northern India, Tibet, etc It is usually employed to entice the demon from the body of a sick person into the body of the dancer Devil dancing is found in the demonic Bon cult of Tibet

Devil Dances and devil beating cerimonials found in various places in China may be a Lamaist importation Data is incomplete In Lamaist temples priests disguised as gods and devils attack each other in mock combat (R D J Standard Dictionary of folklore, legend)

वस्तुत 'गुरू गुग्गा' का प्रकार पहली कोटि का है। गुग्गा की खोर नही होती, यद्यपि जाहरपीर के गीत में आरभ में ही, जब तक उसने जन्म भी नही लिया, वह वासुकि, अपने नाना और बाबा के सिर चढा है, अपनी खोर की है। पर पाखड अथवा सप्रदाय के रूप में वह खोर करने वाला नही, पहले उसकी मनौती की जाती है, पूजा

---

२१ The Ocean of Story Part I, Appendix I, page 203

की जाती है तब वह सिर आता है, तब उसका आवेश होता है। अतः गुरु गुग्गा के जागरण में जो तादूप होता है वह पारिभाषिक रूप में 'डेविल्स डान्स' नहीं माना जा सकता। फिर भी लोकवार्ता और नृविज्ञान के विद्वान इसके मूल के संबंध में जो मानते हैं वह सत्य ही विदित होता है।

देवता या किसी आत्मा के सिर आने की भावना का आरंभ शामानिज्म से विदित होता है। इस शामानिज्म का संबंध बौद्ध श्रमण से है। श्रमण का समन समन का शामन हुआ है। बौद्ध प्रचारक देश विदेशों में गये। ये प्रचारक ही नहीं वे समाज के सेवक भी थे। चिकित्सा से इनका किसी न किसी प्रकार का संबंध बैठता है। विदित होता है कि इन्होंने चिकित्सा का दो प्रणालियाँ अपनायीं १—श्रोषधि आदि के द्वारा जिसके आधार पर बने चिकित्सा-शास्त्र में आज भी एक ग्रंथ थेराप्युटिक्स कहलाता है। इस शब्द में थेर 'स्थविर' का ही पर्याय है। २—सिद्ध की आत्मा का आवाहन कर, उसकी सहायता से चिकित्सा करना। यही पद्धति 'शामानिज्म' कही गयी। इसमें शमन' शब्द बौद्ध श्रमण है। श्रमणों ने बौद्ध धर्म से आत्मावतरण का सिद्धान्त प्राप्त किया था और किसी भी देश के आदि निवासियों के ऐनीमिस्टिक विश्वासों से उसका सामञ्जस्य करके देवता भूत-प्रेत के सिर आने के व्यवहार को ग्रहण किया होगा। ऐनिमिज्म+श्रमणीय बौद्धधर्म=शामनवाद।

गुरु गुग्गा के जागरण के साथ यह शामनिज्म—शामनवाद तो है ही क्योंकि जागरण' होता है और गुग्गावीर सिर आता है। वह पुत्र प्रदान करता है अन्य अनेक रोगों को दूर करता है आदि। यह बौद्ध परंपरा+यक्ष परंपरा मिलकर सिद्ध परंपरा में परिणत हुई, नाथों के लौकिक स्तर पर गृहीत हुई और वहाँ से गुरु गुग्गा के अनुयायियों ने ली। इसके साथ 'पट' अथवा चदोवे का विधान भी इस बौद्ध परंपरा की ओर संकेत करता है। बौद्धों में सिद्धों की जीवनी को प्रदर्शित करने वाले पट होते हैं जो धार्मिक अवसरों पर प्रदर्शित किये जाते हैं।

इस प्रकार सिर आने की प्रक्रिया के साथ निम्न तत्वों का घनिष्ठ संबंध है

१ चदोवा
२ मढ़ाम्बज
३ जागरण
४ चावुक
५ मढ़ामहल

चदोवा

जाहरवीर के जागरण में एक चँदोवा पीछे दीवाल पर टाँगा जाता है उसके समक्ष जागरण के समस्त अनुष्ठान होते हैं। इस चदोवे में गुरु गुग्गा के जीवन की कुछ घटनाएँ चित्रित रहती हैं। गुग्गा की कहानी की मुख्य-मुख्य घटनाएँ पहले कपड़े

में से अलग अलग काट ली जाती है, फिर उन्हें एक पट पर सी दिया जाता है। इसके मध्य में एक चक्र रहता है, तब शेष समस्त में घटनाओं के प्रतीक। यह चँदोवा
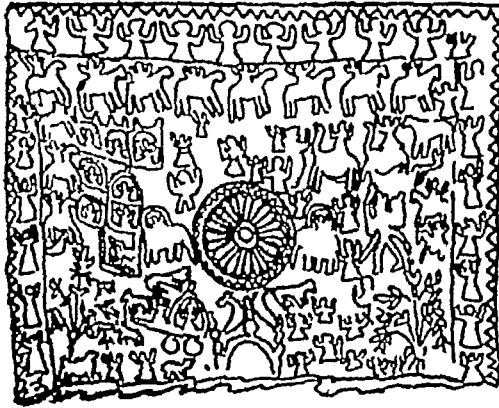
जाहरपीर चँदोवा लोहवन से

चित्र २

पट-पूजा की अत्यन्त प्राचीन प्रथा का रूपान्तर है। आरंभ में ये पट पत्थर के बनते थे। जैनियों में 'आयाग पट' का कितना महत्त्व है, सभी जानते हैं। बौद्धों में भी पत्थरों पर बुद्ध भगवान के जीवन की घटनाएं, जातक आदि की कथाएँ अंकित की जाती रही हैं। जब बौद्ध लोग देश देशान्तरों में गये तो पत्थरों को ले नहीं जा सकते थे। तब संभवतः कपड़ों का उपयोग किया गया होगा। राहुल जी तिब्बत से अनेकों पट लाये थे जिनमें सिद्धों के चित्र हैं। ये पटना म्यूजियम में हैं। ऐसे पट तिब्बत के बौद्ध मंदिरों में विशेष उत्सवों के अवसर पर टाँगे जाते थे। इन पटों पर चित्र अंकित करने की कला भारत में पुरानी प्रतीत होती है। जैन भगवती सूत्र में १५,० में एक 'गोसाले मखलीपुत्ते' का उल्लेख है। 'माख' उन लोगों को कहते थे जो चित्र दिखा दिखा कर जीवन-यापन करते थे। मखली वे होंगे जो ये चित्र बनाने का व्यवसाय करते होंगे। पतंजलि ने महाभाष्य (३,२, ३) में कृष्ण लीला के चित्रों के प्रदर्शन की बात लिखी है। विशाखदत्त के मुद्राराक्षस (अंक १) में 'यमपट' दिखा-दिखाकर जीविका अर्जित करने वाले का उल्लेख है। यह विदित होता है कि इन पटों के दो रूप होगये एक तो अत्यन्त आनुष्ठानिक जो धर्म-कार्यों के अवसर पर काम में लाये जाते होंगे। दूसरे सामान्य, जिन पर कृष्ण-लीला या नरक-स्वर्ग चित्रित करके सामान्य साम्प्रदायिक भावना के साथ लोगों को दिखा-दिखाकर जीविका उपार्जित की जाती होगी। बंगाल की लोक-प्रवृत्तियों में ये दोनों प्रणालियाँ आज भी प्रचलित हैं। श्री आशुतोष भट्टाचार्य ने 'बाङ्लार लोकसाहित्य' नामक पुस्तक में लिखा है—

"वर्त्तमाने प्रधानत मेदिनीपुर, बाँकुड़ा, वीरभूम अर्थात् पश्चिम बंगेर पश्चिम सीमान्त-वर्ती कयकटि जिलाये चित्रकर वा 'पटुया' बलिया परिचित एक श्रेणीर लोक वास

करे। हिन्दू पौराणिक ओ लौकिक देवदेवीर चित्र अंकन ओ ताहादेर विवरण मुद्दे मुद्दे गान करिया ताहादेर जीविका निर्वाह हइया थाके। इहादेर व्यवहृत संगीत इहादेर निजेदेरइ रचित-इहाइ पटुयार गान वा पटुवा संगीत नामे परिचित।

भट्टाचार्यजी ने पटवा जाति का कुछ विस्तृत वर्णन देकर यह अभिमत प्रगट किया है कि यह अनार्य जाति है। इस संबंध में उन्होंने एक युक्ति यह भी दी है कि पटवा जाति का एक वर्ग सँपेरा है। ये साँप खिलाते हैं। गीत गाकर पटों पर सर्प देवी मनसा के चित्र दिखाकर जीविका उपार्जित करते हैं।

पट-जीविका के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए भट्टाचार्य जी ने बाण भट्ट के हर्षचरित और विशाखदत्त के मुद्राराक्षस में इन्हें विद्यमान बताया है। अत पट जीविका की धारा छठी-सातवीं शताब्दी तक पहुँचाती है। उन्होंने बताया है कि इन पटों के मुख्य विषय तो हैं —

१ बेहुला-लखीन्दर-मनसा विषयक
२ रामायण विषयक
३ भागवत विषयक

इन मुख्य विषयों के अतिरिक्त कहीं-कहीं निम्न विषय भी पटों पर अंकित रहते हैं —

४ धर्मठाकुर संबंध परिवार
५ कमले कामिनी
६ गौराङ्ग-लीला
७ चोताई पट
८ साहेब पट
९ डाकातेर पट इत्यादि

यहीं भट्टाचार्यजी के एक निष्कर्ष का अमहत उल्लेख करना आवश्यक है

"अथाने लक्ष्य करिबार कयेकटि विषय आछे—पटुयागण महाभारतेर काहिनी-विषयक कोन पट अंकन करे ना एवं मनसा-मंगलेर विषय रामायण एवं कृष्णलीलार तुल्य प्राधान्य लाभ करे। इहाहइते अनुमान हय ये संभवत पटुयागन पूर्वे केवल मात्र सापुडे वा बेदेर व्यवसायी छिल सुतरां सर्पेर अधिष्ठात्री देवी मनसारइ माहात्म्य ताहारा पटेर मध्ये दिया प्रचार करित। अतएव कालक्रमे पटेर मध्ये अन्यान्य विषय वस्तु गृहीत हइलेओ उल्लेखयोग्य लौकिक विषयटि इहादेर मध्ये केवल मात्र ये रक्षा पाइयाछे ताह नहे समान प्राधान्य रक्षा करिते पारियाछे।"[१२]

इस विवरण से हमें पटवा जाति पट तथा नाग या मनसा-मनस के पारस्परिक घनिष्ठ संबंध की सूचना मिलती है। इन पटों से धर्म-प्रचार का संबंध होते हुए भी ये जीविका निर्वाह के साधन रहे। द्वार-द्वार पर इन्हें दिखाकर इनके बहाने कुछ धार्मिक चर्चा और मनसा का प्रचार करते हुए अपनी जीविका के लिए कुछ भिक्षा या शुल्क पटवा लोग पाते रहे।

---

१२ बाङलार लोकसाहित्य श्री आशुतोष भट्टाचार्य ॥ १२११

इन पटो के साथ एक और प्रकार के पट बगाल में प्रचलित है। लेखक के शब्दो में "तवे पूर्व वगे एक श्रेणीर पट देखिते पाओया जाय, ताहा गाजीर पट नामे परिचित । हाते गाजो वा मूसलमान धर्म प्रचारकदिगेर अलौकिक जीवन-वृत्तात समूह चित्र रूपायित हइया थाके । धर्म प्रचारेर वाहन—साहित्य रस परिवेशक नहे ।[33]

यद्यपि दो प्रकार के पटो का उल्लेख किया गया है, पर दोनो के साथ किसी न किसी प्रकार की धार्मिकता अथवा पाषड लगा हुआ है और दोनो के विषय-वस्तु का लक्ष्य और विधान प्राय एक ही है। किसी न किसी कथा को प्रस्तुत करने के लिए ही इन पटो का विधान हुआ है। उसके उपयोग भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में भिन्न-भिन्न हो गये हैं। मूल का सबध धर्म या पाषड से भी होना चाहिये और जीवन-कथा से भी। धर्म या पाषड के साथ मूल में टोने का भाव भी धार्मिक होगा। समस्त इतिहास पर दृष्टि डालने से विदित होता है कि इस प्रकार के जीवन-वृत्तो को धार्मिक भावना से अभिमडित करके प्रस्तुत करने की प्रणाली जैनो और बौद्धो में प्राय साथ-साथ मिलती है। नागो और यक्षो से इन दोनो का लौकिक धरातल पर घनिष्ठ सबध था, अत यह 'पट प्रणाली' इन सम्प्रदायो ने लोक से ही ली होगी। चित्राकन की कला का मौलिक सबध असुर-संस्कृति से विदित होता है, वाणासुर की कन्या 'उषा' चित्रकला में अत्यन्त निपुण थी। चित्रकला के विधान को असुरो तथा नागो ने पत्थर में शिल्प के लिए अपनाया होगा। वहा से बौद्धो और जैनो ने इसे ग्रहण किया, तव बौद्धो ने अपनी श्रमणीय और परिव्राजकीय आवश्यकताओ की दृष्टि से तथा भौगोलिक कारणो से भी 'वस्त्रो' पर उसे उतारा होगा। तव पतजलि के समय कृष्ण आदि के लिए भी इनका उपयोग होने लगा होगा। पटवा जाति के लोग ऐसे ही किसी बौद्ध वर्ग के होगे जो पट वनाते होगे। ब्रज में भी इस जाहरपीर का पौरोहित्य पटवा-नाथो से सबधित है। ब्रज म आज पटवो और सपेरो का सबध नही मिलता, पर जैसा बगाली क्षेत्र से हमें विदित हुआ है पटवो और सँपेरो का जातिगत सबध है। 'पट' के द्वारा सर्प की देवी (जो पश्चिम में देवता हो गया) का चित्र प्रस्तुत किया जाता होगा। वाद में 'पट' मात्र से सबध रखनेवाले पटवा होगये, और सर्पमात्र से सबध रखने वाले सँपेरे हो गये। उनके मुख्य विषय का सबध सर्प अथवा नाग से अवश्य वना रहा। बगाल में मनसा-'सर्पों की देवी' है यही पट से सबधित है, तो ब्रज में गुग्गा या जाहरपीर भी सर्प के देवता हैं और चदोबा उनका वही पट है, जिस पर उनका जीवनवृत्त अकित है, और गीतो के द्वारा जिसे गाया जाता है।

श्री आशुतोष भट्टाचार्य जी ने बताया है कि —

"चित्र एव गीति उभये मिलियाइ एकटि अखड रसेर सृष्टि हय—एक हइते अन्यरके विच्छिन्न करा जायपना। सेइजन्य पटवार निजस्व सगीत व्यतीत केवल मात्र ताहार चित्रेर स्वतत्र कौन मूल्य नाइ, चित्र व्यतीत पटवा-सगीतेरओ कौन परिचय नाइ। ईहादेर एइ अखड योगायोगेर भितर दिया ईहादेर उभयेरइ रस ओ सौन्दर्य विकाशपाय।"[34]

---

३३ वही " " पृ० १५८
३४ वही, पुष्ठ १५३

चित्र से गीत साकार होता है गीत से चित्र को अर्थ मिलता है। यह जीविका के लिए पट के उपयोग के साथ है। गुग्गा के पार्श्व में भी यह संबंध तो है। चंदोवा गुग्गा के जीवन-वृत्त को कुछ चित्रों के द्वारा अंकित करता है और जोगी उसी जीवन वृत्त को गाता है गीत में। पर यह संबंध 'पट-जीविका' व्यवसायी पटों की भांति उतना अनिवार्य नहीं। क्योंकि गुग्गा के जागरण में चित्र में कथा दिखाना अभीष्ट नहीं न गीत के द्वारा पीर का चरित्र-वर्णन सुनाना ही अभीष्ट है। दोनों का संबंध दर्शकों या प्रेक्षकों से नहीं। दोनो का संबंध गुरु या पीर की पूजा मनौती और प्रन्ततः उसके आह्वान के अनुष्ठान से है। अतः गीत भी इस अनुष्ठान का एक टोनेवाला अंग है। और चित्र भी उसी प्रकार एक टोनेवाला अंग है। दोनों अपने अपने निजी टोने विषयक गुण के कारण यहां आये हैं। टोने का यह गुण इन्हें आदिम प्रवृत्ति का अवक्षेप सिद्ध करता है। आदिम टोनेवाले चित्रों और गीतों से ही जीविका के पट-गीतों का आविर्भाव हुआ होगा। वहां से विभिन्न क्षेत्रों में इन्होंने स्थान प्राप्त किया होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि 'पट' का यक्षों से दूर का संबंध है। नागों से अवश्य निकट का संबंध है।

ध्वज

चंदोवे के साथ एक ध्वज भी होता है। यह मोरपंखों का गुच्छा बना होता है और तरह तरह के पदार्थ झण्डियाँ चटियाँ इससे लटकी रहती हैं इस ध्वज का संबंध यक्षों से हो सकता है क्योंकि औपपातिक सूत्र में यक्ष मंदिर का जो वर्णन दिया हुआ है उसमें ऐसे ध्वज का उल्लेख प्रतीत होता है। यक्ष-मंदिर का यह वर्णन कुमार स्वामी के अंग्रेजी अवतरण से रूपान्तर करके यहां दिया जाता है।

चम्पा के निकट पुण्णभद्दे नामक चेइय (चैत्य) था। यह अत्यन्त प्राचीन था जिसका वर्णन पहले जमाने में वृद्ध यशस्वी धनी और सुविख्यात लोगों ने किया है। वहाँ छत्र थे ध्वजाएं थीं और घंटियाँ थीं पताकाएं थीं पताकाओं पर पताकाएं थीं जिससे यह सजा हुआ था और लोम हत्थ थे।

चौड़े अर्द्धाकार दीर्घ झुके लहराये स्तवक थे सब मधु गंध पुष्पों के पांच रंगों के पुष्पों के जो वहां बिखरे हुए थे। कालागुरु, कुंदरुक और तुरुक्क की प्रकम्पित धूम्रलहरियों की सुगंध से यह प्रसन्न था। यह चैत्य चारों ओर विशाल वन से आवृत था। इस वन के मध्य में एक चौड़ा स्थान था यहां यह बताया जाता है कि एक विशाल और सुन्दर अशोक वृक्ष था जिसके नीचे यक्ष का स्थान था।

इस वर्णन में और चीजों के साथ 'लोम हत्थ' का उल्लेख है। कुमार स्वामी महोदय ने लिखा है कि 'पाली में लोम हत्थ का अर्थ होता है 'रोंगटे खड़े होना (भय आश्चर्य अथवा आनंद के कारण)। हो सकता है कि यहाँ इस शब्द का मात्र यही अभिप्राय हो कि देखने में भव्य। किसी वस्तु से अभिप्राय न हो अथवा इसका अभिप्राय बाल की पूंछ के चंवर से हो जो कि यक्ष-मन्दिर के लिए ठीक है।[19] पर

---

१९. 'यक्ष' से कुमार स्वामी पृ १९, २।

वस्तुत मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से कोई भी अभिप्राय ठीक नही, 'लोम हत्थ' मोरछली के बने इसी ध्वज को कहते हैं। मोरपख जब खडे लगाये जाते हैं तो लोम हत्थ की परिभाषा के अनुकूल ठहरते हैं।

जाहरपीर की समाधि भी यक्ष की भाँति एक विशाल जगल मे है, जिसके मध्य में गोगा का स्थान है। 'तवारीख राज श्री बीकानेर' में लिखा है कि गोगा जी के स्थान के इर्द गिर्द दूर तक जगल पडा हुआ है। जगल म खैरो के पेड हैं। खैरी का गोद उत्तम समझा जाता है। गोगा जी के बेहड (वणी) से कोई दरख्त (पेड) काट नही सकता।[36] यक्ष का वृक्षो से घनिष्ठ सबध है। ये 'रुक्ख देवता' हैं। भगवान बुद्ध का भी वृक्ष से सबध है, गोगा का भी वृक्ष से सबध है। प० झावर मल्ल शर्मा ने एक और लोकवार्त्ता का उल्लेख किया है 'गाँव गाँव खेजडी गाँव गाँव गोगो' प्रत्येक गाँव में खेजडी का वृक्ष मिलेगा और उसके नीचे गोगा का थान।

जागरण

जागरण इस समस्त आयोजन का एक प्रधान अग है। वस्तुत जागरण स्वय कोई महत्त्व नही रखता। देवी-देवताओ की मानता में समय ही इतना लग जाता है कि रात्रि-जागरण करना ही पडता है। ऐसे सभी कृत्य प्राय रात्रि में ही होते हैं। जागरण का सबध केवल जाहरपीर से ही नही, देवी आदि अन्य देवताओ से भी है। कुछ अन्य सस्कारो में भी वह अनिवार्य है विवाह में 'रतजगा' अनिवार्य है। इस रतजगे में भी देवी मानता होती है। आज के विवाह विषयक रतजगे मे तान्त्रिक प्रभाव की झलक स्पष्ट दिखायी पडती है। जागरण या रतजगा इसी सिद्धि-अनुष्ठान की दृष्टि से ऐसे अवसरो पर आवश्यक हो जाता है। डेविलडान्स में भी जागरण होता है। बगाल में 'जाग-गान' होते हैं जो जागरण के समय गाये जाते हैं। सोनाराय या सोना पीर नामक एक पीर का भी जागरण होता है।[37] जागरण का कोई अनिवार्य नियमित सबध यक्ष पूजा से हो, ऐसा विदित नही होता। श्री आशुतोष भट्टाचार्य ने जाग-गान और जागरण का मूल युद्ध विग्रहोपरान्त वीर यश वर्णन की आदिम प्रणाली में माना है। आज न युद्ध-विग्रह रह गये हैं उस रूप में, न वैसा वीरस्तवन। उनका स्थान सन्तो-पीरो ने ले लिया है, वैष्णवो के प्रभाव में चैतन्य आदि भी इस जागरण-गान के विषय बन गये हैं। किन्तु प्रतीत होता है कि वीर-परपरा एक पहलू है। इसका दूसरा पहलू पीर-परपरा है। पीरो का सबध सिद्ध और सिद्धियो से है। इनमें जागरण का मूल होगा—किसी न किसी प्रकार की तान्त्रिक आवश्यकता। 'वीर-पीर' दोनों परपराओं के मिल जाने से तान्त्रिक और औत्सविक दोनों प्रणालियाँ आज के जागरण औ जाग-गान से सबधित हो गयी हैं।

---

३६ तवारीख राज श्री बीकानेर। प० झावर मल्ल शर्मा के निबध में उद्धृत।

३७ दे० बाङलार लोक साहित्य श्री आशुतोष भट्टाचार्य पृ० १७९

४ चाबुक

चाबुक या कोड़ा भी इस सिर आने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है। यह देवी-देवता के सिर आने पर उपयोग में आता है। खेलने वाला इसे उछाल उछाल कर अपने शरीर पर ही प्रायः मारता है।

यहाँ पर कुमार स्वामी जी ने माली अज्जमए (Ajjunae) के उपाख्यान का उल्लेख करते हुए अन्तगडदसाओ के छठे अध्याय से 'अज्जमोग्गार पाणि' के पार्षद तथा मन्दिर का वर्णन दिया है उसे दुहराना उचित होगा —

> किन्तु मोग्गारपाणि अज्जुनए के विचारों को जान गया। वह उनके शरीर में प्रविष्ट होगया (सिर आगया) इस आवेश के बाद उसने लोहे का मद्गल उठाया और छः पुरुषों और स्त्री को मारा।
>
> अज्जुनए पर यक्ष अब भी सवार था और इसी दशा में अब वह प्रति दिन छः मनुष्यों और एक स्त्री को मार डालने लगा।

यहां यक्ष के सिर आने का अर्थात् शरीर में आवेश का प्रकरण प्रस्तुत है और यक्ष के आवेश से युक्त अज्जुनए के हाथ में मुद्गल है जिससे वह पुरुष-स्त्रियों को मारता है किन्तु गुगा के सिर आने की प्रक्रिया में मुद्गर नहीं चाबुक या कोड़ा है। यह मुद्गर दूसरों को प्रताड़ित करने के लिए है स्वयं अपने को प्रताड़ित करने के लिए नहीं।

लोकवार्ता में "फ्लैगेल्लेशन" कोड़ों की मार, का एक विशिष्ट स्थान है। यह चोर भगाने की विधियों में है। संसार भर में ऐसे चोर उतारने के अनुष्ठान में चाबक या कोड़े का उपयोग होता है।

यह बात ध्यान में रखने के योग्य है कि यह चाबक-प्रहार उसी समय होता है जब प्रथम आवेश होता है। पीर के साथ और पूजा का भी घनिष्ठ संबंध है। बार घरवाहा है। वह इस पुरोहित के शरीर को अश्व अर्थात् अपने वाहन का प्रतीक समझता है और उसे मारता है जिससे यह ध्वनि निकलती है कि पीरजी प्रार्थना सुनकर घोड़े पर सवार चाबक फटकारते आ पहुँचे हैं।

यक्ष प्रश्न

जब सिद्ध होता है कि देवता सिर आगये तब प्रश्न पूछ जाते हैं। कुछ इन प्रश्नों को 'यक्ष प्रश्न' या ब्रह्मोद्य का नाम देते हैं और इनके द्वारा बड़ा प्रभाव दिखाते हैं। यक्ष प्रश्न अथवा ब्रह्मोद्य यज्ञों में यज्ञ का एक अंग माना जाता है इनमें कुछ पहेलियुझौअल जैसी चीज होती है। महाभारत में एक जलाशय के किनारे एक यक्ष ने पाण्डवों से प्रश्न पूछे हैं। पहले चार पांडव उन प्रश्नों का उत्तर न दे सकने के कारण मर गये अंत में युधिष्ठिर ने प्रश्नों का उत्तर दिया और अपने भाइयों को पुनरुज्जीवित कराया। सिर आने वाला देवता अथवा पीर स्वयं प्रश्न नहीं पूछता। उससे प्रश्न पूछे जाते हैं और ये सभी प्रश्न लोक के निराकरण के उपाय सन्तान आदि प्राप्त करने के बजाय और भविष्य के ज्ञान के संबंध में होते हैं। यम वैदिक अथवा पौराणिक कथा

प्रश्न से उसका सबध ठीक-ठीक नही बैठता। यह स्पष्ट ही तान्त्रिक अवशेष विदित होता है। देवता के सिर आने का अभिप्राय है उस देवता का सिद्ध होना, प्रत्यक्ष होना। सिद्ध या तान्त्रिक जिस प्रकार सिद्ध हुए देवता से अपनी कामना-पूर्ति की याचना करता है, वैसी ही याचना यहाँ देवता से की जाती है।

इस विवेचन से स्पष्ट विदित होता है कि जाहरपीर या गुरू गुग्गा पर 'यक्ष-पूजा' का कुछ प्रभाव तो अवश्य है, पर वह आया उस जैसे अन्य प्रभावो के साथ लगकर ही है। यक्ष की अपेक्षा तो प्रेत-पूजा से इसका विशिष्ट सबध प्रतीत होता है, प्रेत ही दूसरे के शरीर में आवेश के द्वारा अपना अभीष्ट पूरा करता है। 'पीर' वस्तुत प्रेत ही होजाता है, क्योकि मृत्यु के उपरान्त ही सिर पर आकर अपना अस्तित्व बताता है और अपनी पूजा चाहता है। प्रेतात्मा का सबध भी वृक्षो से होता है।

यहाँ पर यह कह देना भी आवश्यक है कि कुछ विद्वानो की दृष्टि में प्रेतात्मा विषयक विश्वास भी यक्ष-मत का ही परिणाम है। इस सबध में कुमार स्वामी के ये शब्द सामने आते हैं

"In fact the idea of alternate human and Spirit birth, the idea, in fact, of Sansara seems to be inseparably bound up with the yaksha theology"

नागो और यक्षो का घनिष्ठ सबध है। दोनो ही का स्वरूप एक दूसरे में घुलमिल गया है। अत यह स्वाभाविक है कि जिस सिद्ध पीर अथवा वीर का नागो से सबध हो, उसके पाषड में यक्ष-प्रभाव के अवशेष भी परिलक्षित हो।

वीर पूजा ·

सिर आने की प्रक्रिया से ही नही 'वीर पूजा' के भाव से भी जाहरपीर अथवा गुरू गुग्गा को यक्ष-परपरा की पूजा में मानना होगा। जैसा ऊपर बताया जा चुका है, कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि यह 'पीर' शब्द ही वीर का रूपान्तर है और यह 'वीर' शब्द वह 'वीर' है जो 'यक्ष' के लिए उपयोग में आता था। डा० वासुदेवशरण जी ने 'वरमवीर' या 'ब्रह्मवीर' से लेकर न जाने कितने वीरो का उद्घाटन काशी विश्वविद्यालय के गोड में किया है। ब्रह्म भी 'यक्ष' का ही नाम था। केनोपनिषद् में प्रकट होने वाला 'यक्ष' था, उसे उमा हेमवती ने ब्रह्म नाम दिया था। इन वीरो के थान जहाँ तहाँ बने मिलते हैं। ये वीर चौंसठ योगिनियो के साथ गिनती पर चढ़कर 'बावन' होगये। यहाँ पर यह बावन "बावन" (५२) सख्या-सूचक से अधिक आकार द्योतक "बौने' का समानार्थी विदित होता है, और यह यक्ष बावन ही है। बावन वीरो के फिर तो नाम भी गिनाये गये हैं। वीर विक्रमाजीत ने इन बावन वीरो को सिद्ध करके वश में कर लिया था, वस्तुत विक्रमादित्य ने सभी विद्याएँ सीखी थी। वह यक्ष-विद्या, अथवा विद्याधर विद्या का पडित था। तभी 'वीर' कहलाता है। यह वीर विद्याधर है, यक्ष है, यह वह वीर नही जो अग्रेजी 'हीरो' का पर्यायवाची है। स्पष्ट ही यहाँ वीर विषयक दो परपराएँ दिखायी पडती है

१ वीर यक्ष-परंपरा अथवा विद्याधर-परंपरा

२ वीर शूरवीर (हीरो) परंपरा*

---

*वीर पूजा के संबंध में अलक्जेंडर कनिंघम महोदय ने (आर्कियोलाजिकल सर्वे आव इंडिया—खण्ड १७ पृ. ११६ पर 'हीरोवरशिप इन नार्दर्न इंडिया') बहुत विस्तार के साथ लिखा है। इनके मत से प्रेत भूत बैताल पिशाच वीर तथा जाक पर्यायवाची ही हैं। 'वीर' शब्द तो इस अर्थ में आपके मत से भारत भर में प्रचलित है। आपका अनुमान है कि 'पहले पहल संभवतः इसका प्रयोग केवल उनके लिए होता था जो युद्ध में काम आते थे। क्योंकि वीर, लेटिन के vir वीर की भांति 'शूरवीर' (hero) का ही द्योतक है। दक्षिण में युद्ध में काम आनेवालों के स्मारक की शिलाएँ 'वीर-कल' अथवा 'शूरवीर शिला' कहलाती हैं। कनिंघम साहब ने बताया है कि आज 'वीर-पूजा' में केवल युद्ध-हत वीरों की ही पूजा नहीं वीर-पूजा उस व्यक्ति के भूत प्रेत की पूजा है जो किसी भयानक दुर्घटना से मौत का शिकार हुआ है अथवा जिसकी अकाल मृत्यु हुई है। दुर्भाग्य से दैवयोग से विष अथवा रोग से जिसकी अकालमृत्यु हुई हो वे स्त्रियाँ जिनकी प्रसव वेदना से मृत्यु हुई हो जिनको किसी अपराध में मृत्यु दण्ड मिला हो जिनको शेर चीते ने मार डाला हो बिजली गिरने से मर गये हों, अथवा अन्य किसी मर्मान्तिक घात से जिनकी मृत्यु हुई हो इन सभी के प्रेतों की पूजा होती है—वीर में वीर कहलाते हैं।

ये 'वीर' अपनी मृत्यु के स्वरूप से नाम के अनुक्रम विख्यात होते हैं—

ताड़-वीर—ताड़ वृक्ष से गिर कर मरने वाले का प्रेत

बाघवा-वीर—बाघ से मारे जाने वाले का प्रेत

बिजलिया वीर—बिजली से मारे जाने वाले का प्रेत

नागवा वीर—सर्पदंश में मारे जाने वाले का प्रेत

प्रसव वेदना अथवा प्रजनन में मर जाने वाली स्त्री का प्रेत 'चुड़ैल' कहलाता है।

यह प्रेत-पूजा उत्तर भारत के प्रत्येक भाग में विद्यमान है। प्रायः प्रत्येक गाँव में एक प्रेत वीर होता है, बहुतों में तो तीन या चार तक हैं। इसका इतना विस्तार है कि मुसलमान गाजी भी इसके क्षेत्र में आ गये हैं। बहराइच के विख्यात शहीद सालार मसूद गाजी पीर कहलाते हैं। इनकी कब्र पर हिन्दू-मुसलमान दोनों ही जाते हैं।

कनिंघम साहब का एक निष्कर्ष यह भी है कि जिन मृतात्माओं के प्रेतों की पूजा होती है वे अधिकांश आदिम जातियों के पुरखे हैं।

वीरों की पूजा में सर्वत्र फूल-फल पक्षी मेमने घंटे, चढ़ाये जाते हैं। हाथी और घोड़ों की मृण्मूर्तियाँ चढ़ायी जाती हैं और आदमी मंत्र पढ़ते हैं।

वीरों के मन्दिर मिट्टी के चौकोर चबूतरे होते हैं जिन पर मिट्टी की पिंडियाँ या स्तूप बने रहते हैं इन पर सफेदी पुती होती है, और लाल धारियाँ पड़ी रहती हैं। यह चबूतरा बहुधा पेड़ों के नीचे होता है।

कनिंघम साहब ने बताया है कि यह वीर-पूजा स्थानीय प्रेतों की ही होती है।

प० झाबरमल्ल शर्मा जी ने पच पीरो पर विचार करते हुए[३८] उन्हें उस वीर परपरा के आधीन माना है जो दूसरे वर्ग में आते है, और 'हीरो वरशिप' के क्षेत्र में हैं। इस दूसरी वीर-परपरा से ही 'अश्व' का घनिष्ठ सबध होता है।[३६] गूगा

और आस-पास एक-दो गाँवो तक सीमित रहती है। पर सभी प्रेतो मे तीन प्रेतो की पूजा स्थानीय सीमाओ को लांघ गयी है, और काफी विस्तृत प्रदेश में ये वीर पूजे जाते है—ये वीर है गूगा चौहान, हरशू वावा, तथा हरदौर लाल।

इस विवरण से स्पष्ट है कि कनिघम महोदय गूगा चौहान की पूजा को मात्र वीर या प्रेत पूजा मानते हैं। पर जैसा गम्भीर अध्ययन से विदित होगा कि यह आंशिक सत्य ही है।

३८ दे० शोध पत्रिका, भा० १ अ० ३ सित १६४७ पृ० १४२ १४३ तथा मरु-भारती, वर्ष ३, अंक ३, अक्टूबर १६५५ पृ० १६।

३६ **लोकवार्त्ता में अश्व——**

कथा सरित्सागर में 'विदूषक' की कहानी में उल्लेख है कि जब राजा आदित्यसेन के घोडे ने एक जगह ठोकर खायी तो तीर की तरह वह राजा को ले उडा और विंध्य पहाडियो के दुर्गम जगल में जाकर रुका। वहाँ घवडाये हुए राजा ने घोडे के पूर्व जन्म को जानने के कारण—उसे दण्डवत करते हुए कहा —

"तुम देवता हो, तुम्हारे जैसे प्राणी को अपने स्वामी से घात नही करना चाहिये। मैं तुम्हें अपना रक्षक मानता हूँ। मुझे किसी सुखद मार्ग पर ले चलो।" जव घोडे ने यह वात सुनी तब उसे बहुत खेद हुआ और उसने मनत राजा की बात मान ली, क्योकि श्रेष्ठ घोडे दैवी होते हैं।"

(The Ocean of Story. Vol. II pp 515)

पेंज़र महोदय ने यहाँ पाद टिप्पणी में घोडो के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी दी है। उसका आवश्यक अंश यह है —

"ग्रिम ने अपनी **ट्यूटानिक मायथालाजी** (दे० स्टाल्लीब्रस्स का अनुवाद, पृ० ३९२) में लिखा है—वीरो (heroes) को पहचानने के लिए एक मुख्य लक्षण यह है कि उनके पास वहुत समझदार घोडे होते हैं, जिनसे वे वातें भी करते हैं। एचील्लीज (Achilles) के ज थॉस (Xanthos) तथा वालियोज से वातें करने की घटना की पूर्ण तुल्यता सुन्दर वेयर्ड के कार्लिङ्ग उपाख्यान (Legend) में मिल जाती है। ' ग्रिम ने योरोपीय साहित्य से और भी बहुत से दृष्टान्त दिये हैं। कुमारी स्टोक्स के सग्रह की वीसवी कहानी की तीसरी टिप्पणी भी देखिये और 'ग्रीकिस्से मार्के' (Griechische Marchen) में वर्नहर्ड स्किम्दत की टिप्पणियाँ भी पृ० २३७ पर। पूर्वकालीन आर्यों के लिए योद्धेय अश्वो की वहुत उपयोगिता थी, अत वैदिक-काल से ही हमें घोड़ो की पूजा होती मिलती है। देखिए ऋ० ४ ३३। अश्व-पूजा तथा अश्ववलि पर, क्रुक की फोकलोर आव नार्दर्न इडिया, खड २, पृ० २०४-२०८ की टिप्पणियाँ पठनीय हैं। स्पेन निवासियो द्वारा जव मध्य अमेरिका के इडियनो को सवसे पहले घोडे मिले तव वे परा-प्राकृतिक माने

का अपने सीसे बछेड़े या बछाड़िमा से बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। ब्रज की लोकवार्ता में यह घोड़ा भी पीर माना गया है क्योंकि जिस प्रकार गुरु गुग्गा गूगल से उत्पन्न हुए उसी प्रकार यह घोड़ा भी उत्पन्न हुआ और दोनो एक दिन एक समय उत्पन्न हुए। इससे दोनो का संबंध सगे भाइयो जैसा था। आज भी जिन्हें गोगा के दर्शन जोगामेंड़ी में होते हैं उन्हें वे घोड़े पर चढ़े ही दिखाई पड़ते हैं क्योंकि वे घोड़े के साथ ही उस भूमि में समा गये थे।

यहां पीर से वीर पर पहुँचकर हम यक्ष वीरों की परंपरा में पहुँचना चाहते थे यहां हमें 'अश्व' के सहारे दूसरे प्रकार के वीरो के धर्म में पहुँचना पड़ता है।

अत अब हम कह सकते हैं नाग-यक्ष समुदायों से रूपान्तरित बौद्ध धर्म की वह शाखा जो आदिम जातियों के संपर्क में आयी और जो तंत्र से होकर गोरख संप्रदाय में सम्मिलित हुई वह ऐतिहासिक वीरपूजा और उसके उपाख्यान से मिलकर गुरु गुग्गा या जाहरपीर की परंपरा बनी। मुसलमानो का प्रभाव भी इस पर पड़ा या दूसरे शब्दो में मुसलमानो ने भी इसे ग्रहण कर लिया। यह मुसलमान जोगियो के माध्यम से हुआ। इस प्रकार इस पाषंड ने सभी धार्मिक प्रवर्त्तनों का प्रभाव ग्रहण किया और उनका कोई न कोई अवशेष अपने पूर्व पार्षद में बनाये रखा।

इसी के साथ एक और विशिष्ट बात इस पार्षद के साथ जुड़ी हुई है। राजस्थान के इतिहासकार यद्यपि पंचपीर को पंचवीर मान कर राजस्थान के पांच बड़े बड़े वीर-पुरुषों के नाम गिनाते हैं पर गुरु गुग्गा के परिवार के लोकवार्ता में मान्य पचपीर कोई और ही हैं वे हैं

१ भौता सौली घोड़ी का
२ नरसिंह ब्राह्मणी का पुत्र
३ भज्जू चमारी का पुत्र
४ रतनसिंह भंगिन का पुत्र
५ जाहरपीर बाछल का पुत्र चौहान

ये पांचो एक दिन एक समय एक ही विधि से उत्पन्न हुए थे। गुरु गोरखनाथ के गूगल से।

जाते थे और वैसी ही उनकी पूजा होती थी। धर्मगाथा (या पुराण-कथा-माइथालाजी) में घोड़े के सम्बन्ध में जानकारी के लिए द्रष्टव्य सायक्लोपीडिया आव रिलीजन एंड एथिक्स माइथालाजी खंड १ पृ २२०-२२६ तथा ३३०-३३२ में दे गुबेरनाटिस 'अबेर ग्लौबे (Aberglaube) में पाजली-विस्तोवा पृ ७६ फोक-लोर, खंड १६, ११ व पृ० ६१ पर कुक की हौमैरिक फोक-लोर पर कुछ टिप्पणियां भी ध्यान देने योग्य हैं।

सर्प-निवारण की क्रिया के साथ भी अश्व का सम्बन्ध भारत में वैदिककाल से विदित होता है गृह्य सूत्रों में सर्पबलि का विधान है। यह 'सर्पबलि' नामक अनुष्ठान श्रीवणी भर होता है। इस अनुष्ठान में कुछ मंत्रों का उच्चारण भी होता है, जिसमें एक श्वेत प्राणी का भी आह्वान किया जाता है। इस श्वेत प्राणी का उल्लेख ऋग्वेद में तक

इस पचपीरी विधान में एक अनोखी सामाजिक क्रान्ति के विधान के बीज मिलते हैं। सबसे उच्च वर्ण ब्राह्मण भी इन पचपीरो में सम्मिलित है। सबसे निम्न-वर्ग भगी भी यहाँ है। चमार भी सम्मिलित है और राजपूत भी। एक वर्ण इसमें नही है, वैश्य वर्ण। इसी के साथ एक यह तथ्य भी दृष्टव्य है कि वैश्यो से विशषत अग्रवालो से गोगाजी की मानता सवधी नाता बहुत घनिष्ठ है।"

जाहरपीर के स्वरूप को समझकर यह कहा जा सकता है कि यह कोई सप्रदाय अथवा मत नही, क्योकि उसकी कोई दार्शनिक व्याख्या करने वाली सस्था नही। इसे तो एक 'पापड' (जिसे अग्रेजी में कल्ट कहते हैं) मात्र ही माना जा सकता है। गुरू गुग्गा की मान्यता किसी आध्यात्मिक अभिप्राय से नही की जाती। गुरू गुग्गा की शरण में मोक्ष-प्राप्त करने अथवा ईश्वर-दर्शन की अभिलाषा से कोई नही जाता। इसकी समस्त मान्यता का तत्व यही है कि इसकी पूजा से जीवन के विघ्नो से मुक्ति मिलने की सभावना है। साथ ही सतान, धन, धान्य में भी श्रीवृद्धि होगी। इस दृष्टि से पचपीरो में विविध वर्णों के समावेश से किसी दार्शनिक, सामाजिक अथवा आध्यात्मिक समस्या पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडने की बात इससे सिद्ध नही होती। जिस युग में इस सप्रदाय का यह स्वरूप निश्चित हुआ, उस युग की मनोवृत्ति का इस पापड के स्वरूप निर्माण में किसी न किसी सीमा तक हाथ अवश्य है। अपने इस स्वरूप से

है। यह वह घोडा है जो आश्विनी कुमारो ने पेदु (Pedu) को दिया था इसको इसी कारण 'पैड्व' भी कहते हैं। यह सर्पों को अपने खुरो से कुचलता है। विटरनिज ने इसे 'सौर अश्व' (Solar Horse) बताया है।

४० प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार डी० लिट०, (पेरिस) 'अग्रवाल जाति का इतिहास' नामक पुस्तक के छठे परिशिष्ट की दूसरी टिप्पणी में 'गूगापीर' पर बताते हैं कि —

> अग्रवाल जाति का गूगापीर के साथ विशेष सवध है। प्राय सभी प्रान्तों के अग्रवाल गूगापीर को मानते हैं। और भाद्र के महीने में जब गूगा का मेला लगता है, तो उसमें बडे उत्साह से सम्मिलित होते हैं। जो लोग इस अवसर पर गूगा की समाधि पर पूजा करने के लिए जा सकते है, वे वहाँ जाते हैं, जो समाधि पर लगे मेले में शामिल नही हो सकते, वे अपने यहाँ ही गूगा का सम्मान करते हैं। गूगा की पूजा के तरीके सब स्थानों पर अलग अलग है। मध्य-प्रान्त के नीमार नामक स्थान पर गूगा की पूजा के लिए तीस हाथ लम्बा एक डडा लेकर इस पर कपडे और नारियल बाँधे जाते हैं। श्रावण-भाद्रपद में प्राय· प्रति दिन भगी लोग इस डडे का जुलूस शहर में निकालते हैं। लोग उसके सम्मुख नारियल भेंट करते हैं। अनेक अग्रवाल उसकी पूजा के लिए सिन्दूर आदि भी देते हैं। कुछ उसे अपने घर पर विशेष रूप से निमन्त्रित करते हैं और रात भर अपने पास रखते है। सुबह होने पर अनेक भेंट उपहार के साथ उसे विदा दी जाती है। सयुक्त प्रान्त, बिहार, पंजाब आदि में भी गूगा की पूजा के लिए इससे मिलती जुलती पद्धति प्रचलित हैं।

इस पार्व में एक बात तो निश्चय ही सुलभ कर दी कि बाहरपीर की सीमा में मेले आदि के अवसर पर, ऊँच नीच की पारस्परिक छूआछूत नहीं रही।

निष्कर्ष

१ गोगाजी गुरु गुग्गा अथवा बाहरपीर एक पायथ हैं संप्रदाय नहीं।
२ इसका आनुष्ठानिक संबंध जोगियों से है। इन जोगियों का गोरख-संप्रदाय से दूर का संबंध रहा।
३ जोगियों ने गोरख से संबंध रखते हुए गोगाजी के ऐतिहासिक व्यक्तित्व के साथ बौद्ध धर्म की उस परंपरा के पार्व का अपनाया जिसमें मत-नाम-संस्कृति के अवशेष प्रबल थे और जो आगे तत्र नाथ और मुस्लिम पीर परंपरा से प्रभावित हुई। किन्तु जिसकी आन्तरिक आत्मा 'एनिमिज्म' की थी।
४ ऐतिहासिक व्यक्तित्व के कारण 'पीर' पूजा के भाव इससे संबद्ध हुए।
५ गोगाजी के परिकर के 'पचपीर' पंचामनी परंपरा के हैं। पचपीरी परंपरा के तो अकेले गोगाजी हैं।
६ इतने समस्त प्रभावों के होते हुए भी इस पायथ का संबंध आदिम ऐनिमिस्टिक तत्वों से है। अनुष्ठान का समस्त विधान मत-नागों से संबंधित चित्र-दर्शन सिर-आना चाबुक कमर में मारो ये सभी तत्व प्रागैतिहासिक काल से चले आने वाले टोटेमिस्टिक सम्प्रदायों[४१] के अवशेष हैं। यद्यपि आज इसका संबंध केवल भारत भूमि से नहीं विश्व भर में ऐतिहासिक और टोटेमिस्टिक अवशेष जहाँ जहाँ मिलते हैं गोगाजी विषयक अनुष्ठानों और तत्वों से मेल बैठ जाता है।
७ इस प्रकार यह पायथ भारत के प्राचीन और नवीन सभी सांस्कृतिक विशेष गुणों को आज भी संजोये हुए चल रहा है।

गुरु गुगा की कथा

गुरु गुगा गुग्गा अथवा गोगा की कहानी के कई रूप प्रचलित हैं। कौलेल ने लिखा है कि गुगा बागड़ देश का राजा था। वह चौहान जाति का वीर राजपूत था और पृथ्वीराज का

---

४१ Totemism is the magico-religious system charactristic of tribal Society Each clan of which the tribe is composed is associated with some natural object usually a plant or animal which is called its totem. The clansmen regard them selves as akin to their totem species and descended from it [Studies in Ancient Greek Society—George Thomson New Edi 1954 P 36]

समकालीन था[४२]। एक अन्य परपरा से यह अपने पैतालीस पुत्रो और साठ भतीजो के साथ महमूद गजनी से युद्ध करते हुए मारा गया। एक तीसरी परपरा के अनुसार यह औरगजेब के समय में था। यथार्थ में इसके इतिहास के सबध में कुछ भी निश्चित ज्ञान उपलब्ध नही। हाँ, लोकवार्त्ता का तानाबाना अवश्य पुरा हुआ है। हम सुनते हैं कि कैसे गुरू गोरखनाथ की कृपा से यह बाछल से उत्पन्न हुआ, यद्यपि काछल ने षड्यन्त्र करके बाधा डाली थी, कैसे इसके धूर्त्त मौसरे भाई अरजन और सरजन ने इस पर आक्रमण किया, और वे युद्ध में हारे और मारे गये, कैसे मा ने इसे शाप दिया और अन्तत यह भूमि में समा गया, और कैसे यह मृत्यु के उपरात भी अर्द्धरात्रि होने पर अपनी पत्नी से मिलने आता था। इसका भक्त घोडा जवाडिया ('जौ से उत्पन्न') इसके अद्भुत साहसो में महत्वपूर्ण भाग लेता है।[४३]

अनेको कहानियो में नागो से इसका घनिष्ठ सान्निध्य माना गया है। लुधियाना में तो यहाँ तक कहा जाता है कि पहले यह साँप था, 'एक राजकुमारी से विवाह करने के लिए इसने मनुष्य का रूप धारण किया। बाद में अपना मूलरूप ग्रहण कर लिया।[४४] कुछ कहते हैं कि पालने में यह जीवित नाग का मुख चूसते देखा गया था। बहुत सी कथाओ में, इसका बासक नाग से सबध बतलाया गया है जिसने इसे सिरियल (जो सुरैल, सुरजिल या छरिआल भी कही जाती है) से विवाह करने में सहायता दी थी।

राजा ने अपने वचन-भग करके अपनी लडकी गूगा को नही दी, तो वह वन में गया, वहाँ बासुरी बजाकर पशु पक्षियो को मोह लिया। वासुकि नाग भी मुग्ध हुआ और उसने तातिग नाग को गूगा की सेवा में नियुक्त कर दिया। गूगा ने तातिग नाग को धूपनगर भेजा। यह नगर कारू देश में था, जो जादूगरो का देश था। सिरियल को एक बाग के तालाब में नहाते देख कर तातिग सर्प बन गया। और सिरियल को डस लिया। फिर ब्राह्मण का वेप धारण करके सपेरा बन गया। राजा के सामने पहुँचाये जाने पर उसने राजा से यह लिखवाकर ले लिया कि यदि सिरियल ठीक हो गयी तो वह सिरियल का सबध गूगा से कर देगा। तब उसने नीम का लहरा लेकर मत्र पढ़ते हुए, अपने पैर के अँगूठे से सिरियल का विप चूस लिया। राजा ने सातवें दिन विवाह की तिथि निश्चित

४२—पृथ्वीराज के समकालीन होने का उल्लेख सर हेनरी ईलिअट ने भी किया है। 'He is said to be contemporary of Prithviraj . .. ,'

देखिये 'मैमोयर्स आफ दी हिस्ट्री, फोकलोर एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन आव द रेसैज आव द नार्थ वैस्टर्न प्रोविन्सेज आव इडिया' पृष्ठ सख्या २५५।

४३—पजाब की पहाडियो में 'गूगा' के घोडे का नाम 'नीला' है। यह उसी दिन उत्पन्न हुआ था जिस दिन गूगा हुआ।

This and some other details of his story seem to be reminiscences of Buddhist lore ISL

४४—Ludhiana District Gazetteer, 1904 (Lahore 1907) pp 88 f

की। इतना कम समय होते हुए भी गुगा चमत्कार पूर्वक समय से ही फेरों के लिए खूपनगर पहुँच गया।[४४]

चम्बा में प्रचलित कहानी में वासक नाग गुगा का मित्र नहीं वरन् प्रतिद्वन्दी है। जब नायक एक बड़ी बरात के साथ अपने भावी ससुर की राजधानी (ससुर बंगाल का राजा बताया गया है) को चला तो वासक और उसके दल ने उसका सामना किया जिसमें नाग हार गये और नष्ट हो गये।[४५] [Indian Serpent Lore by Vogel pp 26 ff.]

यों तो हम ऊपर कई कथाओं का उल्लेख कर चुके हैं जिनमें गोगाजी के सबंध में अलग अलग विवरण दिया हुआ है। प्रत्येक वृत्तान्त में कहा गया है कि गोगाजी पृथ्वी में समा गये थे। क्यों समा गये थे? इसके भी दो कारण दिये जाते हैं। एक तो यह कि माता से अभिशप्त होकर उन्होंने पृथ्वी में समा जाने का विचार किया। वे सिद्ध थे। अतः पृथ्वी ने उन्हें स्थान दिया। दूसरा यह है कि गुरू गोरखनाथ ने अथवा स्वयं पृथ्वी ने उनसे कहा कि पृथ्वी में तो मुसलमान ही स्थान पा सकते हैं, तो गोगाजी जाकर अजमेर * गये मुसलमान बने और तब मेड़ी पर आये जहाँ पृथ्वी फट गयी और वे उसमें समा गये। अभी तक गोगाजी के जिन वृत्तों का वर्णन हुआ है उनसे बिल्कुल भिन्न वृत्त पं० झावरमल्ल शर्मा जो ने 'मरु-भारती' वर्ष ३ अंक ३ अक्तूबर १९५५ राजस्थान के लोक-देवता (पृष्ठ १ ११) में दिया है। इससे भी पूर्व शोध-पत्रिका' में उन्होंने विस्तारपूर्वक गोगाजी के वृत्त पर विचार किया है। शोध-पत्रिका के निबन्ध से आवश्यक अंश यहाँ उद्धृत किये जाते हैं —

"प्राप्त गीतों और परंपरागत बातों के आधार पर किये हुए अन्वेषण से यह प्रकट है कि गोगाजी चौहान ददरेरा के राव थे और उनके अधीन ८४ गाँव थे। पिता का नाम सुरजपाल *और पितामह का नाम धीया था। राठौड़ धांधल्या के पुत्र अमवीर पाबूजी के बड़े* भाई बूड़ाजी की पुत्री केलमबाई के साथ गोगाजी का विवाह हुआ था। यद्यपि ससुर होने पर भी पाबूजी गोगाजी से अवस्था में छोटे थे। केलमबाई के विवाह में कन्यादान के समय पाबूजी ने 'रातो बोली सांड सौंढिये[४८]' देने का संकल्प किया था। केसणबाई के ससुराल जाने पर जब पाबूजी के संकल्पित सौंड सौंढिये नहीं पहुँचे तब उसकी अन्तःपुर में हँसी उड़ायी जाने लगी। इससे केलमबाई को बड़ा दुःख हुआ। तानों को सुनते-सुनते वह तंग आ गयी। अतएव उसने अपनी कष्ट-कथा सोनालंग पाबूजी को लिखकर उनके संकल्प की याद दिलायी। इस पर पाबूजी दूर देशस्थ लब-खत्ती[४९] से वहाँ के उत्कृष्ट नस्ल के ऊँट-ऊँटनी प्रसिद्ध थे बड़े साहस के

४४—R. C. Temple-Legends of Panjab Vol. I pp. 121 ff

४६—कुमु में जो वृत्त है उसमें गूगा की दुलहिन सुरजर नामकी वासकी नाग की बेटी थी।

४७—कनिंघम ने आर्कायलाजिकल रिपोर्ट में 'मक्का' लिखा है। (ले०)

४८—ऊटनी और ऊट।

४९—लखा-खती सिन्ध में एक इलाका है वहाँ की सांडनी बहुत अच्छी होती थी। रिपोर्ट मर्दुमशुमारी मारवाड़—पृष्ठ २७।

साथ एक टोला (साँढ साढियो का समूह) घेर लाये और गोगाजी की भेंट कर दिया। गली-गली में ऊँट-ऊँटनी फैल गये। इस प्रकार पाबूजी अपने वचन का पालन कर यशस्वी बने।

गोगाजी की माता का नाम वाछलदे और मौसी का नाम आछलदे था। आछलदे के गर्भ से सुरजन-अर्जुन दो भाइयो का जन्म हुआ था। समीपवर्ती गाँव में उनका निवास था। जमीन-जायदाद को लेकर गोगाजी से उनका विरोध हो गया। इसके परिणाम में वादशाह के दरवार में दिल्ली पहुँच कर वे दोनो पुकारे और खास वादशाह की फौज चढा लाये। फौज ने आक्रमण किया और गौएँ घेर ली, जिसके लिए गोगाजी ने युद्ध किया। उनका 'वाला' भानजा भी मार्ग में साथ हो गया। दोनो ओर से घोर युद्ध हुआ। किन्तु गोगाजी ने गौएँ छुडा ली। सुरजन-अर्जुन मारे गये। वहुसख्यक योद्धा काम आये। जव गोगाजी की माता ने यह सुना कि, गोगाजी ने अपने मौसेरे भाइयो को मार डाला, तव वह क्रुद्ध हुई। गोगाजी युद्ध में घायल हो चुके थे। इसके वाद ददेरा[५०] का निवास त्याग कर गोगाजी मैडी[५१] चले आये और वही उनका देहावसान हुआ।"

इसी निवध में प० झावरमल्लजी ने कुछ अन्य रूप भी गोगाजी की कथा के दिये हैं। जिनमें से एक श्री मुशी कन्हैयालाल माणिकलाल-रचित 'Gurjar Problems' के आधार पर लिखित 'भारतीय विद्या', जनवरी, १९४६ में प्रकाशित एक नोट का साराश है। वह यह है कि 'गोगा' चौहान को गूजर अपना एक पूर्व पुरुष मानते है। गुजरात में प्रति वर्ष गोगाराव का जुलूस निकाला जाता था जो पिछले ३० वर्षों से वन्द हो गया है। वहाँ गोगाराव की एक मिट्टी की वडी मूर्ति वना कर जुलूस के साथ गाँव के तालाव या नदी में पधरायी जाती थी। गोगा चौहान की कहानी एक बूढे सुलतान के कथनानुसार यह है कि "गोगा चौहान एक राजा का पुत्र था। माता के गर्भ से उसका जन्म होने के साथ ही एक साँप का जन्म भी हुआ था, जिसका पालन उसकी माता ने किया। गोगा वडा होने पर अपने सहजात भाई साँप को वहुत चाहता था। जव वह साँप गोगा को छोड कर जाने लगा, तव कह गया कि जव कभी आवश्यकता आ पडे, तव मुझे बुला भेजना, मैं आऊँगा और तुम्हें वचाऊँगा। जव गूजर मुसलमान वन गये, तव गोगा को जाहिर 'पीर' कह कर स्वीकार कर लिया गया। अन्त में उस बूढ़े सुलतान द्वारा

---

५० "ददेरा" नामक गाँव, इस समय बीकानेर राज्य के परगना राजगढ में है।

५१ "गोगा-मेढी"—कस्वा नौहर से पूर्व की ओर ८ कोस के अन्तर पर अवस्थित है। हिसार एव सिरसा जिले का समीपवर्ती स्थान होने के कारण गोगामेडी को Mehri के रूप में हरियाना जिले का गाँव समझने की भूल की जाती है। किसी समय यह चाहे हरियाने में रहा होगा, किन्तु इस समय तो वीकानेर राज्यान्तर्गत परगना नौहर का एक गाँव है।

साँप निकलने पर गुजरात में गाया जाने वाला निम्नलिखित गीत भी उद्धृत किया गया है।

१ दम मुवम गुगा मोडसी
दम गाना सुसताग
गूगे हुयु करे सेंयु
बोलन मीये नाम

२ एरे मुण्ड मातरा
नाग हाथ म पर
बिछु-परिमा ए गवसा
मत जावन कायजा

३ ग्यारस भावन ग्यारसी
लेभा गुगे का नाम
जिस दम गुगा जामिया
मो सुलताणी बाम[१२]

एक दूसरा वर्णन राजस्थान के महाकवि कविराजा सूर्यमलजी मिश्रण के वृहद् वंश भास्कर की तृतीय राशी के १२ १५ मयूखो में दिये गये वृत्त के अनुसार है। "बाघाचुर के पुत्र रावण को मार कर अजमेर बसाने वाले अजयपाल चौहान के परपौत्र जीव[१३] का पुत्र गोगा चौहान था। उसकी माता का नाम मति था। वह विदर्भ के राजा की पुत्री थी। मति की छोटी बहिन कीर्ति थी जो दोड़ के राजा कमदेव को बिवाही थी। उसके गर्भ से दुर्जन व अर्जन नामक दो भाइयो का जन्म हुआ था। राजकुमार गोग शुक्ल पक्ष के चन्द्र की भाँति कला को बढाता हुआ सोलह वर्ष की अवस्था में पहुँच कर पवन लिए निर्दिष्ट अशोक घोड़े पर चढ़कर हो शिकार के लिये जाने लगा। सिंह और वराह उसकी शिकार के लक्ष थे। इसके बाद उसने राघवाचुर के पुत्र बटाचुर-बकाचुर को उनके संगी साथियो समेत मारा। उस लड़ाई में गोग के शरीर पर बत्तीस घाव आये थे।

१२—Gurjar Problems by K. M. Munshi भारतीय विद्या जनवरी सन् १९४६।

१३—अजयपाल चौहान
|
बटवंसल
|
अनङ्गराज
|
जीव
|
गोग

पुत्र की इस विजय पर राजा भीम ने बहुत वधाइयाँ वाँटी और दान पुण्य किया। तत्पश्चात चन्द्रवशीय वगीय राजा श्रीधर की गुणनिधाना कन्या प्रभा के साथ गोग का विवाह सम्पन्न हुआ और राजा भीम ने अपनी रानी विदर्भ-कुमारी के साथ वन में योग मार्गावलम्वन पूर्वक ब्रह्मरध्र मार्ग से देह त्याग किया।

अठारह वर्ष की अवस्था में गोग चौहान पिता की गद्दी पर वैठा। उसका पुत्र शुभकरण भी पिता के समान ही विक्रमशाली हुआ। गोग को तीर्थराज प्रयाग में गोतमवशी कृपाचार्य से शास्त्र और शस्त्र-विद्या सीखने का सुयोग मिला। गोग का नाना नि सन्तान था, इसलिए उसने अपना राज्य गोग को सुयोग्य देख कर सौंप दिया और स्वय अपनी रानी सहित वानप्रस्थाश्रम ग्रहण कर परलोकवासी हुआ। विदर्भाधिपति गोग के मातामह (नाना) की कनिष्ठा कन्या नीति गोड राजा जयदेव को व्याही गयी थी। उसके दो पुत्र सुर्जन और अर्जुन गोग के मौसेरे भाई थे। जव गोग के इन दोनो मौसेरे भाइयो ने सुना कि नाना का देहान्त हो गया और उसका राजपाट गोग ने ले लिया, तव वे दोनो गोग के पास पहुँचे और साभिमान वोले—हमारा गोड कुल क्या निर्वल है कि तुमने अकेले ही नाना का धन-धाम सव कुछ ले लिया। उस पर तो तुम्हारा और हमारा समान अधिकार है। इसलिए आधा विभाग हमें दो। तुम कर्णाटक के राजा हो तो हम भी कवोज के अधीश्वर है।

यह सुन कर गोग ने कहा कि, पहले आते तो तुमको कुछ मिल जाता। नाना जी ने तुमको वुलाया नही, इसलिए मैं तुमको कुछ नही दूँगा। नानाजी लोकान्तरित हो गये और अव तुम हिस्सा लेने आये हो? यदि दान लेना चाहो तो सव का सव दे दूँ। किन्तु उसमें वल-प्रकाश का, गर्जन-तर्जन का काम नही। इस कथनोपकथन के परिणाम में सुर्जन-अर्जुन गोड ने लडाई ठानी और उस लडाई में गोग चौहान ने उनको पराजित कर दिया। तव तो सुर्जन-अर्जुन दोनो भाई सव राजाओ के पास पुकार कर थक गये, किन्तु उनका कोई सहायक नही हुआ। अतएव यहाँ से निराश होकर प्रतिहिसा की भावना से अटक नदी उतर कर वे ईरान के वादशाह अवूफरके दरवार में पहुँचे। उस वादशाह के पास वडी सेना थी। दोनो भाइयो ने उस प्रवल पराक्रमी यवन राज को गोग पर चढ़ाई करने के लिए उत्साहित किया।

अवूफर अपनी वडी सेना के साथ गोग चौहान पर आक्रमण करने के लिए अग्रसर हुआ। अपनी नाक कटा कर दूसरो को अपशकुन देने वाले की भाँति सुर्जन-अर्जुन गोड उसके साथ थे।

"लघि सिन्धु सनामयो सरिता अबूफर साह आयउ।
और और न लुहि तोरस जोर सोर मही मचायउ।"

पाँच योजन (वीस कोस) का भू-भाग सेना से वादलो की तरह छा गया —यवनो की इस चढ़ाई का सवाद सुनकर और एक की पराजय सवकी पराजय समझी जायगी, तथा हमारी भूमि पर दुष्टो का अधिकार हो जायगा—यह विचार

कर गोग को सहायता के निमित्त बिना निमंत्रण ही—धर्मसम्मत नीति का अवलम्बन कर महामना राजा लोग एकत्र[४४] हो गये यथा—

मिच्छ सों इक को बनें सु बन समस्तन को पराभव
इक कारन एह भो भुव जाय दुष्टन क सु प भव
यों बिचारि महीप सज्जित व्है भये सब भासि इककत"

इतने वीर योद्धाओं को अपनी पीठ पर उपस्थित देखकर गोग ने कहा कि आप क्यों लड़ें पहले मुझे भिड़ने दीजिए। मुझे मार कर दुष्ट जब इधर को बढ़े तब आप सब जूझें। यों गोग समुपस्थित सर्वन्य राजाओं से वहीं ठहरे रहने का अनुरोध कर स्वयं रण के लिये सज्जित हुआ। उस समय वीरो का रूप बढ़ा और कायरो के मुख का पानी उतर गया। बादशाह अबूफर दो दिन का मार्ग एक दिन में ही तय कर सामने आया। उसने अपने तीस हजार घुड़सवार पहले ही गौएँ घेर लेने के लिए भेज दिये थे। गायों के घिर जाने पर त्राहि त्राहि मची। पुकार सुनते ही गोग अपने अशोक घोड़े पर सवार होकर सजी हुई सेना के साथ चल पड़ा। पाँच कोस पीछा करके उसने यवनो की पीठ का दबाई। बीस हजार शत्रुओं को मारकर उसने गोधन को छुड़ा लिया। इसके बाद भी चौहान दुश्मन को दबाते ही चला गया। गोग के भागिनेय बाल ने खूब हाथ दिखलाये। पीछे से वे राजा लोग भी गोग की सहायता पर आ पहुँचे। कुरुक्षेत्र में भारत की तरह बड़ी घमासान मचाई हुई। नर्मदा के उस पार तक मुसलमानो ने *डटकर मुकाबला किया—किन्तु बाद में उनके पाँव उखड़ गये और वे भागने लगे। हिन्दुओं के* सहस्रो की मार खाते-खाते वे वापस लौटते हुए हरियाने पहुँच गये। हरियाने में पहुँचते ही राजाओं ने घेरा दे दिया। गोग ने झपट कर अबूफर पर वार किया जिससे

---

४४ गोग चौहान के सहायतार्थ बिना निमन्त्रण ही एकत्र हो जाने वाले राजाओं की नामावली वंश भास्कर के अनुसार इस प्रकार है —

(१) विदर्भ की सेना के साथ हरिसेन का पुत्र बाल (गोग का भागिनेय) (२) बंग देश के राजा का पुत्र प्रतर्दन (गोग का साला) (३) पटना का राजा सुव्रत। (४) अयोध्या के रघुवंशी राजा का पुत्र किन्नर (५) पाडव-वंशी नृपञ्जय। (६) धाराधिपति प्रमार का पुत्र जयसेन (७) प्रतिहार राजा सहल। (८) चोलाधिपति त्रिभुवन का पौत्र विक्रम। (९) मथुरा का यादववंशी राजा शूर। (१) कलिंग का राजा वीर राज। (११) केरल का राजा कुबेर। (१२) अंग का राजा चित्रसेन (१३) सौरठ का राजा जयंत। (१४) शाल्व का राजा शशिबिन्दु। (१५) वाहल का सुबाहु (१६) त्रिगर्त का जय (१७) कुन्तलेश्वर कर्मसेन (१८) मैथिल राजा प्रसेन (१९) तक्षक का दुर्ग (२) सुवीर का प्रवीन (२१) टकराय का केसरी (२२) मत्स्य देशाधिपति अर्जुन (२३) चालुक्यवंशी मुकुटक्षेत्र के राजा का पुत्र रवा।।दि (२४) मद्रराज सुवर्म (२५) मरु-महीप दुर्लभ।

वंश भास्कर ७ १ १४ वाँ मयूख पृ ७५५ ५६

वह अपने घोडे की रकाव में लटक गया। किन्नर ने अर्जुन गौड का सिर काट डाला सुर्जन भाग गया। हरियाने तक सभी म्लेच्छ मारे गये, और चौहान की जीत के नगारे वजने लगे। इस लडाई में गोग के पक्ष के वे सब राजा भी मारे गये, जिनके नाम पहले दिये जा चुके हैं। अपने बचे हुए सब राजाओ को एकत्र कर गोगा ने कहा कि अब हमारी भी जाने की अवधि आ गयी है। मेरा पुत्र शुभकरण अब वयस्क वीर है। उसके छोटे भाई १५ वीरगति पा गये। वशभास्कर-कार के शब्दों में—

"अजित गती खट मित वरस,[५५] कलिजुग-जावतकाल।
दिन जिहि जनम्यो ताहि दिन, पहुँच्यो नृप पाताल ॥
निलय गोग चहुवान के, रचि जन-पद हरियान।
ताको सब पूजत जगत, अब लग नृप चहुवान ॥
.. ..
गोग हि भूप प्रविष्ट गिनि नतिजुत रामनरेस।
पूजित जाहिर पीर कहि, कतिपय जवन विसेस ॥
ताहि सर्पभय होत नहिं, वरनत जो यह बात।
सर्पहु गोग प्रभाव सुनि, जवी[५६] निलय[५७] तजि जात ॥

वशभास्कर-रचयिता-वर्णित गोग चोहान के चरित का यही सार है।

एक और वृत्त का उल्लेख उन्होने ऐसे किया है —

"सिरोही राज्य के रिटायर्ड लेंड रेवेन्यु ऑफिसर लल्लुभाई भीमभाई देसाई ने अपनी पुस्तक "चौहान कुल कल्पद्रुम" में पृथ्वीराज विजय और सिरोही राज्य के इतिहास से उद्धृत वशावलियो में आये हुए चाहमान से ६ठी पीढीस्थ गोपेन्द्रराज का ही नामान्तर गोगाराव अनुमान करते हुए लिखा है कि सॉंभर के चौहानो ने मुसलमानो के हमले में हर एक समय अपना वलिदान दिया है। वगदाद के खलीफा महमद विन कासिम के साथ गोपेन्द्रराज उपनाम गोगाराव ने ११ लडाइयाँ लडी और वारहवी वार गौओ के रक्षणार्थ अपने ४३ पुत्रो के साथ मारा गया। उसकी राणी मेलणदे राठोड कन्या महासती थी। गोगाराव के पीछे उसकी ३५ राणिया सती हुई। गोगाराव ने वि० स० ७८२ में गढ सॉंभर में समर किया था। वर्त्तमान समय में इसकी गोगादेव के नाम से पूजा होती है। गोगाराव के युद्ध में वीर-गति-प्राप्त ४३ पुत्रो के विषय में एक "निशाणी" है—

"अचलो ऊदो, अमपत, लालचद, कंशव लाडो।
प्रेमो, पीथल, दाम, सदो, आमलमल्ल, छाँडो।

५५—६१३ वर्ष।
५६—जल्दी।
५७—घर छोड जाता है।

सठसी, भीम सभार जोध अमरो मान जेतो ।
बछो, डूंगो जसराज, मगपीर माधव नेतो ।
हर्वो कान, हरो, अंत पूठे गार्धन पधारण ।
विदो नाग वनिदास मरू, आध बीजो नारायण ।
सुआ सातस सससूर गोगराज सुत एम सड़े ।
शाह ममूद सुकर भामलो तिरयासी तण दिन पड़े[१८] ।।

पं॰ झाबरमल्ल शर्माजी ने अपने बाद के निबंध में कुछ ऐतिहासिक विचार भी दिये हैं । वे लिखते हैं —

'गोगाजी का जन्म ददरेवा[१९] नामक स्थान में हुआ था । उनके पिता का नाम सूरजपाल था । भारतवर्ष के इतिहास में वीरता के लिए चौहान अभिन्न सुख्याति प्राप्त कर चुके हैं । जिन वंशों को भारत के सम्राट् पदासीन होने का गौरव प्राप्त है उनमें एक चौहान वंश भी है । अपने हठ के लिये प्रसिद्ध दृढ़ प्रतिज्ञ हम्मीर चौहान ही था जिसने अलाउद्दीन खिलजी के हृदय को अपनी वीरता से विकम्पित कर दिया था । दिल्ली के अंतिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी की प्रबल पराक्रमी सेना को सात बार रणांगण से भागने के लिये विवश किया था । गोगाजी भी चौहान वंशोद्भूत वीर थे । उनका विवाह पाबूजी राठौर के बूड़ाजी की पुत्री केलमबाई के साथ हुआ था । वह पाबूजी राठौड़ की भतीजी थी । कन्या दान के समय पाबूजी ने 'सांड़ सांढियें'[१] देने का सकल्प किया था । रिश्ते में काकिया-श्वसुर होने पर भी पाबूजी गोगाजी से उम्र में छोटे थे । पाबूजी की ओर से सांड़ सांढिये पहुँचाने में विलम्ब होता देख ससुराल वाले केलमबाई की हँसी उड़ाने लगे । इस पर केलमबाई ने सन्देश भेजकर उनके सकल्प का स्मरण दिलाया । पाबूजी ने दूर देशस्थ हिन्द लंकपती से एक दो या पाँच चार नहीं बल्कि सांड़ सांढियों का एक बड़ा टोला दल बड़े साहस के साथ लाकर गोगाजी के मुकाड़े वाड़े भर दिये और यों अपना वचन पूरने का यश प्राप्त किया । गोगाजी गोरखनाथ के सम्प्रदाय के अनुयायी थे । उस समय राजस्थान में प्रायः नाथों की ही शिष्य परम्परा फैली हुई थी । गोगाजी जैसे वीर थे वैसे ही साधक भी थे । सांपों पर उनका असाधारण प्रभाव था । इस समय भी गोगाजी सांपों के देवता कहकर पूजे जाते हैं । कर्नल टाड के 'ऐंटीक्वटीज आफ राजस्थान' के नवीन संस्करण के सम्पादक विलियम क्रूक उक्त ग्रन्थ की पाद *टिप्पणी में लिखते हैं —*

Gugaji or Gogaji was killed in the battle with Ferozshah of Delhi at the end of the thirteenth Century A.D

१८—चौहान कुल कल्पद्रुम—पृष्ठ २२, २३ १ ।

१९—ददरेवा वर्तमान राजस्थान के बीकानेर डिवीजन में राजगढ़ से ८ कोस की दूरी पर है ।

१ —ऊंट और ऊंटनी ।

अर्थात् गोगाजी या गुग्गाजी तेरहवीं शताब्दी ईस्वी सन् के अन्त में दिल्ली के फीरोजशाह तुगलक की लडाई में मारे गये। यह सही है कि फीरोजशाह तुगलक का ददेरा पर आक्रमण हुआ था, किन्तु वह ईसा की १३ वी नही—१४वी शताब्दी के अन्तिम भाग में हुआ था। श्री जगदीश सिंह जी गहलोत के "मारवाड राज्य के इतिहास' में गोगाजी का विक्रम सवत् १३५३ में द्वितीय फीरोजशाह देहली के चढाई करने पर वीरता के साथ लडकर काम आना माना गया है। यदि गहलोत जी की राय में यह जलालुद्दीन फिरोज खिलजी है तो उसकी मृत्यु सवत् १३५२ में हो चुकी थी [देखिये मूल इतिहास] और सवत् १३५३ में इतिहासवेत्ता मुन्शी देवीप्रसाद जी की "यवनराज वशावली" के अनुसार फिरोज का भतीजा अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का बादशाह था। अस्तु, यह ध्यान मे रखने की बात है कि फिरोजशाह तुगलक का समय ईस्वी सन् १३५१ से १३८८ तदनुसार विक्रम सवत् १४०८ से १४४५ है। रिपोर्टमर्दुमशुमारी राज मारवाड[६१] [सन् १८९४ई०] में सवत् १४४० में फीरोजशाह तुगलक के समय मे ददेरे पर आक्रमण होने का उल्लेख मिलता है। यह ईस्वी सन् १३८३ होता है। यही गोगाजी के वीरगति प्राप्त करने का सही सवत् प्रतीत होता है। रिपोर्ट में लिखा है—

"गोगा चोहान, चौहानो में देवता हुआ है, जिसको साँप काटता है, उसके गोगा के नाम का डोरा बाँधते हैं। उसको 'तातो' कहते हैं। गोगा का थान, जिसमें साँप की मूर्ति पत्थर मे खोदी होती है अक्सर गाँवो में होता है और इसीलिये यह ओखाणा (प्रवाद) चला है कि 'गाँव-गाँव गोगा ने गाँव गाँव खेजड़ी।' अर्थात् 'गाँव गाँव में गोगा गाँव गाँव में शमी (जाटी)। भाद्रपद कृष्णा ९ गोगाजी की पूजा का निश्चित दिन है।

केसरिया कुँवर

केसरिया कुँवर गोगाजी का आत्मीय पुत्र होना चाहिये। उसकी पूजा गोगा नवमी से पूर्व दिन अष्टमी को होती है। जिस प्रकार गोगाजी को नागरूप माना जाता है, उसी प्रकार कुँवर केसरिया को भी। मालूम होता है, केसरिया कुँवर गोगाजी से पहले दिन युद्ध में काम में आ गया था। केसरिया के स्तवन-गीत में महिलाएँ उसको 'पदमा नागण का जाया' पद्मा नागिन से उत्पन्न, फुलन्दे का 'बीरा' (भाई) तथा किस्तूरी का ढोला (पति) कहकर वन्दना करती हैं। गीत में 'मढी' का भी नाम आता है, जिसको ददेरा छोडने के बाद गोगाजी ने अपना वासस्थान बना लिया था। गीत के अनुसार केसरिया का बाजा (युद्ध का मारू बाजा) 'धुर मडी' अर्थात् 'ठेठ मडी' में ही बजा, उनकी ध्वजा वही फहराई। उस समय तक इधर नागवश का अस्तित्व बना हुआ था, केसरिया की माता नागवश की थी, इसका गीत से आभास मिलता है।"

---

६१ रिपोर्ट मर्दुमसुमारी राजमारवाड, तीसरा हिस्सा, पृष्ठ १४।

गुरु गुग्गा की इस समस्त कथा के विविध रूपों में केवल निम्न बात समान है

१ गोगा जी अपनी माँ के इकलौते पुत्र थे।
२ उनके दो मौसेरे भाई थे।
३ गोगा जी और मौसेरे भाइयों में संपत्ति के लिए झगड़ा हुआ।
४ मौसरे भाई मुसलमानों की फौजों को चढ़ा लाये।
५. इन फौजों ने गायों को घेर लिया।
६ गोगा जी ने गायों को छुड़ा लिया।
७ युद्ध में मौसेरे भाई काम आये।
८ मुसलमानी सेना हार गयी।
९. मौसरे भाइयों की मृत्यु से गोगा जी की माँ उनसे नाराज हुई।
१ गोगा जी जमीन में समा गये।

इन अभिप्रायों के अतिरिक्त शेष सभी अभिप्राय असामान्य और भिन्न-भिन्न हैं जो विविध लोकवार्ताओं से गोगा जी के वृत्त के साथ जुड़ गये हैं। गायों की रक्षा करने के कारण और मुसलमानों की विशाल सेना को हरा देने के कारण 'गोगा जी' 'पीर-गुग्गा' के अधिकारी हुए। पीर हो जाने पर उनकी अमित शक्ति में दिव्यता का आरोप हुआ और इस दिव्यता से सम्बन्धित अनेकों कहानियाँ तरह-तरह से उनके जीवन वृत्त से जुड़ गयी। ऊपर का ढाँचा ऐतिहासिक विदित होता है। प्रचलित लोकवार्ता गीत में गोगा जी और मौसेरे भाइयों में संघर्ष का कारण असमीचीन है। गोगा जी अपने पिता की सपत्ति के अधिकारी हैं। उनके मौसेरे भाई अपनी मौसी मामी गोगा की मा से कहते हैं कि हमें आपने पाला-पोसा है। हम आपके पुत्र ही हैं जैसे गोगा जी हैं अतः सपत्ति में से हमें भी अपने पुत्र के बराबर अधिकार दिलाइये। गोगा जी की माँ इस बात के लिए प्रस्तुत हैं। पर गोगा जी तय्यार नहीं—अतः दोनों मौसेरे भाई मुसलमान राजा की शरण लेते हैं। यहाँ पर यह बात स्पष्ट है कि मौसेरे भाइयों का गोगा जी की सपत्ति में से हक चाहना अनुचित है। गोगा की माँ को भी इसके लिए प्रस्तुत नहीं होना चाहिये और कोई शासक भी इस अनुचित माँग के लिए अथवा समय गोगा जी पर चढ़ाई नहीं करेगा। अतः पूर्वमल्ल जी का दिया हुआ कारण उचित विदित होता है। गोगा जी को नाना जी की सपत्ति अधिकार में मिली। नाना जी ने गोगा जी को पूरा राज्य सौंप दिया और अपनी छोटी लड़की के पुत्रों को वंचित रखा। नाना जी की मृत्यु के उपरान्त अर्जुन-सर्जुन मौसेरे भाइयों ने अपने हक का गोगा जी पर दावा किया जो उनके अपने पुत्र की दृष्टि से समुचित था। गोगा जी ने देना अस्वीकार किया यह गोगा जी की दृष्टि से भी समुचित था। गोगा जी की माता की स्वीकृति अर्जुन-सर्जुन के पक्ष में भी नैतिक दृष्टि से ठीक बैठती है। मुसलमान शासक को भी अर्जुन-सर्जुन का पक्ष अनुचित नहीं प्रतीत हुआ होगा। गोगा जी की मा को अर्जुन-सर्जुन का मारा जाना भी इसलिए अधिक अखरा होगा कि उनका हिस्सा भी हम लोगों ने हड़प लिया है, और उन्हें मृत्यु के घाट भी उतार दिया। बहिन के पुत्रों पर ममता का यह रूप अनुचित नहीं।

यह घटना पृथ्वीराज चौहान से पूर्व की भी हो सकती है, कम से कम पृथ्वीराज रासो के वर्त्तमान रूप में आने से पूर्व की तो अवश्य है, तभी इसे] पृथ्वीराज चौहान से जोड दिया गया है—चौहान और मुसलमानी आक्रमण इन दो बातों के आधार पर ही ऐसा हुआ है। जयचन्द और पृथ्वीराज को इसी कारण मौसेरे भाई बना दिया गया है, और जयचन्द ने मुसलमानों को भारत पर चढाई करने के लिए निमन्त्रित किया, इसका समाधान कर दिया गया है। इस सम्बन्ध में अभी और अधिक ऐतिहासिक अनुसंधान की आवश्यकता है।*

१ घोडे की कहानी

२ गूगा के जन्म की कहानी—जिसके साथ गूगा के परिवार के लोकवार्ता विषयक पचपीरों के जन्म की बात भी है।

३ वासुकि नाग अथवा नागो से सम्बन्ध की कहानी

४ सिरियल से विवाह की कहानी

५ मृत्यु के उपरान्त भी सिरियल से मिलते रहने की कहानी

ये सभी लोकवार्ता मे जोडी गयी हैं। इसके लोकवार्ता के रूप और स्रोत पर ऊपर यथास्थान विचार हो चुका है।

---

*महाभारत में कौरव विराट-नरेश की गायें घेर ले गये थे। अर्जुन ने उन्हें छुडाया था। गोगा के वृत्त से इस घटना में साम्य है।

परिशिष्ट

१—गुरु गुगा के पायड़ में बौद्ध अवशेष

ऊपर इस संबंध में संकेत किया जा चुका है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि—

(१) गुरु गुगा के जीवन-वृत्त में बुद्ध-जीवन-कथा के अवशेष विद्यमान हैं

(२) इस पायड़ के अनुष्ठान की मूल आत्मा का सम्बन्ध बौद्ध श्रमण चिकित्सा पद्धति से है। उसके अवशेष दिखायी पड़ते हैं।

(३) पायड़ के जागरण अनुष्ठान में प्रयोग में आने वाले पट का प्रयोग बौद्ध पट-चित्रों की परंपरा में है।

(४) इन कुछ तत्त्वों के साथ पट में आने वाले कुछ अभिप्राय भी बौद्ध अवशेषों की शृंखला सिद्ध करते हैं। इसे ही यहां देखना है। गुरु गोगा जी के अनुष्ठान में काम आने वाले पट-चित्र में पशु और चक्र अवश्य होते हैं।

जाहरपीर पदौवा (सीरोठी)
चित्र सं० १
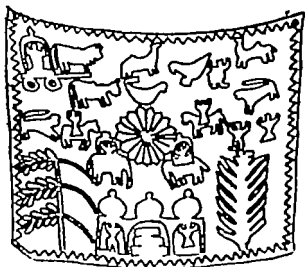
इस पशु आवृत चक्र का मूल हमें धर्मचक्र में दिखायी पड़ता है। अशोक स्तम्भ का ऊपरला चक्र पशुओं की एक पंक्ति के बीच में स्थित होता है।

यह धर्मचक्र है जिसका उपयोग भी तो भारत के सभी धर्मों में है। गीता में धर्मचक्र का उल्लेख कृष्ण ने किया है। जैनों के आयाग पटों में यह विद्यमान है पर

जो कार्य यह धर्मचक्र बौद्ध धर्म में करता है, वह अन्य किसी धर्म म करता नही विदित होता ।

जैन आयागपट से—चित्र स० ४

बौद्ध-धर्म म जब भगवान बुद्ध की मूर्ति या चित्र बनाने की प्रथा नही थी, उस समय वेदिका को या नो शून्य रखा जाता था और उस शून्यता से बुद्ध की सत्ता प्रकट की
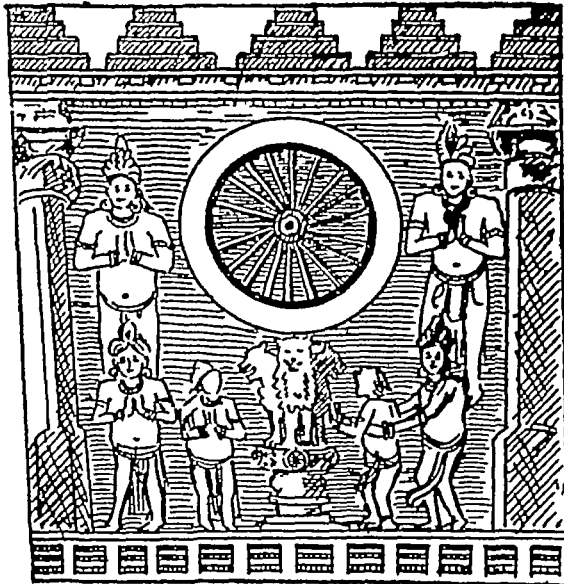
एक बौद्ध शिल्प
चित्र स० ५

जाती थी, या उसके स्थान पर 'चक्र' प्रस्तुत किया जाता था। चक्र यहाँ बुद्ध का ही पर्याय हो गया था। यह महत्व चक्र को अन्यत्र नहीं मिला। [दे चित्र १]]

गुग्गा-पट में चक्र ये दोनो धर्म प्रकट करता है—यहाँ चक्र धर्मचक्र भी है और गुग्गा का प्रतीक भी

इस चक्र के जैसे बौद्ध प्रतीक के रूप में दो प्रकार मिलते हैं एक २४ अरो[1] वाला और दूसरा बत्तीस अरो वाला[2] वैसे ही गुग्गा सम्प्रदाय में हमें इसके दो रूप मिलते हैं।

अशोक चक्र

चित्र १

मथुरा वाले गुग्गा पट में [देखिये चित्र स २] १२ अरे हैं। मापरा वाले में [देखिये चित्र स ७] १६ यद्यपि १६ अरे जैन आयाग पट में मिलते हैं [देखिये चित्र संख्या ४] किन्तु जैन चक्र का समस्त अभिप्राय बौद्ध अभिप्राय से भिन्न है। १२ अरे वाले चक्र के साथ पशुओं की पंक्ति का अभिप्राय है। मापरे वाला चक्र १२ के आगे १६ के द्विगुणों से १२

---

१ ये बौद्ध धर्म के २४ तत्त्वो के प्रतीक हैं। २ अतियो की वर्जना असंयम तथा तप ४ आर्य सत्य ८ अष्टांगिक मार्ग तथा १ शील—२४ (डा राधा कुमुद मुकर्जी अमृत बाजार पत्रिका मई १३ ५६ के रविवासरीय संस्करण में 'अशोक चक्र' पर निबंध)

२ ये ३२ अरे महापुरुषों के बत्तीस लक्षणों के प्रतीक माने गये हैं इनका उल्लेख दीर्घनिकाय विसुद्धिमग्ग आदि में हुआ है। [डा राधाकुमुद मुकर्जी उपरोक्त निबंध]

का इगित करता प्रतीत होता है। और पशुओ की अवस्थिति आगरावाले चक्र को बुद्ध-परपरा में ही पोषित करती है।
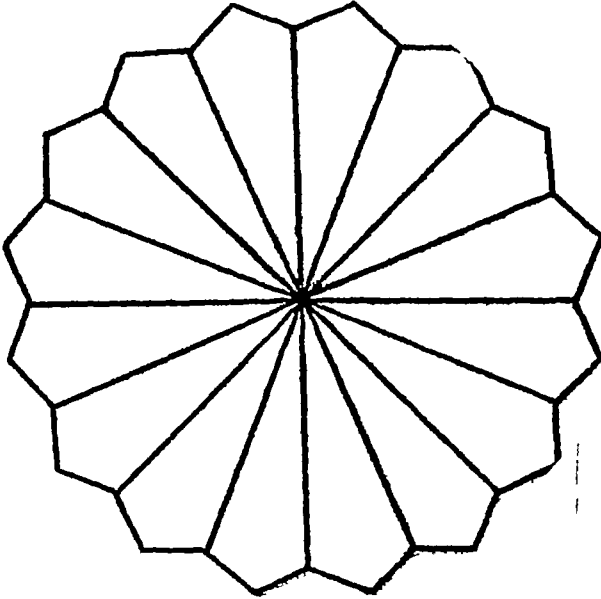
आगरा-पट का चक्र—चित्र सख्या ७

(५) इन्ही के साथ नाग-तत्त्व की विद्यमानता भी इस पापडको बौद्धो के निकट बताती है। नागो के सवध में ऊपर विस्तृत चर्चा हो चुकी है। गूगा जी नाग थे, यह भी बताया जा चुका है। मदौर में जो गूगा जी का शिल्प-चित्र दिया गया है, उसमें उसी शैली का उपयोग किया गया है जो बौद्ध कला में मिलती है। यहाँ एक चित्र मदौर के गूगा-शिल्प-रेखन का दिया गया है (देखिये चित्र स० १), और दूसरा एक बौद्ध-कला का नमूना है। (देखिये चित्र स० ८]

बौद्ध शिल्प नागो की बुद्ध पूजा—चित्र सख्या ८

दोनों की तुलना से स्पष्ट विदित होता है कि नागों का मूर्त्तांकन करने के लिए बौद्धशिल्प ने जो शैली अपनायी थी कि सिर पर सर्पफण दिखाया जाय उसी का उपयोग गूगा जी के मूर्त्तांकन में किया गया है।

गूगा जी के पंजाब में स्थित एक मंदिर का उल्लेख ऊपर किया गया है जिसमें भूमि में से निकलता एक सर्प बनाया गया है गूगा जी की मूर्ति के सामने। यह अभिप्राय भी उक्त बौद्ध चित्र सं ८ में भीत में से निकलते हुए सर्प में दिखायी पड़ता है— ये कला-अवशेष भी बौद्ध प्रभाव के द्योतक हैं और आज भी इस संप्रदाय के द्वारा बौद्ध-धर्म के प्रभाव के रूपान्तर की कहानी कहते हैं। सर्प पूजा में पत्थर में टंकित नाग चढ़ाये जाते हैं जिन्हें नाग-कल कहते हैं। इसमें नागों के साथ चक्र भी रहता है। नाग और चक्र का यह संबंध भी ध्यान देने योग्य है।

नाग-कल—चित्र संख्या ६

नाग-पूजा का विश्व व्यापी रूप
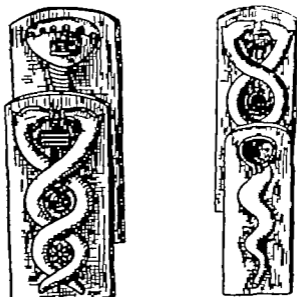
यूनान में माइसीनियन समय से क्रिश्चियन समय तक नाग-पूजा होती रही है।

१ एथिइरोध में अथीनो का एक पवित्र भाण्डार था। इसमें कुछ सर्प रहते थे जिन्हें डेलफी के अहि की संतान माना जाता था। इनकी देख-रेख एक पुजारिन करती थी। केवल यही उस बाड़े में जा सकती थी जिसमें सर्प रहते थे। यह pre-deistic नाग-पूजा का ही अवशेष था डेलफी से तो इसका संबंध आरोपित कर दिया गया है।

२ कोनोस की पहाड़ी पर, ओलिम्पिया के कुंज के सामने एलीथ्याइया का मंदिर था। इसमें सोसिपोली नाम का नाग रहता था। यह राष्ट्र-रक्षक माना जाता था। लोकवार्ता यह है कि एलिस पर जब शत्रु ने आक्रमण किया तो एक स्त्री गोद के बच्चे को लेकर

दोनो सेनाओं के वीच में वैठ गयी। उसका वच्चा तुरत सर्प वन गया। शत्रु उसके भय से भाग खडे हुए। वह सर्प पास ही विल में घुस गया। उसी स्थान पर यह मदिर वनाया गया।

३ हेरोडोटस के एक अवतरण में ऐरेकथीअस के मदिर में रहने वाले नाग का उल्लेख है। फारसवालो ने जव एथेन्स पर आक्रमण किया था तो ये नाग देवता लुप्त हो गये थे। इस घटना से नगर-निवासियो ने नगर छोडने का आदेश ग्रहण किया था। इस नाग देवता की भी पूजा की जाती थी। इस नाम देवता मे एरिकथीनियोस की आत्मा मानी जाती थी।

४. एरिकथीनियोस भूदेवी का पुत्र था, कुछ के मत से एथेना का पुत्र था। यह सर्प के रूप में पैदा हुआ था। यह भी कहा जाता है कि जन्म पर इसे एक सर्प-युग्म ने पाला-पोसा था।

५ नीलस्सन (Nilsson) नाम के विद्वान ने सिद्ध किया है कि वीर-पापडो (Hrco-cults) का जन्म मृतक-पूजा से हुआ है—और ये वीर, सर्प के रूप में प्रकट होते थे।

६ प्लुतार्क ने वताया है कि प्राचीनो की दृष्टि में वीरो का अन्य जीवो से अधिक सर्प से घनिष्ठ सवध रहा है। गिद्धो से क्लियोमीनीज की लाश की रक्षा एक साँपने की थी जो उसकी लाश पर गुन्जलक मार कर वैठ गया था।

७ क्यक्रियस, सलामिस के युद्ध से भाग खडा हुआ तो उसे ऐलियूसिस मे डिमेटेर ने शरण दी। यहाँ वह सर्प के रूप में डिमेटेर का परिपार्श्वक रहा। डिमेटेर भी माइनोअन सर्प-देवी है।

८ यूनान में आज भी वे वालक, जिनका वप्तिस्मा नही हुआ होता, 'ड्रकोइ' (Drokoi) कहलाते है—जिसका अर्थ है 'साँप'—क्योकि यह माना जाता है कि ये कभी भी साँप वनकर लुप्त हो सकते है। इसमें आलिम्पिया के वालक की घटना की स्मृति आज तक सुरक्षित है। (द० ऊपर स० २)

९. प्राचीन मिस्र में भी सर्पों की ऐसी ही मानता थी। सर्पों को मृतात्माओ का अवतार सर्वत्र माना जाता है।

१० पश्चिमी अफ्रीका में इस्सापू (Issapoo) के नीम्नो कपेल्लो अहि (Cobra-Capello) को अपना सरक्षक देवता मानते है। इस साँप का चर्म लेकर वे एक वडे वृक्ष से लटका देत है। उसकी पूछ नीचे की ओर रहती है। ऐसा वर्ष में एक वार उत्सव के साथ होता है। इस लटकते चर्म के नीचे होकर उस वर्ष में हुए वच्चे निकाले जाते है। उनके हाथ पूँछ से लगाये जाते है।

११ सेनेगम्विया में सर्प में यह विश्वास है कि वच्चा पैदा होने के वाद आठ दिन के अन्दर एक सर्प वच्चे को देखने आता है।

१२ प्राचीन अफ्रीका में एक सर्प-जाति के लोग अपने वच्चो को साँप के सामने रख देते थे, उनका विश्वास था कि उनके अभिजात वालक को साँप हानि नही पहुँचायेगा।

१३ ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका के 'आकिकयू' एक नदी के सर्प की पूजा करते हैं। और इनके यहाँ यह प्रथा है कि कुछ वर्षों के अन्तर से वे इस सर्प-देवता का अपनी कुमारियों से विवाह कर देते थे।

१४ तातार देश की एक कविता में एक ऐसी जादूगरनी का उल्लेख है जिसके प्राण उसके जूते के तले में रहने वाले एक सात फनवाले साँप में रहते थे।

१५ मिस्र में सृष्टि-कर्ता रे (Re) से पूर्व आदिकाल में चार मेंढकों और चार सर्पों का अस्तित्व माना जाता है। इनसे 'रे' की उद्भावना हुई। 'रे' सूर्य का अगुहैं, यही अपोफिस नामका सर्प माना गया है, जो अंधकार का प्रतीक है। सूर्य को नाव में बैठकर यात्रा करनेवाला माना गया है। इसके मार्ग में एक सर्प इस पर आक्रमण करने और निगल जाने के लिए बैठा रहता है। उसे मार कर ही मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

१६ बेबीलोनिया में पृथ्वी की प्राकृतिक उत्पादिका शक्ति को सर्प के रूप में पूजा जाता था।

बेबीलोन के विसमंमिया पुराण में उल्लेख है कि जब गिलगेमिश उत्नपिश्तिम से विदाई की भेंट में अमरौती का पादप लेकर लौट रहा था तो मार्ग में एक तालाब के पास स्नान करने लग गया। उस अमरौती को उसने किनारे पर छोड़ दिया। इसी बीच में यह साँप आकर उस अमरौती को खा गया तभी से साँप अमर हो गया।

१७ अत्यन्त प्राचीन काल की मृतक पुरुषों की समाधियों से जो कुछ चित्र के अवशेष मिले हैं उनमें सर्प को मनुष्य का ही दूसरा रूप माना गया है। मनुष्य का एक रूप तो मानवी रहा दूसरा सर्प का। इस पर जेम हैरिसन ने अच्छी प्रकार विचार किया है।

३—वैदिक सर्प तथा सर्प और आर्य

वेदों में वृत्र का उल्लेख है। वृत्र अहि है। यह वृत्र शब्द ऋग्वेद में कई स्थलों पर बहुवचन में आया है जैसे ऋ० ६-२२६ ६ ३३ ३ ७-३८४ ७-८३ ३ ६ ८८४ १०-८३-७. यहाँ पर वृत्र शब्द के दो अर्थ हो सकते हैं १ बादल-समूह २ वृत्र नाम की जाति के लोग। इन वृत्रों का उल्लेख कहीं दस्युप्रमुखों के साथ हुआ है कहीं दासों और अन्य आर्यों के साथ हुआ है। दस्युओं के साथ कहीं कहीं इन वृत्रों को अहि भी कहा गया है। इन प्रमाणों के आधार पर डा० अविनाश चन्द्र दास ऐम ए पी-ऐच डी इन्हें सर्पपूजक जाति मानते हैं।

ऋग्वेद म अर्बुद काद्रवेय सर्प का उल्लेख है। पचविंश ब्राह्मण में एक सर्पसत्र का उल्लेख है उसमें एक अर्बुद ऋषि ग्रावस्तुत पुरोहित थे। इन अर्बुद काद्रवेय को ऐतरेय ब्रा० (६ १) तथा कौषीतकी ब्राह्मण (२६ १) में मन्त्र-द्रष्टा माना गया है।

ऋग्वेद और तत्रिपयक ब्राह्मणों के अध्ययन से विदित होता है कि ऋग्वेद काल में दो दल थे—एक वृत्र के अनुयायियों का। ये सर्पपूजक थे। वृत्र को ये देव कहते थे। दूसरे इन्द्र के अनुयायियों का। इन दोनों में संघर्ष था। वृत्र जाति पूर्व पक्ष में थी इन्द्रानुयायी उत्तर पक्ष में। इन्द्र ने वृत्र का संहार किया। वैदिक काल में वृत्र सर्प और अहि एकवत् एक ही जाति के नाम थे यही महाभारत काल में 'नाग'

कहलाये। गरुड भी एक जाति थी। गरुड़ और सर्पों में परस्पर युद्ध छिडा रहता था। महाभारत में उल्लेख है कि गरुड ने नाग या सर्प जाति को खदेड कर एक अत्यन्त ही सुदर द्वीप में पहुँचा दिया था, और ये सर्प वही वस गये थे।

ऋग्वेद में सर्पराज्ञी नाम की सर्पजाति की ऋषिमहिला का उल्लेख है। इसने सूर्य पर पूरा सूक्त (ऋ० १०,१८९) ही रचा था। शतपथ ब्राह्मण में पृथ्वी को ही सर्पराज्ञी वताया है। यही ऐतरेय ब्राह्मण ने वताया है।

महाभारत से विदित होता है कि यायावर जाति के ऋषि जरतकारु ने वासुकि नाग की वहिन से विवाह किया था। इनका पुत्र आस्तीक था।

पणिस अथवा वणिक जाति के लोग भी वृत्र पूजक और वृत्रानुयायी थे। इन्हें भी आर्यों ने खदेड दिया था[1]।

हरिवश में उल्लेख है कि ऋषि वशिष्ठ के परामर्श से राजा सगर ने शक, यवन, काम्वोज, परद, पल्लव, कोली, सर्प, महिषक, दर्व, चोल, कोल, आदि जातियो से वेदाध्ययन का अधिकार छीन कर देश से वहिष्कृत कर दिया था।

इन सव प्रमाणो से विदित होता है कि वैदिक काल में सर्प-पूजा प्रचलित थी। सर्प-पूजको से आर्य घृणा करते थे। आर्यो और सर्पों में ब्राह्मण-काल में सधि हो गयी। सर्प-जाति के लोगो ने भी वेदो की ऋचाओ के निर्माण में भाग लिया। किन्तु ऐसा विदित होता है कि यह सधि अधिक नही ठहर सकी। आर्य लोगो की सर्पों के प्रति घृणा अन्तर्निष्ठ थी। सभवत सोमरस के लिए ही इन्हें सर्पों से सधि करनी पडी। यह वात ध्यान देने की है अर्बुद काद्रवेय सर्प के मत्र 'सोम' सवधी हैं। सर्पराज्ञी के सूक्त 'सूर्य' विषयक हैं। क्योकि सोम को सर्पों द्वारा रक्षित कहा गया है। वाद में आर्थिक कारणों से इसी सोम के लिए सर्पों का गरुडो से सघर्ष हुआ। आर्यों ने गरुडो का साथ दिया। सर्प खदेड दिये गये। गरुड ने सोम पर अधिकार किया। ये सर्प नाग जाति से मिल गये। इन सर्प-नागों से आर्यो का भयकर युद्ध नित्य होता रहा। जैसे नाग-यज्ञ का जन्मेजय ने आयोजन किया था, वैसे कई यज्ञ भारतीय इतिहास में हुए हैं।

यहाँ पर यह सिद्ध करने से लिए कि इतिहास की पुनरावृत्ति होती है—ऋग्वेद से एक मत्र का भाव दिया जाता है—यह मत्र ऋ० ७-२१ का ३-७ है इस मत्र के एक अश का भाव यह है—

"तैंने अपनी शक्ति से वृत्र का सहार किया है। युद्ध में कोई शत्रु तेरा घात नही कर सका। पहले देवता तेरी दिव्य शक्ति के सामने झुक गये हैं, उनकी शक्ति तेरी दिव्य शक्ति से हार गयी है, उनकी शक्तियाँ तेरे महत्तम वल के सामने धूल चाटने लगी हैं।" आदि।

इससे विदित होता है कि वैदिक काल में इन्द्र ने वृत्र अथवा सर्प जाति को परास्त किया, सर्प जाति के लोगो ने इन्द्र के समक्ष हार मानी। सर्प के शक्ति-केन्द्रो में इन्द्र के शक्ति-केन्द्र स्थापित हुए।

---

१ यही कारण है कि वणिक जाति में आज भी गुरु गुग्गा या जाहर पीर की विशेष मान्यता है। दे० 'अग्रवाल जाति का इतिहास' विद्यालकार

वैदिक इतिहास का यह पूर्व युग हुआ। बाद में कृष्ण ने इन्द्र को इसी प्रकार परास्त किया जिस प्रकार इन्द्र ने सर्प-जाति को किया था। यों कृष्ण ने नाग-जाति को भी ब्रज से निष्कासित कर दिया था।

किन्तु सर्प-नाग जाति समाप्त नहीं हो सकी। जन्मेजय के भयंकर नाग-यज्ञ के उपरांत भी यहाँ नागों और सर्पों की बहुलता रही। नागों और सर्पों को सम्पूर्ण विनाश से आस्तीक ने बचाया।

और इतिहास का एक और पृष्ठ कहता है कि भगवान बुद्ध के समय में नाग फिर उतने ही प्रबल हो गये थे क्योंकि लोक-स्तर पर भगवान बुद्ध ने नागों को उसी प्रकार परास्त किया है, अपनी शक्ति के तेज से जैसे इन्द्र ने वृत्र को किया था। और बुद्ध ने समस्त नाग-क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित कर लिया। यों परास्त होकर नाग बुद्ध के अनुयायी हो गये। नागों और बौद्धों का घनिष्ठ संबंध हो गया।

और ये नाग गुरु गुग्गा के समय तक भी किन्हीं किन्हीं क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बनाये रहे। लोकवार्ता में नागपूजा गुरु गुग्गा अथवा जाहरपीर के साथ ही जीवित नहीं वह स्वतंत्र रूप से जीवित है और फल-फूल रही है। ब्रज में 'नागपंचमी' सर्वत्र मनायी जाती है। पूर्व में मनसा-पूजा इसी नाग अथवा सर्प पूजा का ही एक रूप है। गुरु गुग्गा अथवा जाहरपीर का संबंध भी नाग पूजा से है।

डा० अविनाशचन्द्रदास ने यह सिद्ध किया है कि सर्प या नाग सप्तसिंधु की भूमध्य आर्यजाति ही थी। डा० अविनाश ने कहीं कहीं इन्हें जंगली जाति माना है जो सोम बेचने पहाड़ों से आती थी जिसे इन्द्रानुयायियों ने बकरी की सहायता से निकाल बाहर किया था। उन्होंने इनको अवैदिक आर्य बताया है। प्रमाण में ये तर्क हैं

१ कई सर्प जाति के ऋषि मंत्रद्रष्टा हैं। अर्बुद काद्रवेय सर्पराज्ञी जरत्कारु आदि।

२ हरिवंश में सर्प जाति को क्षत्रिय माना गया है (हरिवंश अध्याय २)

जहाँ तक पहले प्रमाण का संबंध है, यह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि यह यहाँ की सोमाधिकारी जाति से समझौते का परिणाम था। यह बात भी दृष्टव्य है कि अर्बुद ऋषि को सर्प-यज्ञ का ही पुरोहित बनाया गया है। उन्होंने 'सोम' पर ही सूक्त रचना की। इससे केवल यही सिद्ध होता है कि वैदिक आर्यों ने सर्पों का सम्मान किया। हरिवंश का प्रमाण बहुत शिथिल है। उसमें जिनको क्षत्रिय गिनाया गया है वे सभी भूमिज्ञान से आर्य नहीं हो सकते।

हमने आरम्भ में बताया है कि नाग या सर्प 'टोटेम' या 'तत्सम होना चाहिये। वैदिक आर्य तत्समीय नहीं थे अतः जो विद्वान सर्पों को आर्य जाति का मानते हैं वे सर्प को तत्समीय नहीं मान सकते।

डा० आर० शाम शास्त्री आर्य नामों में तत्सम के अवशेष मानते हैं। और मैक्डानल्ड कश्यप (कछुआ) मत्स्य (मछली) अज (बकरी) शुनक (कुत्ते) कौशिक (उल्लू) आदि आर्यीय नामों में तत्सम मानते हैं। हापकिन्स तथा ब्लूमफील्ड नहीं मानते।

ब्लूमफील्ड ने लिखा है।

"Totemism is founded on the belief that the human race, or, more frequently, that given clans or families drive their descent from animals totemic names like 'Bear' and 'Wolf' carry traces of this sort of belief into our time This particular question is a splendid theme, small of universal ethnology, but I have never been able to discover that it has any considerable bearing upon the ancient religion of India The many hints at its possible importance should be substantiated by a larger and clearer body of facts than seems at present available"

(as quoted by Dr Abinas Chandra Das in Regvedic Culture P 103)

ऐसे ही कुछ तर्कों से विद्वानो ने यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी कि यूनान म 'तत्वम' का अस्तित्व कभी नही था। किन्तु टामसन ने अपनी हाल की एक पुस्तक में 'सर्प', को ही मुख्य आधार बनाकर यह दिखाया है कि वहाँ 'तत्वम' का तत्व था। वह तर्क भारत के इतिहास पर भी लागू होता है। 'सर्प' की जैसी मान्यता और सर्प जाति का सांपो से सबध, सर्प-पूजा की स्थिति, ये सभी बातें निर्विवाद सिद्ध करती है कि 'सर्प जाति और सर्प' का परस्पर 'तात्वमीय' (Totemic) सबध था। अत डा० अविनासचन्द्रदास की भी मान्यता इन्ही के तर्कों से ठीक नही ठहरती। सर्प जाति को सर्प के स्वभाव की तुलना से नाम दिया गया होता तो वह जाति सर्प-पूजक न होती। सर्प-पूजा तत्वमीय स्थिति का एक प्रमाण है।

यह सर्प पूजक नाग जाति पजाव में किसी न किसी रूप में अपना अस्तित्व बनायें हुए थी, यह गोल्डनवाउ में फ्रेजर महोदय ने बताया है। राजस्थान में इस जाति का अस्तित्व भी होना चाहिये, और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा बगाल-आसाम में इसके पर्याप्त प्रमाण हैं।

जोगी .

हिन्दी विद्यापीठ ने दो जोगियो से 'जाहरपीर' का गीत और सोहिले आदि सग्रह किये हैं। एक लोहवन, मथुरा के मट्टानाथ हैं। दूसरे आगरे में अछनेरे के पास के गाव 'सीरोठी' के सूखानाथ हैं।

सूखानाथ ने बतलाया कि वह बाबा गोरखनाथ के चला औघडनाथ की शिष्य-परपरा से सबधित है। औघडनाथ बाबा गोरखनाथ के चौदह सौ चेलो में से एक थे। औघडनाथ के सबध में सूखानाथ तो कुछ नही बता सके, पर डा० रागेयराघव ने अपने प्रबध म लिखा है

"आगरे के श्मशान म कुछ दिन आकर ठहरने वाले, भैरव का चोला धारण करने वाले, लक्कड बाबा ने मुझ बताया कि वे आई पथी थे। पूछने पर कहा कि

एक ओर गोरखनाथ बैठे दूसरी ओर दत्तात्रेय बीच में से औघड़ पीर पैदा हुए। इन्हीं से 'आईपंथी' हुए।"

किन्तु जैसा हम ऊपर देख चुके हैं यह 'आईपंथी' सम्प्रदाय 'जाहरपीर' से उतना सीधा संबंध नहीं रखता न नामों से। हो सकता है जाहरपीर सम्प्रदाय से औघड़-पंथियों का कभी मेल होगया हो और जीविकोपार्जन के लिए इस जाहरपीर के आवरण को उन्होंने अपना लिया हो।

मुखानाथ ने अपने कच्चे ज्ञान के आधार पर जोगियों की निम्नलिखित शाखाएँ बतायी

१ चौबे जोगी—(पश्चिम मथुरा।) २ डाभोर जोगी—(सीरोठी अछनेरा आगरा) ३ डाकरे जोगी—(पटपर तहसील सरागढ़ आगरा) इनके परस्पर वैवाहिक संबंध हो जाते हैं। ४ नौमनाथिया—(बंडेरा भरतपुर) ५ बिसवा जोगी—(पश्चिम मथुरा) ६ बड़ गूजर जोगी—(सीरोठी अछनेरा) ७ बघेला जोगी—(बांसो भरतपुर) ८ पटवा जोगी—(शाहगंज आगरा)।

जोगियों के गोत्र उसने ये बताये —

१ डाकरे २ बड़गूजर ३ डाभोर ४ कछवाए ५ बोनागीर ६ चौबे ७ बमूरिया ८ कर्दमा ९ सोलंकी १० कसड़िया आदि।

लोकवार्ता गीत

जाहरपीर

[गायक लोहवन के मट्टानाथ]

पड़ा गाथ

जाहरपीर की कथा का विश्लेषण

जाहरपीर पर अब तक जो विचार हुआ है, उससे स्पष्ट है कि वह विविध सम्प्रदायो और मतो के ऐक्य से सगठित पापड है। उसकी कथा पर अभी तक जितना प्रकाश डाला गया है, उससे यह प्रकट होता है कि वह वीर पूजा का अधिकारी व्यक्तित्व रखता है, और उसकी गाथा जैसे वीर गाथा हो। किन्तु यहाँ आवश्यक यह है कि इस कथा का विश्लेषण और किया जाय।

प्रथम दृष्टि से ही यह विदित होता है कि इस कथा में निम्न तन्तु स्पष्ट हैं—

१ जाहरपीर की जन्म-कथा।
२. जाहरपीर की विवाह-कथा।
३ जाहरपीर की युद्ध-कथा।
४ जाहरपीर की निर्वाण-कथा।
५ सिरिअल की निर्वाण-कथा।

पहली कथा मे निम्न अभिप्राय है

१. राजा रानी संतानाभाव से पीडित—

लोक कथाकार ने इसमें कई अभिप्रायो को जोड कर इस सतानाभाव की स्थिति को अत्यत असह्य दिखाया है

उसने १ सतान की आवश्यकता दिखाई है।
२ ज्योतिषियो पडितो से विधियाँ पूछी है।
३ बाग लगवाया है।
४ बाग के फल फूल राजा के देखने से कुम्हिलाते है। रानी उन्हें बासी बताकर समाधान करती है।
५ बाग में राजा जाता है तो बाग सूख जाता है।
६ उसका साढू उसे अपने महल में नही आन देता।

(३ से ६ तक: इन तत्वो से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा ही भाग्यहीन है।)

७ राजा राजपाट छोड कर चल देता है, बाछल साथ जाती है।
८ अन्तत राजा लौटता है।

२ संतान-प्राप्ति के लिए जोगी-सेवा—

१ गोरखनाथ के आने से बाग हरा हो जाता है।
२ बाछल गोरख की सेवा करती है।
३ पहली सेवा का फल न मिलने पर फिर सेवा करती है।

३. जोगी से फल प्राप्ति—

१ बाछल की पहली सेवा का फल धोखा देकर उसकी बहिन काछल ले जाती है।

२ बाछल को बाछल समझ गुरु उसे वो फल देते हैं।
३ बाछल को दूसरी सेवा पर एक जौ या गूगुल मिलता है।

४ फल का उपयोग—

१ काछल दोनों फलों को अकेली खाती है।
२ बाछल गूगुल या जौ को पाँच व्यक्तियों में बाँट देती है। वे पाँच हैं
१ वह स्वयं।
२ घोड़ी।
३ चमारिन।
४ महतरानी।
५ ब्राह्मणी।

५ बाछल पर लांछन—

१ बाछल गर्भवती।
२ ननद से बिगाड़।
३ ननद द्वारा बाछल के चरित्र पर लांछन।

६ बाछल का निष्कासन—

१ जेवर बाछल को मारने का प्रयत्न करता है पर तलवार नहीं चलती।
२ निष्कासन।

७ मार्ग में बाधा—

१ बाछल के बैल को सर्प काटता है।
यह सर्प स्वयं गर्भ स्थित जाहरपीर की चेष्टा से आया है।
२ पिता और ससुर लेने आये
जाहर ने दोनों को करामात दिखायी जिससे दोनों बाछल को लेने आये।

८ गृह प्रतिवर्तन—

बाछल सासुरे आई।

९ संतान प्राप्ति—

बाछल के जाहरपीर हुआ अन्य
चारों के भी सन्तानें हुईं ये पच पीर कहलाये।

इस कथा में ७वें अभिप्राय को छोड़ कर शेष सभी सामान्य लोक-कथाओं के तत्व हैं जो अन्य प्रसिद्ध कथाओं में भी मिल जाते हैं। सन्तानाभाव का अभिप्राय राम के पिता-माता से भी सम्बन्धित है। वहाँ योगी नहीं ऋषि आया है। ऋषि यज्ञ कराता है उससे यज्ञ पुरुष ने निकल कर खीर दी है। जिस प्रकार खीर तीन रानियों में बाँटी गयी है उसी प्रकार यहाँ गूगल पाँच में बाँटा गया है। ननद की शिकायत का तत्व लोक प्रचलित सीता बनवास

की कथा में भी है । यह लाछन की वात और लाछित को मारने या निकालने की वात सीता वनवास में भी है और राजा नल की माता मझा से तो एक दम वहुत मिलती है । निष्कासन के उपरात का तत्व जाहरपीर में अनोखा है । पीर का गर्भ में से जाकर वासुकि को विवश करना, अपने नाना और वावा को विवश करना । ये इस कथा के अनोखे तत्व हैं ।

दूसरे कथाश के अभिप्राय ये हैं--

१ स्वप्न में सिरिअल के दर्शन और आधी भावरें ।
२ सिरियल की खोज में अकेले प्रस्यान ।
३ गुरु गोरखनाथ से सिरिअल का पता ।
४ घोडे पर चढ कर समुद्र तट पर वैमाता को जूडी वांधते देखना ।
५ घोडे ने सिरिअल के देश में पहुँचाया ।
६ सिरिअल के वाग मे सिरिअल की शैया पर शयन ।
७ सिरिअल का आना, मिलन, सार-पांसे ।
८ सिरिअल के पिता ने विवाह का प्रस्ताव ठुकराया ।
९. जाहर का वन में जाकर वशी वजाना, नागो तक को मुग्ध करना ।
१० वासुकि ने तातिग नाग को सहायता के लिए भेजा ।
११ तातिग ने सिरिअल को स्नानोपरान्त डसा ।
१२ तातिग सपेरा वन राजा से वचन लेकर कि सिरिअल का विवाह जाहर से होगा, सिरिअल को ठीक कर देता है ।
१३ एक अन्य दूलह का भी आगमन और जाहर का भी ।
१४ दोनो वरातो का युद्ध ।
१५ दैवी हस्तक्षेप ।
१६ सिरिअल से विवाह ।

इस समस्त कथाश में कुछ भी असामान्य तत्व नही, सभी अभिप्राय अत्यत प्रचलित लोक-प्रेम-कथाओ में मिल जाते हैं ।

तीसरे कथाश में ये अभिप्राय हैं--

१ वाछल की वहिन के लडकों ने राज्य में से हिस्सा मागा ।
२ वाछल हिस्सा देने को तैयार ।
३. जाहरपीर ने अस्वीकार कर दिया ।
४ क्रुद्ध भाई मुसलमानी शासक को चढ़ा लाये ।
५ सिरिअल का हठ पूर्वक झूलने जाना और अपमानित होना ।
६ सिरिअल ने ही जाहर से साक्षात्कार की विधि वतलायी ।
७ सेना ने गायें घेर ली ।
८ जाहर ने गायें छुडाने के लिए युद्ध किया और दोनो भाइयो के सिर काट लिये ।

गायों के लिए युद्ध ऐसा तत्व है जो अत्यत लौकिक हो गया है, विशेषत राजस्थान

में। पाबूजी ने भी गायों के लिए युद्ध किया है। मुसलमानी शासकों को चढ़ा लाने का भी अभिप्राय इतिहास तथा लोकतत्व दोनों से संबद्ध है।

चौथे कथांश के अभिप्राय हैं—

१ जाहर मां को सूचना देता है कि उसने दोनों भाइयों को मार डाला।
२ मां का क्रुद्ध हो आदेश देना कि वह भ्रातृ-हन्ता उसे मुंह न दिखाये।
३ जाहर का पृथ्वी में समा जाने की इच्छा।
४ मुसलमानियत स्वीकार की।
५ तब पृथ्वी में वह घोड़े सहित समा गया।

चौथा अभिप्राय जाहरपीर के किसी किसी संस्करण में ही है। यह कथांश संपूर्ण ही अनोखा है। साधारणतः लोक में प्रचलित नहीं।

पांचवं कथांश में—

१ सिरियल के वियोग में जाहर प्रेत रूप में ही प्रकट होता है।
२ प्रति रात्रि जब मां सो जाती है तो सिरियल के पास आता है।
३ सिरियल से वचन कि मां से नहीं कहेगी?
४ सिरियल गर्भवती होती है अथवा उसकी सास उसे सौभाग्य चिह्न धारण किये देखकर संदेह करती है।
५ सिरियल मां से भेद खोल देती है और मां को दिखा देने का वचन देती है।
६ जाहर को पता चल जाता है। नहीं आता।
७ मां का उलाहना।
८ सिरियल काग से संदेश भेजती है। देवी से चौपर खेलता मिलता है जाहर।
९. जाहर सिरियल का निमंत्रण मान लेता है।
१ सिरियल से मिलता है बातें करता है तभी सिरियल मां को जाते हुए जाहर को दिखाती है।
११ मां आवाज देती है तभी जाहर सिरियल के साथ अन्तिम रूप से भूमि में समा जाता है।

यह अन्तिम कथांश पुनरुज्जीवन अथवा प्रेत-प्राप्ति का है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट विदित होता है कि समस्त कथा में वास्तविक ढांचा प्रेम गाथा का है।

पहला कथांश प्राय सभी लोकप्रिय प्रेमगाथाओं में मिलता है। नल-दमयन्ती सबकी लोक-कथा में भी नल के पिता निरसन निपुत्री हैं। उन्हें पुत्र की बहुत कामना है। अन्य अनेक लोक-कथाओं में ऐसा ही उल्लेख है। प्रेम-कथा का नायक असाधारण प्रकार से ही उत्पन्न होता है। जन्म से ही उसे सिद्ध या दैवी देवता का पौरुष मिलता है।

दूसरा कथांश शुद्ध प्रेम-कथा है। स्वप्न में सिरियल को देखना उसे पाने के लिए चल पड़ना। बाधाएं, उनका शमन। बोमी होना या योगी गोरख की कृपा पाना। देवी

जाहरपीर

गुरू गैला[1] गुर वावरा[1] करै गुरून की सेवा है
गुरू ते चेला अति बडा[2] तौउ करै गुरू की सेवा है
महरी[3] पै वादर ओलर्‌यौ वरसै कौढार है
रानी कौ भीजै काचुओ[4], जाहर मिरगुल[5] पाग है

---

१ ये दोनो नाथ गुरुओ के नाम प्रतीत होते हैं गैलानाथ तथा वावरानाथ ।

२ गुरु से चेला वडा माना गया है । इसमें एक सिद्धान्त तो यह विदित होता है कि चेला गुरु का ज्ञान तो प्राप्त कर ही लेता है, अपनी सिद्धि से उसे और आगे बढाता है, गुरु गोरखनाथ और मत्स्येद्रनाथ की शक्तियो और सिद्धियो पर जव ध्यान जाता है तो विदित होता है कि गुरु गोरखनाथ अपने गुरु मत्स्येद्रनाथ से बढ़े-चढे थे । उन्होने गुरु का 'त्रिया-देश' में से उद्धार भी किया था । यह कथन साम्प्रदायिक भावना से भी कहा गया होगा । नाथ-सप्रदाय के प्रवर्त्तक गोरखनाथ हुए । गोरख-सप्रदाय के अनुयायी अपने गोरखनाथ को सबसे वडा मानेंगे ही । अत अपने गुरु को सब से वडा मानकर अपनी भक्ति की सार्थकता प्रकट की और उनका गुरु सव से वडा होते हुए भी अपने गुरु की सेवा करता है, इस कथन से गुरु का शील भी प्रकट किया ।

३ 'महरी' को जगदीशसिंह गहलौत ने गोगाजी का गाँव माना है। पर गोगा जी का गाँव 'ददेरा' है। महरी तो वह स्थान है जो गोगा मेरी या गोगा मेंढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है । गोगा का गाँव नोहर तहसील में वीकानेर में है । वही गोगा मेरी या मेंढी है । इस मेरी या मेंढी का शुद्ध रूप 'महरी' हो सकता है । 'महल सुखाइ देउ काचुओ महरी' मरद की पाग, में महरी का अर्थ गायक ने हो मदिर वताया था जो ठीक प्रतीत होता है । मदिर अर्थात् पूजा का स्थान । यह सस्कृत 'मह' शब्द से बना है । (H H Wilson) विलसन महोदय ने अपने कोष में लिखा है मह–r 1st and 10th cls (महति महयति) To revere, to worship, to adore (ह) मह m (–ह) 1 A festival, 2 Light, Lustre, 3 A buffalo 4 Sacrifice oblation f (हा) 1 A Cow 2 A plant 'मह' धातु के जितने भी अर्थ ऊपर वताये गये हैं प्राय 'गोगा महरी' स्थान पर सभी का समावेश मिलता है । यह पूजा का स्थान है । मेला लगता है, वलि से सवध है, गोगा और गोगानो का 'गाय' से सवध है, पशुओ का मेला लगता है, जिनमें गाय का वाहुल्य होता है । गोरखनाथ की समाधि भी गोरख मेढ़ी, गोरख मंढी, गोरख मडी कही जाती है जो 'महरी का ही रूपान्तर है ।

४ चोर

५ पाग

फरवा[3] हरदम द्वारा न्यारा
ावै कबर ओढै कारा,
। भीतर लडत लडत गज हारे
नागी नगे ई पैरन धाए ।
ल ऊपर जब हरि नाम पुकारे
। बनायौ
अकरमा रोजु एक नाइ आयौ
,दामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगायौ
में डार्यौ नगरु तमासे आयौ
। भाई, घुर मक्के में जात लगाई
भरथरी
। वन्द
। नौऊ खड
ान्छा तारू गाम
पुर्स का सुमिरू नाम
ाका भी भला न दे ताका भी भला
ो महरी बनी पीर तेरी गचकोली और कलई सेत
ारौ खूट की आवै मेदिनी कादिम[3] लैंत पीर तेरी भेंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारो देस
नाथन की करवाई मान्ता[4] राखी लाज भेस की टेक ।
मानसरोवर राजा मान की जा घरु कुमरि लियौ औतारु
एक बरस की है गई दूजी लागनहार
द्वै ई बरस की रानी बाछिला जाकौ निकरयौ बाछल नौंउ
तीन बरस की रानी बाछिला चौथी में पगु धार्यौ ऐ
पाच बरस की रानी है गई, छैई बरसु मे पगु धार्यौ है
सात बरस की रानी है गई, आठैंई में पगु धार्यौ है
नौ बरस की रानी है गई, दसई में पगु धार्यौ है
ग्यारह बरस की रानी है गई, बारही में पगु धार्यौ है[5]

---

३ चबूतरा ।
४ जाहर ।

१ धरथरी—धारानगरी ।
२ कपर ।
३ मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४ इस पंक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथो की मानता हुई ।
५ लोक गीतो की यह शैली दृष्टव्य है । समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है ।

कहा सुनाइएँ बाबूजी कहाँ मरद तेरी पाग
महल सुनाइ देउ बाबूजी महरी[१] मरद की पाग
जाहर के बाजार में सीनी गई सुनार
कोई कू गढ़ता बाजूबन्द रानी सिरियल को सिंगार
जाहर की पैल में स्यापु लहरिया लेइ[२]
पापी ऐसा डसि मए बाबा ऐ दर्शन देइ।
राना है
सोवें नाग बगी मगिनिया तु बालक नित भायो
नागिनि नाग जगाइ दें अपनी में बाइ जोबन भायो
मारयो टोल मैंड बई दह में गेंद के संग ई आयो।
मारो फुसकार स्यांप भयो कारो गोरे ते है गयो कारो।
ठाढी जसोदा अर्ज करे मेरी नाग छोडिदै कारो।[३]
मानसी गंगा राजा मान ने खुदाई
जाके बीच में गिरवर धारयो

---

१ मन्दिर

१ जाहरपीर और गुरु गुग्गा का एक नाम आता है, टैम्पल महोदय ने भी लीजेण्डस आव पंजाब' में संख्या (६) के आरम्भ में लिखा है गुग्गा की समस्त कहानी महान् चमत्कार में पगी हुई है, आजकल वह प्रधान मुसलमान फकीरों में है अथवा सब प्रकार की नीच जातियों का पूजा पात्र है और जाहरपीर के नाम से भी विख्यात है। श्री जगदीशसिंह गहलौत ने लिखा है गोगा जी यह जिला हरियाना के गाँव महरी के चौहान राजपूत थे। सं १३५३ में दिल्ली के बादशाह द्वितीय के सेनापति अबुबक्र से युद्ध कर के वीर गति को प्राप्त हुए। हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भादो बदी ६ को इनकी जयन्ती मनाते हैं। मुसलमान इन्हें जाहरपीर के उपनाम से पूजते हैं।

२ बंगाल में पट-गीतों में से एक गीत का अंश भी है

> कालीदहेर कूले छिल केलि कदम्बेर गाछ
> ताते चड़े कृष्णचन्द्र दिये छिलेन झाँप।
> कालोनाग गाछ आहार बले सकले वेरिल
> नागवती पुष्टी कन्या उपस्थित हइल।
> नागेर माथाय पद दिये देखुना ठाकुर नाचित लागिल।

"बाङ्लार लोक साहित्य पृ १२४"

इस से यह अनुमान किया जा सकता है कि जाहर के गीत में कृष्ण का यह वर्णन पटों के पुराने अभ्यास के कारण आ गया है। पहले वे कृष्णचन्द्र के पट दिखाते होंगे बाद में जाहर का दिखाने लगे। और पुराने कृष्ण गीत का अंश स्तुति के रूप में रह गया।

सिंगमरमर कौ वन्यौ मुकरवा[3] हरदम द्वारा न्यारा
काली दह में गाय चरावै कबर ओढ़ै कारा,
गज और ग्राह लडे जल भीतर लडत लडत गज हारे
गज की टेर द्वारिका लागी नगे ई पैरन धाए।
जौ भरि सूड रही जल ऊपर जव हरि नाम पुकारे
गोविन्दौ हरि आप बनायौ
एकमे एक लगैं विसकरमा रोजु एक नाइ आयौ
भिलनी के वेर सुदामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगायौ
नाग नाथु रेती में डार्यौ नगर तमासे आयौ
पचवीर[४] पचो में भाई, धुर मक्के में जात लगाई
धरथरी[१] का भरथरी
[२]अलील का वन्द
जोगी खेलै नौऊ खड
मागू भिच्छा तारू गाम
अलख पुर्स का सुमिरू नाम
दे ताका भी भला न दे ताका भी भला
बकी महरी बनी पीर तेरी गचकीली और कलई सेत
चारो खूट की आवै मेदिनी कादिम[3] लैत पीर तेरी भैंट
पूरव पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारो देस
नाथन की करवाई मान्ता[४] राखी लाज भेस की टेक।
मानसरोवर राजा मान की जा घरु कुमरि लियौ औतारु
एक वरस की है गई दूजी लागनहार
द्वै ई वरस की रानी वाछिला जाकौ निकरयौ वाछल नौंउ
तीन वरस की रानी वाछिला चौथी में पगु धार्यौ ऐ
पाच वरस की रानी है गई, छैई वरसु में पगु धार्यौ है
सात वरस की रानी है गई, आठैंई में पगु धार्यौ है
नौ वरस की रानी है गई, दसई में पगु धार्यौ है
ग्यारह वरस की रानी है गई, वारही में पगु धार्यौ है[५]

---

३ चबूतरा।
४ जाहर।

१ धरथरी—धारानगरी।
२ कपर।
३ मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४ इस पक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथो की मानता हुई।
५ लोक गीतों की यह शैली दृष्टव्य है। समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है।

ऊट परवती सजे तुरकी ऐराकी
रथवहली सजि गई धरी हाथिन अम्बारी
कँसोडे के चारि नगर परिकम्मा दीनी
लमकर फिरै नकीव देर काए कू कीनी
मो उटि उडि धूरि लगी अम्मर में दादा मेरे
सो भानु गर्द में अटि गयौ ।
म्वाते उमरू चल्यौ मुरति जानें विरज की लगाई
नाऊ नेगी नाहि गैल हमें कौन वताई
म्वाते राजा चलि दीयौ श्रौर मानसरोवरि आय
मानसरोवरि आइकें राजा मान के घटाए मान
वामन राजा ते पिरोत ते मेरी कछू न वस्याइ
मो हात जोरि तेरे करू निहोरे दादा मेरे
मेरी कछु न वस्याइ, मो सादी कुमरि की है गई ।
नेगी लीनो वोलि भूप प्याऊ करवाई
तुम राजा के पास जाउ, नेग करवाश्रौ
नेगु कछू मति लइयो, नेगु चहियतु नाँय,
वेटी की भामरि डारि कें तुम कुमरि ऐ लै जाउ
चमरा लीनो वोलि घास दानो मगवायौ
मेख दई गडवाइ ।
अरे राजा ऐसी वात चौं करतु ऐ सो मेरे आए नौहूँक हजार
करी तैयारी वरैनुआ मगवाश्रौ
जौ ढाकरौ[1] लावै वरौनिया तौ हमारी ब्याई रुपैगी रारि
उम्मरु गयौ दहलाय पुरोत अपनौ वुलवायौ
तुम लै जाश्रौ वरैनुआ महाराज ।
मान राजा के मान, मति घटाश्रौ, सो हम लेंइ कुमरि ऐ व्याहि ।
लै वरैनुआ पिरोत गयौ राजा भयौ खुस्याल
सो जल्दी करौ भामरि तुम डारौ मो दादा मेरे
सो मैं भोर होंत विदा ब्याते करि दऊ ।
दै वरैनुआँ म्वाते आये, उम्मर ने जव वचन उचारे
कही महाराज राजा नें क्या वचन उचारे
पाति फाति की कहा चली राजा लीजौ भामरि डारि
ऐसी जग्गि करी तैंने म्वाँई, ऐसी ब्या मिलिवे की नाहि
नाऊ दीजौ भेजि भामरिन कौ सामान मँगाश्रौ
मति करौ अवार जल्दी भामरि गिरवाऊँ
सो पाँति के भरोसें तुम मति रहियौ दादा मेरे

---

1 ठाकुर ।

मंगार ते विगो निकारि, करम मिखी होगी सो हम भुगतिये।
दीनो कुमरू चौक बैठार्यो बड़ी पंडित नें रचवाई।
सखिया गाद रही मंगलचार
सो मुहूरी बामते बा कुमरि कें सो बैरीन घर है यौ काज।
रोसमस्त है गयी मात में बादर फरे
सखिमा देति बिरहीन
मोसौ राजा कैसें बोवैंगी बैरीन घर कर दौ काज्।
मामरि दीनी मेरि खुसी भयौ उम्मरु राजा।
बेटी चहिमत नांइ।
बेटी ऐ तुम अपने घर रातौ अपने लाला कौ करि सू मो दूसरौ ब्याहु
हाथ जोरि मात भयौ ठाड़ौ
तुम बेटी मैं बाउ बमाद हमारी दिखता ई सायें
तीज सनूने की तौ कहा चली मेरें नित आमी नित जाउ
बेटी तौ मेरी बहुत ऐ प्यारी बमाद के सू गौ आदर भाव
पौकाटी पियरा भयौ भयौ ऐ सकारौ हा।
रानी बाछलि तपत रसोई है हा
बा मेरी बाबी बा मेरी बाबी राजैं जोमिमा
अरे सिरकार क मेरी हा
बिरम लकुट लई हात म राजा ऐ बोलन जाइ
सार खिलते सारिया राजा तोइ कैसी सार सुहाइ
महल बुलाए ढोला पदमिनी राजा भी चलौ राउ जी हमारे साथ।
सार बढाई लई हैं करी फासे बरगु सम्हारि
मन माला ररराइ जी राजा मुख ते राम जपाइ
भामत बेबें बालमा रानी पतिका दैंति लवाइ
राजा कू तौ पतिका लवायौ
दिग बैठि गई मूडा डारि
मोरछलीन की बीजना रानी राजा की ढोरति ब्यारि
ठंडे पानी मरम् कराबै बल सिपरें लैंति समोइ
चदन चौकी डारि कैं रानी राजा ऐ उबटि न्हबावैं।
पीताम्बर करी धोवती राजा सूरज ध्यान लगावैं
हुलसे[1] पैं चदनु बिरवौ राजा तरसीयो डोरि चढ़ावैं
सवा पहर सुमिरिन करतौ राजा चौजू डेढ पहर दिन आवैं
न्हायौ धोमौ सापरेराजा सुकि चौका में आये
काए के थार में भोजन परोसे रानी काए कटोरा में दूध
सोने के थार में भोजन परोसे राजा चाँदी कटोरा दूध
पहली मिराउ करतौ कर्‌यौ राजा दूजी लाइ गिराइ

---

१ चकरिया।

तीजौकौर मुख में दीयौ राजा जाके गिरी नैन ते धार ऐ
जौरे ठाडी गौरे गगा भमानी पूछै राजा से बात ऐ
कै बलमा मेरे भोजन विगरे खाली परी ऐ सिकार ऐ
कै काऊ वैरी नें बोल बोलें राजा, कै काऊ ने आय दावी सीम ।
कै तेरौ घोडा हट्‌यौ कै रन लोटी तरवारि
ना चातुर तेरे भोजन विगरे ना खाली परी ए सिकार
ना काऊ नें बोल बोले रानी ना काऊ नें दावी सीमऐं
ना चातुरि मेरौ घोडा हट्‌यौ ना लौटी तरवारि
अन्न विछना जग वग सूना, वस्तर सूनी काया ।
[हे रानी यह लाख खानू है
तोपन पै तोरा, वह के गीत, मगल चार कौन कै गवि रहे ऐं
'आपकी बस्ती में एक साहूकारु ऐ श्रीमहाराज उसके नाती पैदा भयौ ऐ, हुव्व के गीत उसके गवि रहे है, रानी धन्नि हमारी परालवदि ता दिना व्याहि कै लाये ऐसी मौज कवऊँ न भयो] ।
नीम देकै जनमु जाहरपीर कौ होइ
पन सारदा सुनै बोलौ वागर के वीर की मदद ।
काऊ कै पुन्न परताप ते सभा जुरी आय
आपु नई उठि जाइयै गाय वजाय रिझाय
खरिया ओढ़ि वुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगाय
साडीमान वुलाए राजा नें कासी कू दऐ खदाइ
कासी सहर तें बिरमा वुलाइ लए कथा दई बैठाय
देस देस के पडित आये कथा रहे वे वाचि
विरमा वाचै वेद कू राजा ऐ गाय सुनावे
एकु विरामनु ज्यौं उठि वोल्यौ सुनि राजा मेरी वात ऐ
वेटा की तौ कहा चली राजा करमन में तौ वेटी नाऐं
इतनी वात सुनी राजा ने मारयौ गादी तै हातु ऐं
जमदर काढ़ि म्यान ते लीयौ हियरा कू लायौ राजा हात ऐ
काए कू जननी मैं तै जन्यौ विसु दै डारयौ न मारि
ए विरामनु ज्यौं उठि वोल्यौ सुनि राजा मेरी वातऐ

वार्ता--

काऊ के परताप तै सभा जुरी आय
आपु ई उठि जाइये गाय वजाय रिझाय
खरिया ओढ़ि वुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगायौ
खोदत खोदत गए पातालै जाकौ अमिरुत पानी पायौ ।
वेलदार राजा नें वुलवाए वागन की रौस डराई
धुर कावुल ते पौधि मगाई, धरवायौ लखेरा वागु ।
वाग बीच एक वारहद्वारी, फूला माली कीयौ रखवारौ ।

गरमी की मेवा फालसे जामें राजा जाड़े की मेवा दाख ऐ
जामरे जामनि जामिन जम्हीरी फरौसी कमरखरी महुर सू जमीरी
सैंतूत वाला जिम्मीवि न बरनी जामतों फालसे बहुत जामें खिरनी
नए नारियल दाख चारी चिरौंजी कंजा जु रीठा कैसोर पान ही जगत बहुत मीठा
समति बेरि मीठी बीज मोमा
सेंजनो कचनार सीसों नमोगा
रही बांस मेंहराय चम्बन चमेसी
मुचमुक पुनीम गुसील मुर्रमा
नौरम चमेसी सूब रंगा
कमल नैन एटी बोमा जु मरुमी मिर्च मास बड़ी
चौरा जु पीपरी गुलकंच ठोरा
सूरजमुखी फिरति नारि मोरा
लौंग रे इलायची की छई क्यारी
मूके मव चरे काम बारी
कीचडि करीसा झुए बास मूबर
रैमजा चौंकरा चौन पीरी
हीसिया पीसुमा फेरि मोरी
हीसिया हर्सरा नारि के बीस मगा
परी पापरी सैगर सिहोरे इमासिमि इवेक स्व जोरे
मसू मरसू परौंदू करम कूड बिराजें
मापुरी मताम ज्या सबन मैं बिराजें
ज्या साम सैंदू
नपट माम सौंनी
कामिम्न ममिम्न सौंबी
रौसन मयूरा सधारम सरई
इसायन चकायन बड़ी बेलि पाई
जरि बेलि मुसम जरि जोरि महुआ रायन मसेबो पोरी म मरुमा
जाकुमर माव कारू करोसा न करेरे
चाट्टा जु मिट्ठा निबुआ चमेरे
देखे बाराम देखे बो संगूरा
चौकरि करीसा झुए बास मारी
केतकी न बेसा केवड़ी नवीसा
कैतन के पेड़ लये चा वासी न चौंकरा
अनारि के पेड़ देखे बहुत हैं मसूक जामें जामनी के पेड़ बहुत हैं बीसा
रामन चमामन बर के पौधा
रमासिमि भाई या सीमताई पाई
बड़े बड़े पेड़ ज्या पीपर के माई

नीव की निबोरी लगी, अम्मारतीन के फूल झरे
वनकाट की लकडी रौस पै ठाडी ऐ
फेरि आए फुलवारी की वहाल तौ देखि रहे
मरूए की छवि न्यारी है
मरूए की छवि न्यारी गोल के नीचें ढारो ए ।
मोरछली के पेड राजानें फुलवारी के वीच धरे
गुमटी दुरटा की भारी ऐ ।
एकु पेड पसेंदू कौ आयौ छवि जाकी न्यारी
ढरवारि भाइ जाइ, वेला कौ तमासौ एक फुलवारी न्यारी ऐ
फूलन के हजार देखे फुलवारी एक
हजारा गैंदा कौ भारी ऐ ।
खसवोई तौ आमति न्यारी न्यारी
झूटी साखि वमूर नें डारी ऐ
भौंतु तौ सुहामनो फूल एकु देख्यौ
गोरखमुडी एक खेतन में न्यारी ऐ
अरे जारे माली के एक गोरख मुडी न लाए
सेंति मैंति की एक किसानू फुलवारी ऐ

वार्ता—

वास की डाली केरा के पत्ता फूल लए फल चारि
लै डाली म्हातैं चल्यौ राजा की कचहरी आया
डाली धरी उतारि मालीनें नवि नवि के मुजरा कीया
मैं तोइ पूछू हीरामनि माली मेवा कहातें लाया
जो राजा तुमनें वाग लगायौ मेवा राम बाग ते लाया
खुसी भयौ रे देसापति राजा माली कू दैतु इनामु ऐं
चढनौ तौ जानें घोडा दीयौ, उडनो वाजु ऐ

वार्ता—

जादिन वागु व्याहिवे कू आमें तेरी राजी करि आमें
फूला माली विदा करि दीयौ फुलवारी डाली पै आई राजा की आखें
फिरि राजा नें माली बुलवायौ बेटा वासी मेवा लायौ
अरे राजा परि सिगमरमर की वनी कचहरी पानो से वगला छाया
परि लागी भभैक मेवा कुम्हलानी मैं फून कालि के लाया
धनि धनि रे माली के बेटा तैंनें राख्यौ सभा में मानु ऐं
लै डाली म्वा तें चल्यौ आया वाग के वीच ऐ

वार्ता—

लै डाली मालिनि चली रानी के रावर आई
परि डाली धरी उतारि मालिनी मुरि मुरि पैरो लागी

मै तोड़ पूछ, घर की मालिनि आ डाली में कहा लाई
तुमनें रानी बागु लगायो मेवा राम बाग ते लाई ।
खुसी भई देशापति रानी मालिनि क देति इनामु ऐ
परि दखिन का पीर, मुल्तान को आयो मालिनि कू देति महाइ ऐ ।
परि मुहर रूपयो से भरी सबरिया मालिनी बिदा हो आई
परि आ दिन बाग ब्याहिबे आमें तेरी राजो करि आमें
परि साझ भई दिन गयो मु दन क राजा रावलि आयो
लै मेवा आगें धरी आ लाइ लेउ राज कुमार ऐ
परि लाइ लेउ पीसेउ बिलसि लेउ राजा करि लेउ जिम की सार ऐ
करद तिवारी फौलाद की फल पै धरतु जमाइ ऐ
राजा ने तौ करद जमाई रानी नें पकर्यौ हाथु ऐ
परि क्वारे बाग की मेवा न खायें ब्याहु करैं जब खामें
होते मे खायौ नाइ राजा पहुरयौ नाइ जुरहालु ऐ
मरघट दिसें बोलता धूम उतारयौ आइ ऐ
माया दीनी धूम कू ना बिसरै ना जाइ ऐ।
अरे राजा सरग हमारौ लौपना ज्या तौ आबा पार ऐ
पीसें बग़ा दाइ लौ दियौ मुखीका आइ ऐ
कल्सि करै सो अब्ब करि राजा काल्हि करै सो हाल
अरे तू कल्सि तौ ऐसी आवै दौर्रा की है बाइ कालु ऐ
बोलौ बाबर के पीर की मदद ।
रातिं जमाई जोरै चिरागी
जनम सुनें ब्याकी करि कै काम
रिद्धि सिद्धि देता बड़ुनेरी कभी न आमैं जिसकें हानि
गोर्धन के माली में बामौ गुरका जनम हुआ परमान
हीरालाल बनिया ने बामौ सुखले राजा निज कर राम
अपनो ई बोला है मरे सजवाइ लै
माक देस के हीरा हो उम्मर की हाथी सजवाइ
रानी को डोला सजवाइ, बाते बाइस लागै रे कहार
पायें ते बाकी बाती क बाइ
दगरे दमरे जाकी फौज हंकियी जाकी लसकर मूमनु जाय
अरे बागन में राजा पहुच्यौ बाइ
वावन में पै पै [illegible]
रज में ० । [illegible]
बाकी करि गई
[illegible]

राजा नें भट्टी दई खुदवाइ
जानें खाड दई गरवाइ
जानें नेगी लिए बुलवाइ
हरी हरी गिलम बिछी दरियाई, मुरब्बन जू ठसकत पाय
सोभा पातुरि राजा नें बुलवाई, ठनवायौ बागन में नाचु
छोटे छोटे छोरा नाचें ब्रजवासीन के चुटकीन में उडाइ रहे तान ऐ
डोला में ते रानी बोली करि लीजौ बाग कौ व्याहु ऐ
काए काए में राजा मेरौ सीग रे मढावै
काए में खुरी मढवावै
सोने में राजा मेरौ सीग रे मढावै
रूपे में खुरी रे मढावै
अगिनि कुड राजा नें खुदवायौ हुतिबे कू नागर पान ऐ
हुती ऐ लोग समद चदन की और नागर पान ऐ
सुर गायन के घीअ मगाये राजा ज्योई देंतु ऐ ढरकाइ ऐ
एक झर तौ पाताल जायगी वासुकि देवता मगन है जाय
धनि धनि रे देवराय से राजा तैरें होइ बेटन औतार ऐ
एक झर तौ आगासै जाइगी इदुर देवता मगन है जाइ ऐ
बेटीन की तौ कहा चली राजा लाल तौ रोजु ई हुगे
अरे राजा काए काए की तौ भामरि लेगौ
काए की परिकम्मा देगौ
गोला ते भामरि लेगौ तुलसी की परिकम्मा देगौ
परि बागु व्याहु ठाडौ भयौ राजा विरपन कू देंतु इनामु ऐं
परि विरपन कू तौ गैया दीनी, भाटन कडे पहिराये
डोमन कू तौ चोरा दीनें मीरासीन गाम इनाम ऐं
इक तखता में बिरामन जैमैं दूजे में भैया वन्द ऐं
इक तखता में अभ्यागत जैमें चौथे में और भिकरौंडि ऐ
परि सबकू पाति जुगत तै परसौ मति करौ पाति में दुभाति ऐ
एकु एकु रुपया एकु एकु लडुआ विरफन कू देंतु गहाइ ऐ
हुकमु करै तौ गौरै गगा भमानी करि जाऊ बाग की सैर ऐ
एकु विरामनु ब्यो उठि बोल्यौ मति जइयौ बाग की सैल ऐ
चारि घरी तौपै मूल कौ निछुत्तर मति जइयौ बाग की सैल ऐ
तुम तौ राजा नित नित आओ कब जावै राजकुमारि ऐ
अस्त्री पुरुख कौ सगु मिल्यौ ऐ जुरि मिलि कें करि लेंइ सैल ऐ
कौन के हाथ रे गडुअरा सोहै कौन के कुस की डार ऐ
रानी के हाथ गडुअरा सोहे राजा के कुस की डार ऐ
परि दिवराइ राजा हेरू हाकैगौ झोरी बाघति राजकुमारि ऐ
परि मुहरन कै तौ कूड लगावै मोतीन के जइया चारि ऐ

बोलौ वागर के बीर की मदद ।
वाछलि को पूत वाजन कू भूत, परचै की खातरि धाया ई ऐ
अजी हिन्दू मुसलमान दोनो दीन धामें, वादशाह नही आया ई ऐ ।
गुसा भया वागर कोई राना, जब घोडा सजवाया ई ऐ
घोडा मारि गयौ डिल्ली कू वास्याइ जाइ जगाया ई ऐ
अजी लाल पलक पै सोवै वास्याइ पलके ते औंधा मारा ई ऐ
अजी दौरी आई वास्याई तेरी अम्मा कौनें मरद सताया ई ऐ
पाच मोर और एक नारियल पीरजी कौ पजौ उठाया ई ऐ
जव मेरौ मालिकु महरि करै, सवु कुनवा जारति आया ई ऐ
महलन में राजा देवराय निरपु दुख्याइ
भली सी रानी किसिमिति में ई फलु नाइ
जोगी जती सेऐ मैंने इन पै मैंने डार्‌यौ सुवाल
रानी और सकलपी गाय, रानी किसिमित में तो फलु नांइ
अरे भली सी रानी०
रानी माल परगनो वहुत ऐ बैठी भूजौ राजु
राजा माइ विना कैसौ माइकौ, पिय विन कैसौ सिंगार
घन विनु नाइ घनेसुरी राजा ऋतु विन नाइ मल्हार
महलन में रानी क्यो रही ए समझाय ।
अरे सग सहेली बोलि कै करि आमें गाइ वजाइ
पिया पनारे पौरि जू धनि ठाडो पकरि किवार ऐ ।
अरे बाह छुडाऐ जातु ऐ निवल जानि के मोय ऐ
परि हिरदे में ते जाइगौ राजा मरद वदूगी तोय ऐ
जो तेरी मनसा जोग पै काए कू कीयौ व्याहु ऐ
परि नौ सै घोडी ले चढ्‌यो बावुल जी की पौरि ऐ
वनजारे की आगि ज्यो गयी सिलगती छोडि
अरे मेरे राजा जौ तेरी मनसा जोग पै तपौ हमारे द्वार ऐ
मढ़ी छवाइ दऊ काच की मढवाइ दऊ हीरा लाल ऐ
परि गगा मगाऊ हरद्वार की नित उठि करौ असनान ऐ
भूखे तो भोजन करू हारे दावू पाइ ऐ
ज्यों जोगु वनै रानी क्यो वनिवे कौ नाइ ऐ
परि ऐसे जोग ना वनें रहे भोग का भोग ऐ
अरे राजा साधू जन थमते भले जौ मति के पूरे होइ
अरे राजा वदा पानी निरमला जो जल गहरा होइ
साधू जन थमते भले मति के पूरे होइ
अरी रानी वदा पानी गादला वहता निरमल होइ
साधू जन रमते भले जाते दागु न लागै कोइ
अरे राजा गलखासा जामा वोरि कै किया भगम्मर भेस ऐ

अरे खाना किया भसम्मर बाना अरे रानी गावन में मेरू गुरवाव
अरे अपनी चादरि संपदाई जानें बिट्टी चादरि ओरी।
रानी माला हात नहीं ऐ
तुलसी की माला हात बिराजे गोरख कूं रही मनाइ ऐ
अबी औजू बलमा दीसते बन ठाडी पकरि किवार ऐ
अब बलमा दीसे नई पे उलटी खाति पछारि ऐ
अरे चौपरिया के गीबरा तोड़ डाक कटवाइ ऐ
परि तोतर बलमा पीबते में मिसरी सौ सौ बार ऐ
राजा की खीकी मुलसें बात पै पिंबरा में गगारामु ऐ
राजा ने मंगवा बनवा बैठक छोडी मीर बेना फुलवारि ऐ
समझावें नगर के लोग मात मेगी काए कू रोबै
ओरे से जीवन के कार्जे क्यों नैनन कू खोबै
अरे टाप बे बरती ते मारें
ईं बे मूढ़ में सु कि पौरि प हाथी चिंघारें
अरी मात तोड़ बखर चोट लायी
तेरो राजा जोगी भयौ करी आनै बनोबास त्यारी
आर्ये आर्ये बिनराय राजा पीछें राजकुमारि ऐ
एक बन नाख्यो दोसरो तीजे बन है गई साम्झ ऐ
फिरि पाछे कू देखतु ऐ राजा कि आमति राजकुमारि ऐ
गाम गैल दीसति नाइ राजा कहा करें गुजरान ऐ
गाम गैल दीसत नाइ रानी कहीं करे गुजरान ऐ
पात बिछाओ बनफल खाओ रानी पावन मे गुजरान ऐ
कहा रहे तौरि सिंहासिया कहा रहे राते पलंग
कहा रहे राजा मूढ़ा बैठना कहा रही राजकुमारि ऐ
घर रहे तौरि सिंहासिया रानी घर रहे राने पलंग ऐ
घर रहे मूढ़ा बैठने रानी घर रही राजकुमारि ऐ
हां लकड़ी कड़ी जौरि कें राजा मेरे बैठी आग बराइ ऐ
अरी सोइ जा राजकुमारि अरे तेरी पहरी दूंगौ
अजी मैं ना सोऊं महाराज परयारी तिहारो नाइ
जब सोऊंगी महाराज दुपट्टा के छोर ती गहाइ दै
हाथ की प करिया मेरे मुढ़े में लगाइ दै
छोड़ू ऐ सिरहाने लगाईं
सोइ गई राजकुमारि बिपति की मारी
जि नाए क पैस चली ऐ
जाके पांच चारि नाटे लाये
मेरे राजाजी की हमु डय्यी ऐ

जे सहर दलेले में श्रायौ
खासे के घोडा जाके फाके में वधे ऐं
मकुना हाथी जाकौ ज्योंई घूमतु ऐं
नगर की प्रजा जाकी रोवै, ऐसौ राजा फेरि न मिलैगौ
श्रजी कौन के हाथी कौन के घोडा श्रपनी जानि मरदौ फाके में परी ऐ
श्ररे भोर भयौ ऐ परभात, रानी वाछिल जागै
वोलो वागर के पीर की मदद ।

६ देवी सोइ गई भमन में नौरग पलग नवाई
श्ररी नौरग पलग नवाइ
श्राइत पाडत गेंदुवा टाडौ वालम ढोरैं व्यारि ऐ
धृर उडी व्रजराज की श्रजी जिन गलियन की घूरि ऐ
श्रजी जिन गलियन की घूरि श्रग लागी लिपिटि नही
जम भाजे जात ऐं दूर ऐ ।

वार्ता--

श्ररे चलि मेरे वेटा डिगरि चन्नौ हृतिनापुर मनुश्रा ढारया
कैतौ रे गुरू गगाजी न्हवाइ दे नातौ छोडयौ जोगु ऐ
तो पै तैं गुरू जाउ न्हाइ लेंउ गोरख सी गगा
श्ररे मैं मिलूं कुटम में जाइ वाजरी वैं लु गी वगा
तम्मू मेख उखारि मेसे चेला कसना लियौ वनाइ ऐ
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ ऐं श्रासन माडयौ
श्रासन माडि भगम्मर तान्यो वावा वैठ्यौ जल थल पूरि ऐ
श्रजमति के गुर तम्मू तनाऐ श्रनहद के वाजे नाद ऐ
विन खूटी विन डोरि मेरे वावा श्रधर भगम्मर तान्या
परि सोमत जागे पाचौ पडा छठी कमता माइ ऐ
श्ररी ए कैरी टिडोरी[1] कै वजारौ कै कौरो दल श्राये
कै सिपाई कै रगीलौ कै जरजोधन श्रायौ
श्ररे वेटा ना सिपाई ना रगीलौ ना जरजोधन श्रायौ
परि न टिड्डौरी ना वनजारौ ना कौरो दल श्राये
परि कजरी वन का गोरख जोगी[2] परभी न्हाइवे श्रायौ
श्ररी माता जा जोगी से वादु करूगौ मेरी भुमि नाद वजायौ
भाई जोगी जती से वादु न करना रहना दोऊ कर जोरै
परि घुटी दवाई मुडिया जोगी जे तो श्रपरपार ऐ
जोगी जती से वाद न करना रहना दोउ कर जोरै
सेर चून दे पाइ पूजना जे जोगिन का वादु ऐ

---

१ टिडोरी से श्रभिप्राय टिड्डी दल से प्रतीत होता है ।
२ गोरख नाथ को कजली वन का जोगी बताया गया है ।

७ अमर मुसक्का मन में ऐसी अब भभूति सभी मलबसी
नामर पाम चबाइ रही मीरा सुवड नाम रखमारे मैंना
जाके छोटी छोटी बावरी जाके कवा छोरी फावरी
पाइ पवम मचके मामा जाके गुही परी बैजती माला
पाइ पवम्म मलके भारी सदा नाथ की आज्ञाकारी
जापे मखमल की पूवरी मरे सौमें ज की मूवरी
सो हीरा लाल लगे मग लावे मा गुवरी में
सो कामरि मोखी स्याम कारी जि परमी बूमनु जातु ऐ
मरे मैं पतुर मौबरिया[1] चस्यौ
गामु गंयर पूछत फिरयौ
गंगा नगरी कितमें गयौ
मरे राजम को ड्यौढ़ी पै गयौ
राजम कें परवम की रीति
तुम मति बूसौ महल के बीच
जब जाइ सुरति जोग की भाई
हमक परदा कैसो रे भाई
सतनाम मैं मसक जगायौ
भिच्छाचारी चाइ कहू न पायौ
तुही तुही करि बोल्यौ बानी
बोकि परी कौंता पटरानी
मोती मूगा मूकता लाल
मरि लाई सौने के थार
भरि लाई सौने की थारी जे भाइ मई डयौढ़ीन पै ठाढ़ी
मैम धरम कू कौंता डरो रे परिकम्मा पाइनु परी
सो भूखे मी तौ भोजन लें लेउ प्यासे मी तौ पानी पी लेउ
ए बाबा जी एहि बाहकी मामना[2] तिहारी
सो दै जा बोलेपुर मोइ आसिका
मरी माता काकर पाथर क्या दिखलावै

---

१ मौबरिया—मौबड नाम
२ मामना—मत ।
३ आसिका—(आसिसा (पा)—आशीस आशीर्वाद ।

मोइ परभी को वखतु वतावै
एसा बात माइ ना सूझै परभी जाइ पडवनु वूझै
अरी कहा खेलें तेरे पाचौ वीर अरजुन, भीमा सहदेव भीम
सौ गचकीली कौ वन्यौ ऐ चौंतरा ए वावाजी
सो गचकीली कौ वन्यौ ऐ चौंतरा ए वावाजी
देखि सीतल पेड्, री मल्हारी
म्वा खेलें पाचौ पडवा
मातु कमता भेदु वतायौ, जव औघड पडन ढिग आयौ
भीमसैन भीयौ कीनौ, अव सहदेव नें दानु दीयौ
गाडि कचैरी पाड नादु फूकि दीयौ
अरे राजा वैठे न्यावु चुकावें, इदरु वैठे जलु वरसावै
वैठे जगल चरती हिरनी ।
हम जोगी कू वैठें ना वनें, नवै कठ पदमिनी फिरतो, सिध गोरख जागै
अरे वेटा उडता तीतुर उडता वाज, उडती जग हिवाई
हम जोगी से उडता ना वनै पाचौ जनो से टक्कर खाई, सिध गोरख जाग
अरे हम भी मरसी[४] तुम भी मरसी, मरसी कोट अठासी
वेद पढते विरमा मरिगए, जे परी काल की फासी, सिध गोरख जागै
अरे काकौ गुरू तू काकौ चेला, कहा तो तिहारौ नामु ऐ
अरे चेला गोरखनाथ कौ औघडिया मेरौ नामु ऐ
अरे वेटा कजरी वन मेरौ स्थान, गुरू हमारे विद्यामान
हम आए तेरी परभी न्हान
तेरी कवै परैगी परभी पडा वेद की वताइ
अरे परभी पूजै सेठ साहूकार दुनिया और राजा
भैनि भानजी न्योति जिमावै, जोरा औरू तीहरि पहरावै
जे करै गऊन के दान सौने में सीग मढावै
सो सिर पै टोपी, गाडि लगोटी, वृक्षन आए ए वावाजी
तुम दान तौ करौगे परमाधारी
सौ कहा गगा में तुम जौ ववौ
गरव की वोली जी मति मारौ पडवा, वचन करौगे यादि ऐ
जा वोली कौ म्यानो दुंगो वेटा, असलि गुरू कौ चेला
परि छिमा खाइ औघरिया चाल्यौ आयौ गुरून के पास ऐ
जै लै वावा झोरी पत्तुर नाइ सधै तेरौ जोगु ऐ
परि जोग नाइ जोहर भयौ वावा विन खाडे सगरामु ऐ
वेटा के पडन्नें मार्यौ, छेड्यौ के पडनु दई गारी

---

४ 'मरसी' शब्द का रूप राजस्थानी मारवाडी प्रतीत होता है ।

अरे बाबा मा पंडनु ने मार्‌यौ सोड यौ मा पडनु बड़ भारी
अरे सबद की मार दई पंडनें सीमा करेजा काढि ऐ
बोलो बागर के पीर की मदद

८. मैं बड़ै स्याम सरनि जमुना की तेरे चरन सिर नाग्या ध्यान
अब जोगी बड़ी सती सन्यासी मगन होत धरि तेरा ध्यान
चारयौ पहर भजनो में रहते प्रात होत गंगा अस्नान
तीनि लोक ते न्यारी मथुरा बेवन माई ऐ
चौबीस घाट को कहा कहूँ महिमा बिच बिसरौति बनाई ऐ
उज्जलि कल चौबे गुजराती अपनी देह पुजाई ए
मुरेसुर कृतबास सहर में केसवदेव ठकुराई ऐ
अलख निरजन तेरी बस गामैं
मथुरा जी की पदम सटन में बहु बसी जमुना माई ऐ
अरे बेटा कै पदम कै भखिनि समाइ रुक कै कोडी करि डारौं
अगिन न देना कोडी न करना बड़ा लगै अपराधु ऐ
बडी जामै मगा माई की इरिलै गंगा माइ ऐ
अरे सबरे बेसा परजी करी लै चौपी झोली में धरी
बृन पडवन के मारी माग मंगायी हुरी
अरे बेटा सब तीरथ हरि लाओ माग पदम के मारी जी
मैं पतूर मौचरिया चल्यौ माम नगर पुजानु फिरयौ
बडा बसरी फिरमें मयौ भयौ पाम पहारि बूढा पीपरी
बाबाजी म्या गंगा की मारगु बल्यौ
बाकी नजरि परी बाराजी करके पै डाडी मयौ
अरे हाथ जौरि यमा खड़ी
बामते बीमचाल महरि माथ ने करी
असलि गूरु के चेला हरिलै मोह पतूर सीच
अरी हटि हटि गंगा बावरी हाथ मेरे कावरी
जिया जन्तु बन तोमें न्याइ, कोडी न्हाइ कलंकी न्हाइ
हत्यारी न्हाइ मत्यारी न्हाइ, अब नाउम न्हाइ नगिया न्हाइ
अरे मेरे हुकम गुरुन की नाइ, नमाबी तोमें कोई न पाइ
अरी कि माता तेरो बस पारायन नाइ हम तेरे बस में कलकल न्हाइ
जोमी मिले लोक से छूटी धार, सिवसकर में भोठयौ मार
श्रीकृष्ण के चरन रही मैं महादेव के सीस रही
मोह करि सेवा मागीरथु माये
अरे के बाबा चौरे में लाइ डारी मंच लोक भाइ डारी
दुनियाँ न्हाति मौम पाप की भरी

अरे ज्या पत्तुर में कवऊ न आऊ वावा घर घर मागी भीक ऐ
झोरी हमारी कामधेनु, ससार हमारी वारी
अरे जल की छोइया करैं जुवाव, सुनि री गगा मेरी वात ।
वथा लगायौ जोगी ते वादु, तुम ऐसी लहरि वहौ पटरानी
जोगी और जोगी को तौमरा, काऊ लोक कू वहि जाइ
वैठि मगरु खार के वीच, जाइ काकरी सौ खाइ
अरी माता आइजा पत्तुर, है जा पवित्तुर, गुरू करैं निस्तारा
वावा नें पहला पत्तुर वोरा दरयाइ में पहला समद समाना
दूजा पत्तुर वोरा दरयाइ में दूजा समद समाना
तीजा पत्तुर वोरा दरयाइ में तीजा समद समाना
चौथा पत्तुर वोरा दरयाय में चौथा समद समाना
पाचा पत्तुर वोरा दरयाय में पाचा समद समाना
छठवा पत्तुर वोरा दरयाय में छठवा समद समाना
सतवा पत्तुर वोरा दरयाय में सतवा समद समाना
सातौ समद आठई गगा नौसै नदी नवाडा
ताल पोखरा सवुई समाइ गए पत्तुर भरि ऐ नाइ ऐं हा हा ।

६ मूगानाथ गामें, गुरू गोरख उस्ताद कू मनावें
सुन्दरनाथ अर्थामें छवि महरी की न्यारी ऐ
चोआ चदन और अरगजा आमे महक भारो ऐ
भीतर परसि के आए पीर, भीतर ऊते आए
छवि डूगरऊ की न्यारी ऐं
डूगर की छवि न्यारी, डोरी नाथ ने उतारी
डोरी तौ उतारी जाकी सोभा वरनी न्यारी ऐ
ऐरापति हाती सजवाए, लख चौरासी घट लगाऐ
नकुल कुमर हौदा वैठारे ।
गुनु झाऊन में उडति दिखी रेती
चलौ रे वेटा परभी सौंमोती परी
गैयन के से छूटे झुड रीते पाए राधाकुड
ददवल कुड, सकल वल तीरथ गगा में जलु नाऐं
हम परभी काए में न्हामें ।
वारू रेत के जमि रहे खासे
लैकैं वेद सहदेव वाचैं
माइ कमता पूछौ एक पोथी वा पै धरी
माता वाचि रही असलोक, कै गगाजी भई अलोप
कै सिवसकर सग गई
मोइ व्वाई कौ मरमु समानो, गगाजी मेरी व्वाई नें हरी
अरी माता सवरी पौहमि पै ढूढि ढूढि मारू मेरी गगा कहा लै जायगौ

अरे गंगा में जसू नाएँ मेरे बेटा समद करौ असनान एँ
गंगा ते चल समद पै आए समंदुर में जसू हतु माएँ
समंदर में जस नाएँ मेरे बेटा कूआ करौ असनान एँ
समंद चले गोला पै आए गोला में जसू न पायौ
अरी गोला में जसू नाएँ मेरी माता कहाँ करें असनान एँ
गोला में जसू नाएँ मेरे बटा महल करौ असनान एँ
गोला चले महल में आए महलन् में जसू नाएँ
नक टिकी मेरे जसू न बेटा ठाकुर पूजा जाऊं
चली चली मंदिर में आई, जल की झरिया पाई।
परि मन चंगा कठौटी में गंगा परसी लई ऐ साधि ऐ,
राजाबाबू उ बरी कू वोर्ई बहुतेरे स्वन लोटें।
अरे बेटा के बारी के बैंगन तोरे कै पनबारी के पान एँ
कै तौ प्यासी गाय हटाई कै नीने बामन ललकारे
कै कोई जोगी कै कोई जंगम कै कोई सिद्ध सतायौ
अरी माता ना बारी के बैंगन तोरे ना पनबारी के पान एँ
ना तौ प्यासी गाय हटाई ना बामन ललकारे
ना कोई जोगी न कोई जंगम ना कोई सिद्ध सतायौ
परि भूरंगा सौ एक जोगना परसी कूसन आयौ
परि परसी लाई बताई मेरी माता क्योंई दियौ बहकाय एँ
परि जानि लई पहिचानि गई वे आइ गए गोरखनाथ एँ
ब्याकौ रे मौचरिया चेला हरि लै गयौ नया माइ ऐ
गया हूबन निकरे हा कौटी के पाचो हा।
मटकत बिकट उजार है हा।
अजी कथा मना भीम ने करी माइ कमंता छय लई
वे गया हूबन चले कै गजा परवत पै चढ़े
अजी आमत देखे पाचौ पजा पारबती ज्वा वोटे मन
जै पंडव देखि हरी कि बाबा गुफा में बसे
भीम— अरे जोगी अब कहा बातु ऐ बदन दुराई
तू ई आ मेरी गया माई
परबत की करि डारूं छार
मेरी गंगा की हरि लाए कब की ही दामनगीर
कुंती— चरण दुमकाइ जोर में बरी हाथ जोरि पामन तर परी।
शिव— अरे बेटा एक गयाजी आशीरब लै गयी राजा समर की नाती
राजा समर की नाती बेटा दिलीप की राजा
लै गया की ल्याते चाल्यौ दाले में लई ए छकाइ ऐ

---

१ पुराण के अनुसार हो गये हैं।

जब दाने की जाँघ चीरी गगा ने लीयौ परभाइ[२] ऐ

वार्ता—

गोरख— मेरे पास भभूत कौ गोला जल में दु गो डारि ऐ
जल में दु गो डारि पडवा सूखौ लेउ निकारि ऐ
सूखौ लेउ निकारि मेरे बेटा घिसि घिसि अग लगाऊ
सकल बरन ते कपड़ा उतारे कूदि परे जल बीच ऐ
परि पहली डूबक मारी पडवा सौने के जौ लाए
परि दूसरी डूबक मारी पडवा चाँदी के जौ लाए
परि तीसरी डूबक मारें पडवा ताबे के जौ लाए
चौथी डूबक मारे पडवा लोहे के जौ लाए
परि पाचई डूबक मारें पडवा पांडौ माटी लाए

कुती—अर बाबा सैर दलेले की रानी बाछ, रोवति ऐ सवेरे साझ
वुन की कोखि हरी करै बाबा तेरी जब जानू करामाति

बाछ०—अरी मैना तेरे ऐ तीरथ कौ धाम, जोगी जती करें असनान
कोई पूरौ सिद्ध आवै बेलो बागर भेजि रो

गो०—अरी हतिनापुर की रानी, तैंने बात कहीए स्यानी
मेरे हिरदै बीच समानी
तोइ गगा दीनी कौल की, तोइ परी का और की
तुम लबो कूच करौ, क बेलो बागर कू चलौ
बोलोई बागर कौ पीर मदद ।

१० चलि मेरे बेटा चलि मेरे बेटा
डिगरि चलौ औघरिया चेला हा
चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ नगरी कौ लोगु दुख्याना
तम्बू मेख उखारि मेरे चेला कसना लीयौ बनाय
देसु भलो रे पच्छिम की धरती औह मिठ बोला लोगु ऐ
पानी मागे दूधु रे पिलामें देसु भलौ हरिआना ।
घर घर गोरी हासिली मिरगा नैनी नारि
पानी मागै दूध रे पिआमें देसु भलौ हरिआना
देसु भलौ हरिआना बेटा दही दूध कौ खाना
अजी काम जाम हाकि दीए, लबे ऊ कूच कीए
जाते बौलै गोरखनाथ बेटा देस कौन रे

औ०—बाबाजी चलतू अगारी, बागर छोडि दई पिछारी
सैर कामरू घना
आसनु करौ बनाइ, तम्बू नाथकौ तना
हाती पीलमा लाए, तम्बू ठाडे करवाए

---

२ प्रवाह का रूप 'परमाइ' हुआ है

खपि गई तम्बून की कनात जुरि गई जोगीन की जमाति।
जिममें आसनु करयो जमाइ, कि तम्बू गौरि पै तनी।
आयो भूमरिया चेला दीयो जोगिन के डेरा
जोगिन आदर भाव कीयो वानें मूढ़ा डारि दीयो।
वानें पढ़ि पढ़ि सरसो मारी नाथ की जकनि गुम्म करि डारो
वानें बकरा भक्ष बनायो हाकि पूरे पै दीयो
आयो काली का चेला दीयो जीमरि के डेरा
जीमरि आदर भाव कीयो वानें मूढ़ा डारि दीयो।
वानें पढ़ि पढ़ि सरसो मारी नाथ की जकनि गुम्म करि डारो
वानें बकरा करि बिरमायो वाकि लूटा दे दीयो।
घेटा बस्ती बड़ी लम्बी परकोटा सबु बस्ती को एकु लपेटा
तुम खोजो कुड़ी पटको सोटा
तुम भाव भुमति लै आयो चेला देखि चाउ रे
कामरू की नारी भयी विद्यामान भारी
खोरि बरिआत छोड़ी कालिका मसानी
मेंढ़ा और बकरा कीए जोगीन के बालका
गोरखनाथ गए तेली के मूढ़ा बेमु बनायो हाकि पाटि में दीयो
भयी दम्मक दम्मा बाजी पेलै तेलिनि हानु सबेरी फेरै
चुली चोकसे बेनई बाढ़ भयी पीमा में मूं हु मारें, प्याव दैमिमिया करै
हापु छोरी में डार्यो चेला सोमनाथु काढ़यो
कर जोरि भयो ठाढ़ो
मे हुकमु नाथ पाऊं गढ़ कामरू चेताऊं
गुरू ने पत्नी धरि दीयो मीरु सोखि सबु लीयो
दुनिया प्यास तौ मरी
जब जोहरि भरि लई सीस मारि पानी कू चली
नैनी मृगनैनी ओढ़ें प्रेम पीताम्बर सारी
आमी पाव न सम्हारी
चालि मयूर सी चली
जोहरि भरी उतारि नजरि नाथ की परी
गोरखनाथ बाटी विद्यामान गूं भे भारी
इननें विद्या परकासी विद्या बांधि सबु लई
जब भगई करि कें नारि हाकि भील में दई
कामरू देस की सबरी महरिया सबु गधई करि डारी
परि महलो एकुली पान चबाती भुड़ चूखि करि डारी
एक बाट में करी लुमाई रोहीम की पैंड़ी देखे
दीनी बागर के पीर की मदद

वार्ता--

११ चलि मेरे वेटा डिगरि चलो हरिश्राने कू करो कूचु ऐ
उखरी तम्मू श्रौर कनात, चलि दई जोगोन की जमात
जाते वोले गोरखनाथ
वेटा हरिश्राने कू चलो
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ पै श्रासन माड्यौ
श्रासनु माँडि भगम्मरू तान्यौ वैठ्यौ जलु थलु पूरि ऐ
हरिश्राने की सीम में वावा नें वजाइ दयौ नाउ ऐ
हरिश्राने को रानी वोली, जे श्राइ गए भोलानाथ ऐ
श्ररे जा मेरे वेटा डिगरि चलो दूध के भोजन लाइदै
श्रन्न के भोजन ना मैं जेऊ वेटा दूध के भोजन लाइदै
श्रजी लै पत्तुर श्रौघरिया चल्यौ
श्रोघड करी नाद में घोर, जव चौंकें जगल के मोर
हाजुर ऐ सौ भेजि माता
वावा दूधाहारी ऐ
श्रन्न के भोजन नाइ लेइ माता वावा दूधाधारी
कै तो माता दूध री पिलाइ दै ना तौ श्रोटि सरापु ऐ
नाद में नाऐं, गोद में नाऐं दूध कहा ते लाऊ
पार के नाऐं परौसी कै नाऐं दूध कहाँ ते लाऊ
गाम में नाँऐं परगने में नाए मैं दूध कहा ते लाऊ
श्ररी कै तौ माता दूध री पिलाइद ना तौ श्रोटि सरापु ऐ
श्ररे न्हाइ घोइ कुमरि चौकी भई ठाडी, सुरति करताते लगाइ लई
वावाजी मेरे ख्याल परया ऐ
वेटा जसरत के उदई के नाती, मेरी तुमई ते डोरि लगी ऐ
जाकी छूटी कुचा ते धार धार पत्तुर में श्राइ गई
जानें पत्तुर भरयौ ऐ झकोरि दुश्रा मेरे गुरू की श्राइ गई
श्ररे क्या तुम देऊ भोलानाथ कहा मेरें हतु नाऐं
श्रजी जे तुमनें माग्यौ नाथ दूध मेरें हतु नाऐं
श्ररी माता नौ कोठी मारवाड में
छप्पन कोट हरिश्रानो
वारह पालि मेवाति ऐ
श्रन्न चाल परि जाय
पानी के जवाल परि जाइ
परि दूध घनेरा होइगा
वोलौ वागर ई पीर की मदद ।

१२ किए कूच पै कूच सग सबु चेला लै लीये
राजा उम्मर के वाग नाथ ने डेरा दै दीये

सूखे बाग में मति रहे बाबा काऊ हरियल में बसि रहना
सूखो से ठी हरयौ है जाइगौ भाज बाग गुजरात ऐ
भगरी ते फूरी बटोरिसा बेटा जामें दे दे प्रानि ऐ
चूनी दई भूमा भुमडानी मौर रही बनराय ऐ
परि हरी डारि पै हरियल बोल्यौ मुनिया लाल सिधारे
परि लालामी चौपरिया मारयौ फिर्यौ छोडियौ केला
मरे बाबा पमगली बोलि गलमला बोल्यौ
स्यापु सिघारयौ कमजुप की बिसैमा बोली
मू तौ कूकनु भायौ
परि सुपरभात करल को ऐ पहरी नगर तमासे भायौ
परि बनि बनि रे कहि गोरख जोगी हरयौ कियौ तैंने बागु ऐ
मरे बेटा भूक प्यास की कोई नाइ बूझै बड़ीवन के डेर ऐं
मरे प्यास लग्यौ मोबड़िया चेला चुटक पानी प्याइ दै
परि बाबा बौरे बाग में मोसा हो तौ बागु भूमि भौ बातौ
मरे बेटा या राजा में बागु सबायौ पहलें सुखायौ होगौ कूमा।
पीर की मदद

१४ मरे मैं लई तौमा मोरि
माबु मोसा पै भायौ
कूमा पै जौ पाए चौकीदार मरे तौ बसु जहर बतायौ
जब मत पीवे नाथ मरे पीमत मरि जाइगौ
राजा में रखवारी बैठारे
मारें बहुसति के मारे
मैने भी कूढ़ तीनो लोक बहर मोइ बहु नाइ पायौ
मैं भाइ मयौ वामर वैस बहर कूमा में पाइबगौ
चेला के जी मन में पाप नाथ की टोपी मू भौ
लमोटी मू गौ
बाबाजी को चकमक बटुमा मू गो
पाइ खड़ाऊ हाथीदांत की बजती मासा मू मौं
बाबा की सोहरी सुमिरिनी हात की ऐ सौ मूगौ
मुबेरी सोटा सैं मूगौ
बाकी कोतल घोड़ा मूगौ
सबरी सज असबाब नाथ क ठोकि लकड़िया हूगौ
इतनो पापु बिचारि नाथ में तौमा फास्यौ
तौमा डोयो ऋषि नाथ ऐ बसु नाइ पायौ
देखे बावरी ताल नाथ सहमरि कै रोयौ
राजा की नाइ दोमु डीस अपने करमन को
जो दुख लिखो ऐ लिलार नाथ सोई भुगत्यौ चहिये

मन में बडौ घबडानो
अरे आयौ गुरू जी कौ नामु गोला तौ मु हडे जू उमग्यौ
पानी पाछे झमारियौ, मरूए ते लाग्यौ
अरे डोडा चलि बाज्यौ फुलवारी में लाग्यौ
अरे तौमा भर्‌यौ ऐ झकोरि नाथ के आसन आइ गयौ
अजी तौमा धरयौ ऐ अगार सरकि पीछें भयौ ठाडौ
वर्राकिगे भोलानाथ चेला तौ मेरौ कहा गयौ ऐ
बाबाजी मैं पाछै ठाडौ
अरे बेटा नेंक आगें आइजा, कुल्ला करवाइजा
अरे नेंक थोरौ सौ पीलै पानी
पानी के बदा जौरें न जाइगौ
बाबा सुनि आयौ में पानी कौ बतायौ
जहरु ऐ पानी, पीएँ ते है जाउगे नाथ गुरमानी
अरे बाबाजी पीवैं तौ पीलै नाथ अरे नँई लुढकाइदै
अरे नई उल्ले तैं पल्ले ऐ प्याइ दै
अजी आकनाथ ढाकनाथ पत्थरनाथ
नई सबु चेलनें प्याइदें
पानी के जौरें न जागौ

वार्ता—

रगी चगी बौ भौनारी, खोटी भौंह मुलम्मे डारी ।
घिसि घिसि एडी धोवै नारि, उनके गोरख द्वार न जाइ
वाती खैंचि चूल्हि में देई हौलें हौलें मेरी चन्दो मगरे लेइ
क्षगा बिछावै सोवै नारि, पार परोसिन जौरें न जाइ
हीसतई ब्वाइ छोडौ कठ, सोमत ई ब्वाके देखौ दत
रोमति पीसै, सिनकित पवै, सदा दिलद्दर उनकें रहै
तिल भौरी माथे मसौ
और कनफुटी लीक, भाजनो होइ तौ भाजि कता नइ बेगि मगावै भीक ।
अरे वनि ठन औघडनाथ बस्ती में आइगयौ
मागत जी मागत नाथ पल्ली होर कू निकरि गयौ
नाऊन के माउ
जाते कोई माई मुखना बोलै, औघड गलियन में डोलै
कुअटा पै चवैया, गलियन में गैरा
एक सखी ज्यो कहै राज की ऐ बेटा
जाके गुरू नें खदायौ जे तौ मागि न जानै भीख
जाके घर में नारि करकसा
जार्के मारी बोली, जाई ते भैना है गयो जोगी

गुजर पार्वती नारि अरे ललनाएँ खिलावै
अरे पलना में झुलावै
अरे तुम कहा भये गोरखनाथ अरे मोइ न बतावै
मैया री मेरी न मानन आयौ भीख मेरे गल में बाँध्यौ
जिन देखि राजकुमार न मेरौ शोभा रीतौ
जा नगर कौ पापी राजा रैयति लँगड़ी काढ़ि ऐ
राजा में सब परजा डाड़ी काऊ में मानति नाएँ
अरी मोइ भीख न डारै
भली रे नगर, परमातमा राजा बाबाजी तुम पधारे जोगी
ऊँची पौरी बंक दुआरी एक घंटा झूमै द्वार
रानी बाछिल नगर सुहाई जब रैयति घर पावै
कुनबे ते सी आवै रे बाबा जब रैयति घर पावै
गोई म्वोई महल बताइदे ठकुरानी नाथ निवाजै तोइ
नाथ निवाजें सबु दुख भाजें
जो तुम करौ सोई तुमें छाजें
रानी बाछिल की पौरि पै जोगिन कौ बाज्यौ नादु ऐ
पीर की मदद ।

१४ पीर उतारि धरयौ री रानी नें सिर ते सोटा डारयौ
एक हाथ ते सोटा डारै दूध तै भीजै पीठि ऐं
सुमिरै री रुकमा पै बादी बाबा कें डारि जा भीख ऐ
भीख सौ तो भीख दैमा नाही डाइन में बिरमाइलै
चार मरे री गजमानिक मोती चार बाभी भरी भिच्छा लावै
लेतु ऐ तौ तू लै गजमारे मारू अकेला मारि ऐ
परि बाँदी ते बादी कही तब मन में है गई आगि ऐ
पकरि पाम चौखटि ते मारू डाढ़ दाढ़ जाइ टूटि एँ ।
डाढ़ दाढ़ि जाइ टूटि गजमारे करि करि हलुआ खाइ ऐ
परि बादी मारी है गई सतगुर की जीवन नाएँ
परि पावें जा मैया पावें जा तेरे लड़ हाथ की भीख ऐ
परि पावें सदै नुस्राइ जावतें स्वामी दई बिचार ऐ
पहलौ सोटा ऐसौ मारयौ गयौ हाथ ते चार ऐ
दूजौ सोटा ऐसौ मारयौ भयौ सुरैनु कौ ढेर ऐ
तीजौ सोटा ऐसौ मारयौ डारयौ कनफटी फोरि ऐ
डारि फोरिया खिखिरि गया जब बस नरि बस नरि होइ ऐ
परि आपनु रानी महलन सजीबी बोसीन पै पिटवावै
ये बाबा ते घर घर डोलें ये काऊ ना मारें
तुम बाबा ते कुरबान बोली बाबा में दया लगाई
परि चाल जड़ाऊ तेरी सुख भरिवाइ दऊँ बाबाजी ऐ लाइ दै चौकि ऐ

अरे रानी जहा भेजै म्वा जाऊ मेरी रानी वावा माऊ अव न जाऊगी
परि भकर भकर वाकी आखि वरै सोटन की मार लगावै
अरी महल चढ़ी तोइ बोलै कमता सुनि बावाजी वात ऐ
पीर की मदद ।

१५. पतिभरता के द्वार नाथ नें नादु वजाइ दयौ
थार भरे गजमानिक मोती रानी भिच्छा लावै
लीजौ रे परदेसी वावा जोगी आस्या लागी तेरी
तेरे हात की भिच्छा न लुगौ माता वालातन की वाझ ऐ
वादी आई मेरी मारि कें विडारी मोइ का ऐवु लगावै
नाती हमारे पलना में झूलें वावा वेटा गए रे सिकार ऐ
पाच चारि तौ घर आगन खेलें द्वै भैंसिन पै ग्वार ऐं
जो मैया तेरें लालु घनेरे एक फलु माग्यौ देना
तीरथ वरत करावे वहुतेरे तेरा तोइ मिलायें
सुनियो री मेरी पार री परौसिन जा वावा के वोल ऐं
मैं आई वावा पै मागन वावा वेटा मागै
तुम रे गुरू मैंने सेए घनेरे पूरी मेरो काऊनें न पारी
हा जो सेओ जो निगुरौ सेओ सतगुरू भेंट्यौ नाइ ऐ
जाइ नाइ सेवै माता मेरे गुरू ऐ हरयौ री कीयौ तेरी वागु ऐ
नामु सुन्यौ रे जानें हरे रे वाग कौ सीतल भयौ रे सरीरू ऐ
कौन गुरू रे तुम का के चेला कहा तिहारौ नामु ऐ
चेला गोरखनाथ कौ औघडिया मेरौ नामु ऐ
नामु सुन्यौं गोरख जोगी कौ जाकौ सीतल भयौ सरीरू ऐं
हा वावाजी वैठि जा गुरू कह देउ मन की वात ऐ
चारि घरी रे वातन विरमायौ तौजू भोजन है गए त्यार ऐ
आ वाला जी बैठिजा गुरू बैठि कें देंउ जिमाइ ऐ
लै पत्तुर आगे धरयौ जाइ भरि दै राजकुमारि ऐ
दावि भरू तेरौ पत्तुर फुटै वहि में भोजन छीजै
छोटौ पत्तुर मुकसि घनेरी कहौ नाथ क्या कीजै
सैज ई लैन सहन ई दैना सहज करौ ठकुरानी
सहज ई सहज करौ ठकुरानी पत्तुर सव की करै सम्वाई
अरे बावा बारह भैंगी पकमान समाइ गए दस वूरे के माट ऐ
परि सोलह कलस जामें घी के समाइगए पत्तुर भरिऐ नाइ
उझकि उझकि पति भरता देखै भरै न रीतौ होइ ऐ
पत्तुर पूजि छत्तरू पूजि कालकट भाजै दूरि
जा भडार ते आवै सदा भरपूर

अलहदास करते की वानी
क्या करते कू क्या करें

परि जोगी उठियो लहराइ हात लई पावरी
मीसु बचायो नाथ पिंजरा झारि डारयो
परि सिर पै धरि दीयो हातु भमानी करि डारी ऐ
तू अपने घर जाउ तपस्या पूरन भई
मैं सोइ गई भोलानाथ तपस्या नाइ भई
अरी ऐसे भोजन लाउ व्वा दिन लाई री
हुकम देउ तौ जाउ वे हुकमें ना जाइवे को।
अज्ञा मागि भोरी माइ महल पग धारे
पीर की मदद।

१६ सब पीरो में पीर औलिया जाहरपीर दिमाना है
दोनों जोरूआ मारि गिराए कीया राज अमाना ऐ
डिल्ली के आलमसाह बादसाह बिदरगाह बनाई ऐ
हेम सहाय ने कलस चढ़ाए, दुनिया झारत[1] आई ऐ
मकुवा हाती जरद अम्वारी जिही तुमारे काम का
नवल नाथ साची करि गायें वासी विन्दावन धाम का जी
ठगन विरानी आस ठगिनी आमति ऐ
मैंना मिलि लै कठ मिलाइ मौतु दिन विछुडी जी
अरी जोगी का दोसु सरीरू तुजाइ लौ री
गुर गारी मति देइ कोढिन है जाइगी
गुरुन के पूजो पाइ गुरु नौति जिमाइ लै री
गुरु मेरे भोलानाथ भैनि मति कोसै री
कासी सहर ते पडित आए री पुस्तक लै आए री
पुस्तक लाए मेरी भैनि भौतु समझाई री
अजी आजु नगर में तीज मैंना कपडा मोड दे री
जे कपडा ना देउ और लै जइयो री
अरी गुन में दे दे आगि पुराने भैंना मोइ दे री
अरी दुहरे तिहरे थान रेसमी जोरा री
कम्मर के लै जाओ जामें बडे बडे छव्वा री
नैनू की चादरि लैजा जामें जरद किनारी री
मिसरू की चादरि लैजा जामें गोटा लगि रहयौ जी
अरी ऐसे मति बोलै बोल करूगी हत्यारी
वगुदा लै लीओ हात बुरज पै चढ़ि गई री
सुनौ बस्ती के लोग याइ हत्या दै देंउ री
तेरे पिछवारें नदी जाई में वहि जाऊगी री
तेरे अगना में कुइया भडकि मरि जाऊगी री

---

१ ज्यारत।

अरी यै पसैरी बिसु लाउ टका भरि छोड़ देंऊ री
पौनी ते फर्क पेट्ट सरवा में यूयू री
अरे ना कपड़ा देह नाइ भूख ते बोलै री
कनिकी भसकि ममानी चालें वमकि झुमाइ गई री
कपड़ा दिए उतारि जबै मन फूली री
फूली अंगना समाइ कुठीया रानी है गई री
अरे धेरक चामर रांधि माप पै धार्वे री
मोजन अरे ऐं अपार सरकि पीढ़ोई ठाढ़ी री
अरे मोजन भोग लगाइ महुरि करि मोपै री
बाबाजी मोजन भोग लगाइ महुरि करि मोपैरे
अजी बरकिगे मोलानाथ बेटा में मार्ई नाएं रे
अजी मौपक भरि धयो साथि मोह ना भावै रे
जौ माई पिमरौ पिमरौ म्याइ बोसै बोमु न भावै रे
बेटा जो माई हति नाइ हलमुष्टी कहति मार्ई री
बेटा जो माई हति नाइ बेटा भीम बनैरी मार्ई री
अरे बेटा तूही ऐ मार्ई गुई है मार्ई सा बदुमा दरिमाई
अजी बदुमा में डारयौ हातु पात है जो पाए री
अरी संत के तौ लै जाइ फसै मौत फूसै री
अरी मैं सत के लैजाइ होत मरि जाइगी री
अजी डाढ़ी में है दऊ आगि भाप मति कोसैं रे
पीर की मदद ।

१७ अरी मैना जोगी छिपरी जाइ राज तनें धिए री
अरे भरि महुपीमु में मासु भाग पमु चारै री
ठाढ़ी रही जोगी तनक तुम ठाड़े बाबाजी
जाइ जुहाई मैंने जौरि रचाइ लई जोगी जी
गाइ जुहाई मैंने जौरि रंधाई ती मन कीनी मपधी
ए तेरे कार्गे मैंने गूजरी छिमाइ लई तेरे चेलन क टोली
मैंने तौ जानी तवपूक मिस्सी अरे बाबा निकरमी ऐ मसमि करौमु
बाबाजी बिरफल है गई म्याउ जी
ए पति पै लगी मौऊ म्यौरवा
अरे बाबा सपति पै कजई म्याउ जी
अरी ऐसी फावरी मारि बेटा ठमिनी भावै री
ऐमी फावरी मारि बेटा हवमें न भावै री
भुम्मी फावरी मी भाज भैया महुमरि रोवै री
ठाढ़ी रहि बीरा ऐ बाट बटोहिया मेरे मा के जाए होजी
अरे तैमें मजू देसे गोरखनाथ जी
अरी मूली न मेंठे मौरा मम्मी अरी माना भया मूपहि दे मोह

अरे जिन धूनी में भोरी जरि मरीछु अरी मैं फूल पहुँचाऊ बाके गगाजी
वाबाजी पेड जौ वए वमूर के मैं आम कहा ते खाउ ऐ
मैया परि तेरो सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई औरु ऐ
वावाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मा की जाई वहना
मेरी सूरति मेरे कपडा माकी जाई वहना ।
परि महलन मे तौ मोइ ठगि लाई भाग प्याइ गई तोइ ऐ
मैया व्वा ठगिनी ऐ ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमानु ऐ
परि सेवा मारी गई मैया औरु करै फलु पावै
वावाजो अव सेवा कैसें करू जोगी डिगविग डोलै नारि ऐ
परि अव सेवा कैसें करू माता धौरे परि गए वार ऐ
वावाजी अब सेवा कैसें करू वावा हालन लागे दात ऐ
वावा परि मौति वुढापा आपता सवु काऊ कू होइ ऐ
पीर की मदद ।

१८ अरे दाव काटिकरि लीयौ विछौना आसन लेति वनाइ ऐ
अरे खलका छोडिकें गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ऐ
ठाकुर ज्ञानी न्यो उठि वोल्यौ चौं आयौ मारे लोको में
रानी वाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
परि नाद में नाऐ, वेद में नाऐ, फलु नाऐ चारौ जुग में
गोरख चाले ठाकुर चाले जव आए सिवसकर पै
महादेव जोगी न्यो उठि वोल्यौ चो आयौ म्हारे लोको में
अजो वावा पति भरता नें करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कू
ठाडी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
अरे जोगी नाद में वेद में नाइ फलु ना पायौ गुदरी में
परि गुदरी में फलु नाइ चारो जुग में
परि तीनो मिलिकें म्वातें चालें तव आए व्वा जोटो में
अरी वरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मास भरि
अगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी वनाई
परि निरकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
परि जा गूगुर कू लैंजा माता होइगा गूगा पीरू ऐ
वावाजी हाल की आई तोतें व्दै फलु लै गई
मोहू गूगा गैरा दीयौ
अरी गूगा नाए वावरा नाऐ सन्चा जाहर पीरू ऐ
अरी जोरन की ना पैंदि करै वागर कौ भजे राजु ऐ
अरी जोरन की नापैंदि
पीर की मदद ।

११ अरे गई ऐ बरोठी हाथ रानी बाटें चो बनावै री
अरी खाइ लै मेरी मैनि तेरें नरसिंह होइगो री
होइगो पूत सपूत बड़ो मरदानों री
अरी खाइलै सगुना की नारि तेरें सगुना होइगो री
अरी होइगो पूत सपूत बड़ो मरदानो री
सौनी बैंधी ऐ कुम्हार चाल सबदु सुनायो री
पूत कुड़िला मंगवाइ घूघर घुरवायो री
अरी खाइलै मेरी बीर तेरें सीला होइगो री
होइगो पूत सपूत बड़ो मरदानों रो
अरी गोरखनाथु मनाइ रानी गूगुर खायो री
अरी गोरखनाथ मनाइ रानी घट में डारै री
अरी दोरानी जिठानी मैना जुरि आयी री
अरी दौरानी जिठानी जुरि आयी आगन भरि आयी री
दोरानी जिठानी बैठि मंगल तुम गायी री
अरी सब सब के मेरी तुम पैरौ लायो अरी तुमारी होइ ललना औतार
बड़ी बड़ी रानी आई बैठी तखत पै बस बस के बंगला हो जी
कुबरी गई ऐ बानी सुबरी ए आई, घर कर की कामिनि हो जी
जायी भी बाढ़ी बिरजी जी बीबीबी मेरी बाछलि मैना हो जी
अरी कि तेरें होइ बेटन औतार
अरी कि तेरे अंगिये सालिए हार जी
सब सब के तौ रानी पैरो लायी सीलमतिन रानी है जी
मातु अपनी मसुलि के लायी हुति नाइ
मेरे मेरे पैरो री तू तो नाइ लगो मरी मावज प्यारी हो जी।
अरी तोइ मातु नगर तै देऊगी निकारि हा हा जी
मेरे मेरे पैरो री तोइ तौ नगर तै मैं तौ ऐसी निकारि दू जी
मेरी मावज प्यारी हो जी
जैसें दूध मथारी ही जी।
तेरें तेरें पैरी मैं तौ कबऊं न लागूं मेरी नंदुलि प्यारी हो जी।
मेरे हुक्म् गुरु की नांइ
अरी तू तौ री नदुलि ऐसें बनाई जैसें अमनी की हांई हो जी।
अरी ज्यानें सीता ऊ दई ऐ निकारि
तेरें घरेतें मैना अपुना होइगी मेरी नंदुलि प्यारी जी

लोक-कवि ने लोक-कथा को ही प्रामाणिक माना है। अति प्रचलित लोक-कथा में ननद ने सीता को वनवास दिलाया था। ननद ने पहले तो सीता से रावण का चित्र बनवाया। फिर स्वयं ही राम को चित्र दिखाकर सीता को घर से निकलवा दिया।

मो पै किरपा करिगे गोरखनाथ जी
मान हरायौ जे तो, म्वा तैं आई ननदुलि छबोलदे अपने वाबुल ते चुगली खाई हो जी
लाज वी घनेरी जी, परदा घनेरे मेरे, गरूऐ से वावुल होजी
आजु वहूजी नें परदा डारयौ ऐ फारि होजी
सोनें की नादी रेसम की झोरी अरे कि जानें जोगिन कू दई ऐ गहाइ ऐ
वडे वडे लट्ठा जाने धूनी में जराए मेरे गरूऐ से वावुल हो जी
अरी सबरी दौलति दई लुटाइ जी हा।
हा दौलति लुटाई जानें भली रे करी ऐ मेरे गरूऐ से बावुल हो जी
वारह वारह वर्ष जे तो वागन रहि आई माधारी राजा हो जी
अजी जै तौ जोगीन कौ गरभु लैकें आई आ होजी
राजा रे वावू कोई सुनि जौ रे पावै मेरे मेरे गरूऐ से वावुल जी
मेरे सगाई व्याह वद है जागे जी हा।
अपने वीरन को मै तौ व्याह करवाऊ मेरे गरूऐ से वावुल जी
अजी अपनी ननदुलि कौ डोला लैकें जाऊ हो जो हा
वेटा री होतो में तो व्याइ समझामतो मेरी वेटी छबील दे हो
अजी कि मेरी वहू जी ते कछू न बस्याइ जी हा
सुघरी गई ऐ जाकी कुघरी जो आई मेरी वेटी छबीलदे हो
अरी क मैंनें वेटा ते प्यारी राखी जो
सेवानु करिकें जाकौ वेटा जो आयौ अरे कि जानें वावुल ते मुजरा कियौ आयजी
तेरौ तेरौ मुजरा मैं तो कवऊ न लु गौ मेरे देवराय लाला हे
अजी कि वहू जी नें परदा डारयौ फारि हा।
दूजौ २ मुजरा जानें उम्मर माऊ कीयौ मारू देस के राजा हा
जानें नीचे कू नवाइ लई नारि हो।
तीजौ २ मुजरा जानें वावुल माऊँ कीयौ देवराय लालाजी
अरे कि जे तो मुजरा पै देंतु जुबाबु जी
तेरौ तेरौ मुजरा मै तो जवई रे लु गौ मेरे देवराय लालाजी
आजु तुम बहूजी ऐ जो मारौगे डारि
म्वति चल्यौ मारू देस कौ राजा पहुच्यौ ऐ महलन जाइ
जुरि आई घर घर की कामिनि जी
जे तो गामें वधाई हा जी
अजी कि जाको लौट आयौ राजा जी
ऐंब असबाव जाके सवु ढकि जागे
अरीक जाके धरिगी सातिए द्वार हा
रानी तौ जी ठड्डे तौ पानी गरम धरावै बेटी सजा की जी
अजी अपने बलमे उवटि न्हवाइ रही जी।
बलम न्हवायौ जाइ दिलु न सुहायौ घर घर की कामिनि हो जी

अजी क राजा रोवै जार वेजार हा जी
वारह वारह वर्स तू तौ उघटि न्हवायौ खाडे दुधारा हो जी
अजी क गाड़ू तू न भयौ सहाइ जी
अरे क तैनें रानी डारी गाढ़ू मारि हा ।
गोरख तुही ।

× × × ×

राजा उम्मरु नें तो जल्लाद वुलाए
रानी वाछल ऐ जगल में आओ भैया डारि
म्वाते चले ऐं जाके घर के कमेरे
उम्मर को कहनौ डार्यौ हतुनाए ।
म्वाते चले ऐ रे
यह जन आए
फाँटिकु खूल्यौ पायौ नाँहि ।
अवाज दई ऐ तूतौ
सुनि तौ री लोजौ सजा की वेटी
आज तेरे सुसर नें वादर डारे फारि ।
बोल सुन्यौ ऐ जानें हुकमु सुनायौ
मन की तौ कह दै बोरा वात
तेरे सुसर नें री दीयौरी निकासौ
वाछल वहना हाँ
मेरी तौ सुनि लै वहना वात
मान सरोवर रे मान की वेटी
तौ सुनिलैरी भैना वात
इतमें लजायौ री सासुरौ
दोउकुल खोइ दई तैनें लाज
म्वाँते चले ऐं चार्यौ
जल्लाद आए
उम्मर ते करत जुवाव
तैनें कही तौ रे ।
मरी तौ जे पावै, जिन्दी तौ पाई वैठी आज ।
"भैया वुही तौ रे गाढा, वुही रामू गडवारौ
म्वाई में वैठि घर जाई
"कितनी रे गाढ़ी रे, कितनौ सहावौ,
कितनी हजारी सग भीर
तेरे वावुल नें तो कू गाढौ दीयौ ।
मेरी वाछल भैना

मही गड़वारी ठेरे साथ ।
सोने की सोटा तोर्क महो वी री बीनी
मुही रेसम डोरि बाके हाथ ।"
"भैमा चंदन रूख कटाइ
रानी रथु बनवामी ।
लाद्मी मम्होर्सु मामु रानी
पीहर चाली री
वे सुरई के बैल रामग बारे री ।
साथ परिकम्मा रानीनें बैरी की बीनी
'मूबस बसिमी ? मेरे सहर दरैरे म्हारे सुघर के बोरे
तेरी बर बैमो पाताल
रे हाँकि माली मेरे, रामू गड़वारे
लाला मुरम पहुँचाइ ।
रूदन मचायी बामे गामु बमायो
मुरियायो कुटमु परिवार ।
रामू गड़वारी बाको तबकि में बोलयी
"मरी मुमि लीजी मैना बात।
मेरी री बैरो होठो संपाजी की
थामु उम्मरै डारि ती दै ती मारि ।
बैल चो बोरे रानी रथ बठारी
माम की बेटी बानें रथ सीमी बैठारी
म्वाँ ते रे पाड़ा पामें ऐसी रे हाँकयो
बीनो बनी में बामें हाँकि
मरे एक बनी गुजरात
पूजे बन मार्ग ।
पूजो दीजी पाइ इस्मी बनुपायी ।
पामी बरी की पेड़
रानी रथ बिरमायी री ।
रथु बीनो बिरमाइ
वानें पलमु बिछायो री
परी जैमति राजकुमारी
जिमायी गड़वारी जी
पीयो बोहर को पानी
आइ निंदा घाइ गई री
बैल बांधे ऐ बरी की डार
चपायो गड़वारी री ।
प्यास लगी रे बीरा मोर

नेंक पानी प्याइ दै रे
कूश्रा नाऐं वावरी नाएँ
जल कहाँ ते लाऊ री ।
श्ररे सोइ गई राज कुमारि
सोयौ गडवारौ री ।
गू गा गरभ कौ राउ
गरभ में सोचैगा ।
श्ररे जौ नानी कें लै जाइ
निनुश्रा मेरौ नामु परै
भाई दिगी वोल हरामी लाई री
नाना मामा कहैं टूकन तें पार्‍यौ ऐ ।
गूगा गरव का राउ गरभ में सोचैगौ ।
तोरि दूव को पेड़ु इकु सरप वनावैगौ ।
सरपु वनाइ वनाइ वाँवी में डारैगौ ।
उठि रे वासुकि राइ, तेरौ वैरी श्रायौ ऐ ।
वासुकि पूछै वात क कैसौ वैरी ऐ ।
श्ररे जव लैगौ श्रवतार पीरु विसु हरि लेगौ ।
रहेगी जाकी छूछि लीला घोडा ऐ हाँकैगौ ।
धरती के वासुकि राउ इकु वीरा डार्‍यौ ऐ ।
सवुई गये सिर नाइ वीरा काउ नै न खायौ ऐं ।
कारे को श्रसवार पौनियाँ धायौ ऐ ।
चल्यौ ऐ कारौ नागु वाछिल ढिग श्रायौ ऐ ।
पलिका की लगि रही श्रानि
चढैगौ वैरी कित है कें ।
जाहर सोचै वात जाइ परचौ दिदै रे ।
एक कला ते वाहिर श्रायौ—
जानें चौटी खोली ऐ।
लगे गिल गिले वारु वहियन ते जाइ लिपिट्यौ ऐ ।
छाती पै वैठ्यौ जाइ
द्वै जीभ निकारैगौ ।
कहाँ डसूँ मोरी माइ तुरत मरि जाइगी री ।
जौ श्रम्मा ऐं डसि जाइ जनमु कहाँ लु गो रे ।
मारी गरभ में ते थाप,
गाँडै सरपु खिस्याइ गयौ ।
गयौ ऐ खिस्याइ खिस्याइ
डसे दोऊ नागौडी ।
भोर भयौ भरमात रानी वाछल जागैगी ।

उठि रे बीरा गाड़ीवान गाड़ी जोरीजे ।
भाँमी से लई हात बैंस पै धामैंगी ।
अरी क्या बोई मोरी भैनि
बगिया तौ दोऊ हुक्क भई ।
'पीहरिया मरि जाऊँ
रोड मे च्यौं धाई
भूमि गई माया मांसु
मटक्त मेरी जनमु गयौ ।
तू मा गरभ की राउ
गरभ में बोलैगा ।
कै तू भूत पलीत देव कै दानौ रे ।
मा मैं भूत पलीत देव ना दानौ री ।
देयौ गोरखनाथ गुग्गा कौ बालकु री ।
मिटि गयौ गोरखनाथ मोइ कहा बताइ गयौ ।
चमक है गयौ मोइ गरभ में बोल्यौ ।
तेरे मरे जिवाइ पढ़ बैल बगदि घर जावे री ।
जोटा लै सीधौ हात नीर कू धावै री
पाला की पहिं लई पैल हरीसिंगु पाइ गया ।
बोलै राजा बात मेरो सुनै मेरे भाई रे ।
ये जोटा तौ बाबुल कू दीयौ
जाइ तू कहाँ ते लायौ रे ।
तेरी बहनि कू दीयौ ऐ निकासौ
गरभु मैं धाई रे ।
कितनी भीर सहायौ लाई रे ।
अरे बूढ़ी बड़न की ए याद
बूढ़ी रामु गजधारी रे ।
बूढ़ी पुरखी पै बैल बड़ी ऐ मझधारी रे ।
ज्यौंई डटि गयौ मेरे बीर
पिता ते भिजि धाऊँ रे ।
ज्योंहि कुमर चल्यौ जाइ
मानसरोवरि धायौ ऐ ।
मातु प बूझै बात कैसें चित्त उदासी ऐ ।
अरे बाबर झारे फारि
गरभु सैं धाई ऐ ।
गूगा गरभ को राउ
गरभ में तड़प्यौ ऐ ।
अरे पलना ते सौंधी मारि

कहाँ फेरि भडक्यौ ऐ।
खूननु रकतु वहाइ
परचौ जाने दीयौ ऐ।
गूँगा गरव कौ राउ
वागर में आयौ ऐ
उम्मरु राजा वैठ्यौ तखत पै
तखत ते औघौ दीयौ मारि।
(दोनों ओर के दल आए) वाछल वोली—वापनें हाय पकड़ा
'तूतौ हटि जा मेरे धरम के वावुल
गोता गयौ ऐ खाइ
तू वो हटिजा मेरे वावुल प्यारे
तू अपने घर जाउ
'अपनौ सहावौ तू तौ लैकें रे जैयौ
मेरे गरव गुमाने वावुल,
मेरौ सहावौ तौ रे मेरौ गोरखनाथ
सीक समाइ तहाँ जाँउ।
(वाछल ते जाहर ने कही—सवासौ गज का निसान, गैलमा डका तो पै से लै लुगो)
भादो आधो राति औलियाँ जनमु लियौ
मथुरा में जनमे कान्ह वागर गूगा भयौ
हम्वै हम्वै कोयल वौली पापियरा झिगार्‌या
भाई के मैदान में चौहान खेलन आया।
जिन धाया, इन पाया, वागर में सच्चा पीर रे कहाया।

जाहर का विवाह—

सूवसु वसौ ढकपुरा गामु तरै हाथुर सी भाई
हेमनाथ नें कथी जोरि चेता ने गाई
ऊँचा अटा पीर कौ भारी
विधि रह्यौ पलगु लगी फुलवारी
सोइ पीर नें कीयौ चैनु
खुलि गये पलकु लैन नापैनु
भोर भये माता पैं आयौ
आइ माता कूँ सीसु नवायौ।
सुनि री माता मेरी वात।
कहा कहू सपनें की वात।
साँची कहूँ समाइ न गात।
सुघड नारि सपनेन में देखी।
तिरिया देखी अति परभीन
भामरि ल गई साढ़े तीन।

मेरा री दिल हरि जौ लै गई
वेटी राजा की।
विनु व्याहें हे मानू नही ऐ वाछिल दे माइ
अच्छा वेटा जो सात सगाई उठी जा देस में
करि देंउ वेटा तेरे सातौ व्याह
म्वांकी सगाई हम ना करें जी।
डारू री पजारूँ तेरे व्याहु ने
वुन सातौ नें।
मेरा दिल री हरि जौ लै गई
वेटी सजा की।
द्वै व्याहि दऊँगी गगा पार की
अरपेटो नारि
द्वै व्याहि दऊगी सकल दीप की
चदवदनी नारि
द्वै व्याहि दऊगी जा देस की
लडि हारी नारि।
इक व्याहि दऊगी जा विरज की
लडिहारी नारि।
करि दु गी रे तेरौ सातौ व्याह
म्वा की सगाई हमना करे वावरिया पीर।
चल्यौ रे पीर भौंरे में आयौ
आइ भौंरे में ठोकर मारी
लीला हस्यौ थानते भारी
छै महीना ते तिनु ना दयौ
अव लीला तोकूं कोतल भयौ।
छै महीना ते जल नाइ प्यायौ
कहा कामु लीला ढिग आयौ।
पकरि वकसुआ लै चलि भाई
चांदनी चौक जाइ ठाडौ कीयौ।
पहले न्हवायौ कच्चे दूध
जा पीछें गगा जल नीर।
पटने से रगरेजनि आई।
नादन में महदी घुरवाई।
तुम हरियल महदी लाओ सुघड वांगर की चोखी।
मस्तक गोरख लिखू लिखू लीले कें चोटी।
गलें लिखू लीले कें ग डा

जौ तेरौ जाहरू जूझिजाइ तौ बागुर में खबरि पहुचै आइ।
सो आधौ व्याहु भयौ बगला में माता मेरी
आधे के कौल रे करारी
सो जाहर व्याहिवे जातु ऐ।
७ कमची मारी लीला के गात
लीला उड्यौ पमन के साथ
हुआ हुस्यार लगी नाइ चोट
फादि गयौ खाई अरु कोट
म्वा जाहर ने दहसति खाई
मति रोवै जाहर गुरु भाई।
धरम सुम्म लीला दयौ टेकि।
जाहर हँसे समद कू देखि।
समुंदर देखि छूटि गई आस।
जूरी दँत मिली बहमाता।
कौन कामु ज्यौं उतनु तिहारौ।
जाई कौ भेदु बताइदै न्यारौ।
सासु बहून है गई लराई।
मनु फटि गयौ डिगरि चौं आई।
वा दुसमन नें बादर फारे।
तो वुढ़िया कू दए निकारे।
सुफेद वस्तर धौरे केस।
वुढिया रहति कौन से देस।
उज्जलि गात भान कीसी लोइ।
जिया जन्त भकि जागे तोइ।
बूढी उमरि कठिन की विरिया।
चोरे पट पर खाइ जाइ लिरिया।
न्या वैठो तू कहा करतिऐ, हमें तू देइ न रे वताई
जगल में वैठी कहा करै।
८ जब वुढिया नें कही कुमर मैं तोइ समझाऊ
आरे जाहर पीर भेद मैं तोइ बताऊ।
मेरा नगरु इदुरपुर गाम
बहमाता ऐ मेरौ नाम।
जूरी को वाघू सजोग
करनी करै सो पावै भोग।
मो लिखनी में असुर सहारे
पाचौ पड हिवारे जारे।

मो सिखली ते जाहर कौन
चार लाख चौरासी पौन*
पापु हस्त नें पैदा कीनी
ए बाबरिया थारी दास ।
वे मोह दहुस रे बताई,
मे सब की चूरी देंगि दं ।

९. मेरी मेरी चूरी दंने कबरे दई बहमाता की ।
इक चूरी भरे बेटा तेरी दे को दई मूंवा नीमी ई
छावनी छपु डर पार ई में दु दिल गयरी मुकाम
म्हाकी राणी में चोखी सेहरी बालदर नाम ।
म्हाकी बुआ की एक बालकी एबन सिरियल नाम ।
म्हा से रे तेरा होएगा म्याह ।
चा की सगाई दूबे पारिपै पत्नी पारपो पै
म्हा का तो है बाहरो भौर निभाह का दुनिया में
चूरी भी लिखिके राखी बहमाता समद में ।
ना हासी ना विमिमियी म्हाकी चूरी
लनि गई पत्ना पारि ।
चोड़ा भी निकारा बजमेसि का
नहरी कूपे में ।
बुढ़िया भी गई ऐ समाइके बारह कुओं में ।
भौर वो सराप तोह म्या बढ़ें बेला चोपी के ।
माली भी बनिके म्या पई म्या नीसन्वे मे ।
तपने भी सांभे होत दें पूर भाई
कुई कुई देसु दिखाइ दे ना चो की ।
पूड़ करि घावन मारिलें म्हारी पीठो पै
घोड़ा सरा सरर उड़ि बिमपा नीला घोड़ा रे ।
कारे बादर में समा ऐ उमाह जो नीला घोड़ा रे ।
मति रोवें जाहर गुर माई ।
मैं हास कटोरा देंउ न्हणाई ।
हास कटोरा नीला बायी ।
बरम गुम्म नीला घोषी टेकि
जाहर हुवे हास क बेकि ।
नीला बांधि गुमपो दीनी ।
नूरजी दे बानें सोटा दीनी
बगो मैं लई हात केस घोड़ा के नाड़े ।
सोटा मैं लीनी हाथ पीर तरवर कू चाले ।

---

*जीन ।

निरखत परखत चालें चाह
जाहर पीर देखि लै न्या उ।
सिगमरमर की पटिया सेत।
मिही काम रानी को देखि।
वाच्यो श्राकु रही घन पवारी
फिरति श्रानि राजा की भारी।
नर वच्चा कोई न्हान न पावै।
उडत जिनावर राजा मारै।
सोने को सिडो दूध सो पानी
कौन रजन की श्रामें रानी।
गोता लेंतु ताल के वीच
लीला घोडा ऐ देंतु श्रसीस।
नीर सीर वाछिल के जाए।
तैनें घोडा ताल न्हवाए।
पहलो लोटा भर्यो ढारि श्रर्जुन ले (धरती) दीयौ
दूजो लोटा भर्यो ध्यान गोरख को कीयौ।
तीजो लोटा भर्यो जापु सूरज को कीयौ।
चौथो लोटा भर्यो नीरु घोडा कू दीयौ।
हसत पीर लीला ढिग जाई
लीला घोडा रिस है जाई।
दाके दाके फिर्यो ऐड दै खूव भजायौ।
छिन मतर के वीच पीर मैं तोड़ लै श्रायौ।
तोकू जरा मोहना श्रायौ।
श्रापुन जाइ ताल में न्हायौ
मेरी तेरी टूटी रीति
मेरी सुधि ना विसराई
सो श्रापन न्हायौ वहू के ताल में।
१०. तु दिल नगरी जाउ जहा सुसरारि तिहारी।
गुन महलन के वीच प्यारु करै सासु तिहारी।
मोहरी पट्टौ दिपै दिपै माथै पै चोटी
सहर दलेले जाउ कहूँ वाछिल ते खोटी
तेरी जाहर मरयौ जिलौ झगा श्ररु टोपी।
दात तिनूका दै लिए श्राडे
हात जोरि जाहर भये ठाडे
तुही मेरो भैया वद तुही मेरी मा को जायौ।
परदेसन में मोड़ लै श्रायौ।
श्रव का लीला मोते रूठे

मेरी तेरी संपू मरैते छूटे।
सो मैं ऊं म्हाम्पी तुमी म्हाद से।
मति करै मोग ईसाई
सो म्हाइमे म्हाई ताम में।

११ जाहर बोस बुन बुना मीमो
मीमा हुमि ताम में दीमी।
हठकी मैं रूमी इतमें मामो।
पचक पचक मीक चुप्पी चुप्पा मैं म्हा मामी।
तै सरवर चुखि हु हु मचायी।
जो कहूँ पीम संब की मावे
नौकर लेगी बोलि मार तोमे मगवावै
तैनें सीमा करे गजब के टूक किले की ईंट दुवावे।
इतनी भुनि कें बात म्याद मीसानें दीमी।
बापर बारे पीर तैनें डब का की कीमी।
मया सिपाई करै किसी के हाथ न माऊ।
मायास लोक में उड़ू किसी के हाथ न माऊं।
इतनी मुकिसान करूयो मीमामें
बाम की सुरति रे लगाई।
नौमस्वा बागु जानें कैसी होइमी।

१२ म्याते जाहर चले फेरि बापम में माए
बाममान बस्वी मुसवाए।
हुकमू करै तो बोमू तारी।
तबता पट्टी बस्यो बामू सामे में डारूमी।
पीस हुवाए खिस्मी फूलू मेवा की पीरी।
कलमा करै जहार कैमडी मति गुन फूक्यो।
जी कई मीम सब की मावै।
नौकर लेगी बोलि मार मोमें लगवावै
नौकर म्याई नारि कौरे म्यारी ऐ नारि की
नौकर माऊ तेरे बाप की
साठ टका दु पो बाठि के रे मासी फाटिक दीजी बोलि।
नौकर माऊ तेरे बाप कौरे नौकर हूँ म्याई नारि की रे
गुरु सभा की मीम
बाबि कें पी चौकसी छूटि जो पर्‌यो मीमा मोड़ा ने
इक तबता कीमेर करी हूबे में मायी
तीज में चौहान पीर क मरमी पामी।
पीस्त मोप गाजी भांमा बाजन परे बोटमा माम

जाहरपीर गुरु गुग्गा

चार तखता की सैर करी जाहर नें दादा मेरे
फिर बगला की सुरति लगाई क जाने बगला कैसौ होइगौ ।
म्वाते जाहर चले पीर बगला में आए
चारयौ ओर बगला फिरि आयौ
बगला कौ दरबज्जौ न पायौ ।
ऊपर कोट नीचे ऐं खाई ।
जाहर ऐ गैल बगला की पाई
चार्यौ कौन पीजरा आठ
पढ़वैयन की म्वा बिछि रही खाट
कमरि मर्द के बधी दुलाई
जो पलिका पै झारि बिछाई
तान दुपट्टा जुलमी सोयौ
छैमासी नीद रे सुहाई
दादा मेरे
सोयौ बहू की सेज पै ।
रेसम के रस्सा तोडारे ।
अनबोला के बाग उजारे ।
दातो से नारंगी खाई
भरिगौ पेटु जम्हाई आई
फोरि फुहारौ पानी पीयै ।
लीला नें दु दु वाग में कीयौ ।
इतनौ नुकसान बाग में कीयौ व्वा
घोडा ने दादा मेरे
तो जू आइ गई तीज रे हरियाली
सो पिछले पाख की
पिछले रे पाख तोज जब आई
सिरियल नें नाइनि बुलवाई
घर घर नाइनि फिरै नगर में देति बुलाए ।
तिरियन लगे उमाहु फौज के से बघे तुलाए ।
तरुनी और नादान सिमिटि भई सबु इकि ठौरी
वटैं सुपारी छाल औरु पानन की ढोली
सिरियल नारि मात ते बोली
मेरौ डोला दै सजवाइ सग चौदह सै डोली ।
पाइजेब बादी पहिरावै ।
पाउ धरै जैसे नौबति बाजै ।
नैनू की चद्दरि वुक्क खडी अजमत की फुलरी ।
नैन आम कीसी फाक, नाक जाकी सूआ सारी ।

वागर वारी तैंनें राख्यौ ।
नैंक अदल वावुल कौन राख्यौ ।
घोडा वारौं ब्यातें कहा निकार्‌यौ ।
इतनी सुनि के वात हीमि घोडा नें दीनी
ब्यातें रानी वहा गई घोडा के पास ।
वीरा तेरा रे चढता कहा रे गया लीला घोडा रे
"मेरा भी चढ़ता भौजी सोवै तेरी मेज पै"
"क्वारी से तैंनें भौजी चो कही दई मारे रे !
वीरा भी कहिके टेरतऐं हमारो तु दिल में ।"
"भौजी भी कहिकें टेरतऐं हमारी वागर में ।
मैं जानि गयौ रे जानिगौ धनि सिरियल तेरौ नामु ।
सपने में वात जौ तेरी है जो गई जुलमी जाहर ते ।
पांच-सात कमची सड-सड मारि जो गई लीला घोडे में ।
"मैं भी तो जानुगो री आइ गयौ फागुन मासु
हम तुम होरी खेलिलें री ओ सजा की धीअ ।
सग की सहेली रे वोलि फूल उन पै तुरवावै ।
जानें गोदी भरि लई वेगि फूलमाला पहरावैं ।
तेरी पति सोइ रह्यौ वगला माल व्याके नहि डारै ।
जौ सुनि पावै वापु तेरौ हमे माडारै ।
तू राजन की धीअ कहा गजवानौ फारै ।
तेरौ वावुल सुनिकें वात हमें माडारै ।
तुम ब्याई ठाडी रहौ पास वगला मैं जाऊं ।
अपने वाल मे जाइ जगाऊँ
व्याते रे फांसे मैं तो खेलू ।
मैं घोडा लु गी जोति किले की ईंट ढुवाऊं ।
फूलन ते भरि लीनी गोद ।
रानी रहै कमल कौ फूल ।
तैंनें वाजू हमतें खेली
तेंनें बुलाइ लई सग सहेली
गलमाला अवकें पहराऊं
अवकें चौपड फेरि विछाऊं ।
सांची कहूं वागर वारे गूगा राना
मानि लीजौ वात हमारी
नारि तिहारी मैं है गई ।

१४ सग की सहेली कहैं वात सुनि लीजो हमारी
कहा माया तैंनें फैलाई
जिही वात हम पै वनि आई ।

तेरे संग डोला लै आई।
तालन को तैनें अहुराई।
बागन में बालम किय मार्ड।
तैनें करे गजब के टूक बात बाबुल की डारी।
बो नाही करि चुक्यौ बीग्र संजा की बनारी
सुनत बोम सब ही यूं मारै
मैना मेरी बीमत डारैगो मारि
सबा ऐसो राजु ऐ।

१५ जागि जागि गोरी बन के बलमा
मामु भयौ बदनाम तुम्हारी।
बागन में फेरा तुम डारो।
इतनी सुनि कें बात ब्याबु बाहर न दीयौ।
पकरि भई ऐ बीग्र सब के जोड़ा दीयौ।
जाते बाहर कहै समझाइ।
बात हमारी मानि लै चौपड़ मचकें पेड़ बिछाइ।
चौपड़ दीसी डारि माम कू बाहर भूल्यौ।
यू पयौ इसक में भूलि
पासेम तै परिसौ हूरि, भयौ गोरख कू भूलि।
मचके फांसि खिरियल डारै।
माल पानी सबरी बो हारै।
हारि भयौ सब माम
मास परगने सबुरे हारयौ हारयौ सागर ताल।
खिरियल नारि बार का डारै
सहर हलोने बाज बाज म्या मीठ मठीरा
तु बिन नगरी रही बाज म्या सून महेला।
धाकड़ा की सींपकी
काठरा की बाड़
बाबरे की रोटी
मोठरा की दार
बरिसै पीठि पीर जोड़ा की बागरबारे
यू गा राना
मैं है मई नारि रे तिहारी
तू साची करिकें मानिलै
"रानी म्यारी ना लै चलें बापू गाढी कू मार्ग
मैया किने बोध नारि मीचें कू पामें।
इक दिन तोइ म्याहिबे मामें

मानि लीजौ बात रे हमारी, राजा की वेटी
तोहि व्याहि दलेले कू लै चलें
व्या की व्या रहि गई
व्याते कछू और चलाई
पए कुमर के तेल रहसि हरदी चढ़वाई
रोरी मरुग्रटि धुरै वैठिकें कजरु लगायौ
एक ग्राखि मिचि गई एक में कजरु लगायौ
भौंह विनूनी उडी चादि पै वार न ग्रायौ
फोतनारि ग्राखिन में कजौ, दात दतूसरि मुख में भारी
ऐसौ जनम्यौ कुमरु कन्नि जाकी महतारी
पगौ तेलु ग्रारतौ कीयौ
व्वा दुलहा कौ, दादा मेरे
भीतर कू लै जाइ
जाके हात हतौना धरि दिए ।
ग्राठें कौ माढयौ राज घर नौते ग्राए ।
भूप चलौ ज्यौनार पाति कू सबै बुलाए ।
भूप चले ज्यौनार जोरि प गति बैठारी
दौना पत्तरि फिरैं हात गागर ग्रौरु पानी
दुहरे लड्ड फिरैं मगद नुकुतिनि के न्यारे
भई जलेवी त्यारु ठौरु वरफीनु कू कीयौ ।
जाकौ विगरै चित्त जाइका सौठि कौ लीजो ।
लुचई पूरी मगद कचौरी
वूरौ दह्यौ पाति दई गहरी
सुगढ राइने वने गहरि केरा की ग्राई ।
सरस दारि म्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी ।
हीगु मिरच वटि लौंग सौंठि ग्रौरु साम्हरि डारी
राघ्यौ सागु सुधारि ग्रौरु राघी चौलाई
मैथी पालकु फिरैं लहरि की गाडर ग्राई ।
सरस दारि म्वा भई जुरी महलन त्यौंनारी
हीग मिरचि वटि लौंग सौंठि ग्रौर सामरि डारी
सो ऐसी पाति दई
व्वा राजा नें दादा मेरे
नगर में हौंति रे वडाई
भूकौ व्याते ना फिरै ।
दहगड दहगड भई मगन भए सवुहि वराती
रथ वहली सजि गई धरी हातिनु ग्रम्मारी
घूटु परवती सज्यौं तुरकी ऐराकी

रथ बहली सजिगई चली हाथीनु अम्मारी
ताजी तुरकी सजियौ बंका।
सुरज बनात नारि में गंगा
घोड़ा सजि गए मोर कराई
जब कछवाहनु में सुरति लगाई
एक बरन के सजीरे सिपाह
मुस्लिम नगरी की सुरति लगाई
नारि में तीरा छुहरी कठी
सो एक बरन के सजे सिपाही
सो बाबा मेरे
सोभा बरनि न जाई
सो तुमहा ताबे (जाने) कू हम कहा करें।
केसोरे के चारि नगर परिकम्मा कीनी
नउकर फिरें नकीब डेरे काए न कीनी।
कटि कटि धूरि उठी अम्बर में
बाबा मेरे
सूरज में जोति रे छिपाई
सो माम गरद में घटि गयी।
साहब बीच में कही डेरकाए क कीनी
तुमि लेउ मेरी रे बात लेख में नीर न कीनी
तुम चलि लेउ मेरे सग
जो कछू होवनी होतमा मेरी सबरी साहिबी संग।
म्याते साहबु चल्यौ सुरति तु दिल की लीनी
सखिया गावें गीत
ऐसी कछु मोह दीजति ऐ दुलहा की फिरि आइगी न पीठि।
म्हारीई लौटवावें तेरी बरना
सबकें सबइ सुनाइ हर बरना (गावई)
हरबरना सबु कहि बात परि गई सब भारी
चौहानन की नारि म्हा है बाढ़ तिहारी।
म्हापें गोरखनाथु सहाय
चौदहसौन की सग बाके चलित जमाति।
नगरु चलै जमाति सब सागुन धरि मानी
नगर कोट की मात बात सुनि लेउ हमारी।
म्हाके सबु सग एं रनवीर।
बात रे हमारी मानि लो रे मरे म्हा छूटी उठैगी पीर।
पीर बबे का बीर सम्हारै
म्हाके कहा धन में देखि मीर

चौहानन के वीच में रे खूननु की उटाइ दु गो कीच ।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु ज्वाला नें दीयौ
मै तु दिल कू न जाउ
चौहानन के आगें मेरी नई फरैंगी तरवार
साहबसिंह नें कही वात सुनि लेउ हमारी
तुम आगें परि लेउ कही मानो इक हमारी
तुम बनरस के सिरदार
ऐसी कच्त्री लामतौ जी, हमारी घूमि घूमि चलैंगी तरवार
सिरियल नारि व्याह कें आमें
चौहानन ते तेग चलामें
बे पाँचई ऐं सरदार
एक फल में ते पाचौ भए, बे कहा तौ करिंगे तरवारि ।
मैं हरिगिज मानू नाइ
नातेदारी बिगरि जाइगी मै आगें न धरूगो चाचा पाइ
सात लाख की भीर, राउ चिंतामनि भारी
तुदिल की व्वानें करि दई त्यारी
तु दिल नगरी कितनी दूरि
वात वताइ दै भेद की रे अरे म्वा नियरी ऐ कै दूरि
साहबसीग नें कही चलौ तुम मसकौ घोडा
सिरियल नारि के फेरि मिलाऊँ सिरियल ते जोडा
जो सजा की घीअ
हीरा भेंट में दै गयौ रे, वहमाता नें जूरी लिखि दई, दै दई ऐ व्वानें जोरी ठीक
गढ़ आमरिते चले फेरि तु दिल कू आए
राठौरी मिलि गए सगुन जे विगरे तिहारे
अबऊ मानौ बात वगदि तुम चलौ विचारे
तु दिल ते वगदि आयें ठीक
वात हमारी विगरि जाइगी तुम वात हमारी मानौ ठोक
"अरे तू वादी कौ जामु वात तैनें खोटी कीनी
हम छत्री कैसें हटि जाइ वात सुनि लेउ हमारी
आगें चलैंगी तेग भेक जे चलैं हमारी
नगरकोट की सग मातु जे हौंति अगारी ।
धौरा गढ़ की सग
तुम बनरस के सरदार,
ऐरी कच्ची लामतु ऐं रे म्वा घूमि घूमि चलैगी तरवारि
सबु सिरदारी चली फेरि तु दिल में आई ।
राजा बूझै वात फौज कितनी ऐ आई ।

नागर पान मंगाइ बटै रावन कू बीरा
राम रामु में वे गयौ हीरा
कसि बांधे हथियार कमर मामोंनी कू जाए
करिकैं भेंट हौटियौ राजा
बाबा मेरे, निरगु कचौंरी जाइ
असवारी जाकी छूटि गई
काइरा ते जोड़ा जमवायौ
जौमेरा जोड़ा बंधवायौ
जोतु करै मति देर
बामर बारौ जामतु ऐ रे
ज्याके संग साहिबी कितनी भीर
संग साहबी भीर
साचो करिकैं मानियो रे बरोमिया की करियो भीर ।
ज्या की ज्या रहि गई, ज्याते कछू भीर बसाई
मचि जोहनी चली मीर समदर पै धाई ।
जाहरपीर बनी में डोलै
देखी जाहर बेसी सार
मीरा गायी करे जुबाब
तुम तुम्बिल कू जाउ ज्याकु ज्या होइ तिहारी
मेरी लीला जोड़ा कितनी दूरि
जोड़ा बेगि मगाइ दे मैं देखू तुम्बिल नगरी दूरि
जानें बस्ती जोड़ा राह लगायौ
ठमु ठमु ताजी नचतौ आयौ
जाकी कमिलि परी तरवार, हात ते जारयौ सटक्यौ
हम तुम्बिल कू जाइ होइ ज्याकौ रे खटकौ ।
के ज्याहु छूटि गाइ पीर कू बहुतई कसकौ
मेरी सुनि लै लीला बात
पलक पलक में लै चलौ हम पाचौ माता साथ ।
ज्याते जोड़ा बरच्यौ फेरि बागर मे आयौ ।
बापसि माता ते करै जुबाब
मरी तू मापड़ पर चाऊ बेगि लोंगनु लै आउ ।
चौंठे मचाइ रही भीर
हमतो ज्याहिबे आए एैं सपनें कीची है नई रीति ।
बाछल कहे बात सुनि लीजो मेरो
मोइ बारह बर्ष गई बीति बरो भूमर की लाची
तुम है गए दिरवार
नरसिंह मोर भगारी थाली मज्यू ऐ करि लीजो जोड़ा के पिघार

वाला भानुजो वु हासी कौ सिरदार
तोइ गैल मै वो मिलै खेलतु होइगौ सिंह की सिकार
म्वाते जाहर चल्यौ फेरि हासी में आयौ
भूआ पूछै वात हात में कहा लै आयौ।
जि कहा वधि रह्यौ तेरे हात में वीर
जे ककनु कैसें बधि रह्यौ मेरे पेट में उठी ऐ पीर
"कहा वाला मेरौ बीर
सग वरौनिया के वो चलै रे, वुही आगें सम्हारै तीर।"
"भैया वो ज्या तौ हतु नाइ
कहु वनखड के वीच मेरे खेलतुई मिलैगौ सिकार।"
इतनी सुनि कें रे वात ज्वावु भज्जू नें दीयौ
हम चार्यौ सिरदार पीर डरु कौन कौ कीयौ।
मेरौ जिही ऐ नरसिंह वीर
मेरे मान मिसुर कौ कदमु ऐ रे, वरैनुआ पै जिही सम्हारैगौ तीर।
म्वाते घोडा उडयौ, फेरि समदर पै आयौ।
जाइ वाला भानजों खेलत पायौ।
"मेरी साची वताइ दै वात
तुम कैसें आमतौ रे, मैं तुमते ऊ चलतू तुदिल कू अगार।
तुम मती करौ रे देर नाथु जे चलतु अगारी
तु दिल नगरी रे नाथु,
चौदहसैन की जमाति परी तु दिल में न्यारी
खप्पर वारी परी पिछारी
नगरकोट की मात सग वो रहति अगारी
तोइ नल कौसौ वरदानु
जहा सुमिरै तहा आमति ऐ रे, वारौठी पै गावै मगल चारु।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु जाहर नें दीयौ।
सुनि लै रे मेरी वात कहा ढगु तेरौ कीयौ।
नल कौ सौ मोइ ऐ वरदानु
सग हमारे रहति ऐ रे, रहति ऐ सिंह सवार
मात हमारी वो वडी रे
जाकें पीछें सवरी जाइफा मात
देखि समद कौ नीर वेगि घोडा दहलानौ
कलि गोरख के नाम सम्हारौ
तुम वेडा वाधि समद में टारौ।
अवु उडिवे की मोमें वाकी नाइ
मैं वेडा में ज्यौं चलू, मेरे अधर चलिगे भैया पाइ

कजरी बन की मांगु मगारी आयौ
जाहिन है कीयौ मयतार मांड ना लियौ हमारौ ।
पीर परै जब मीर
माथे पै तौ लिखि दई रे जो संजा की भीख ।
म्याते घोड़ा चल्यौ फेरि दु'दिस में आयौ ।
आइयौ दु दिस पामु
संग की सहेली देखिबे रे आई सुसहाये हाल ।
सब की सहेली चली देखिबे दूलह आई ।
जो देखि कुमर को रूप मीठु मन में बौराई ।
तिरिया रहि गई हाथ परे मरिवनु के टोटे ।
ऐसे पाए कंत करम तेरे सिरियल खोट ।
बछवाएन की कुमर मांगु दुलहा की ताय
गाऊ की चतुर सुजान कुमर पै परदा डार्यौ
हंसत सखी सिरियल किय जाई
कहा दुलहा की करे बड़ाई ।
म्याकौ पेट मचमिया चाहि में गयौ ।
बात बतुसरि मूख में मारी
ऐसौ जनम्यौ कुमर जनि म्याकी महतारी ।
"क्या बिधिमाता भैया मोइ ।
मेरौ पति चला कीयौ मोइ ।

जो ठानी बहनें मख्यौ देह साथे में डारी
म्याके मन माम कीसी फोक नाक म्याकी सूमा सारी ।
म्यारि भमि रही डोरि चबरि मत लेइ हमारी
जल बिनु देल देल बिनु बाती
बलमा मेरे,
तरूपति मारि रे तिहारी
कीमतु होय तौ चबरि मेरी लीजियौ ।
बहमाता चोरी मूठी दीनी
मरूयौ जहर बिनु बाइ रानक पानी में डूबै ।
ऐसे पति के सम कुमरि का सिरियल कीयै ।
गधवाहन् कोसिके करी बारीठी
दादा मेरे
फिरि मैं म्याते न मो मराई ।
परमात पत पै मैं चडू ।"
इतनी सुनि कैं बात म्याय जाहर नें दीयौ
लीला घोड़ा उस दैनें कौम को कीयौ ।
भैया तुम तौ पधारौ चलौ म्यानु चोला मैं दीयो ।

नरसिंह वीरा लयौ अगार
भज्जू चमरा चलतु पिछार
बाला भानज करै जुवाव
भैया व्यापै रे वीरन की मार
कोई नरसींगै डारै मारि
इतनी सुनिकैं वात ज्वावु नरसींग नें दीयौ
अरे वारौठी की कीनी त्यारी ।
सजा नें देखि मानी न्यारी ।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु हरींसिंग दीनौ ।
पिछिली तोकू नाइ खवरि वाग में सिरियल खाई ।
सात दिना गए बीति ताल पै ढांकु बजाई ।
नाश्रो भर्यौ वु नाश्रो खेल्यौ
सबु वाइर्गा पचि गए तनक ना मुखते वोल्यौ
तिरवाचा तुम पैं भरवाई
मरी कुमरि तेरी सिरियल ज्याई
अवकें ताखे फेरि खदावौ
डसि जाइ नाग हात नाइ आवै ।"
अरे चौं गाडू तू सगुन विगारै ।
भाई जौ जिदिगी वचिजाइ तिहारी
मानौ चाचा तुम वात हमारी
एकु कह्यौ तुम मेरौ कीजौ
पीर कौ व्याहु सिरियलतें कीजौं ।
मोते ल्हौरी भैंनि व्याइ कछवाइनु दीजौं ।
मुसक वाधि वो तेरी डारै
सबु दल कूं भज्जू माडारै
फेरालेगौ डारि वात वो फेरि विगारै
राजी ते चौंन फेरा ऊ डारै ।
चौं चाचा मेरी बात विगारै ।
जवरन रे वो भामरि डारै ।
इतनी सुनिकें वात ज्वाबु राजा नें दीनौ
चौं गाडू तू परनु विगारै
हम चौहानन कें करैं न सगाई
हमनें पहले लीनी मांग, उनते करें लडाई
उल्टी सिड्डी बटा चौरे चढावै
सो हटि हटि जुज्झु करै तु दिल में
चाचा मेरे
मानि लीजौ तू वातरे हमारी

तु दिन में साकी होइगी ।
बारौठी कूं कब्जे आए
म्हावे हरीसिंग चम्मी फेरि जाहर ढिग आयौ
माई जानें दीनी ठोकि कें पीठि पीर ऐ देतु बड़ाई ।
यौं जाहर तैनें देर लगाई ।
जौ बारौठी चढ़ि जाइ मौन है जाइ बिरानी ।
मज्जू चमरा करतु जवाब
भैया चौहानी ऐ कहा लपिजाइ दागु
तु लीला घोड़ा तुरत सजाइ
हम तेरे देखि चलत मगार
म्हां चौवहुते चेलनु की परी जमाति
नगरकोट की माई मात
सुन लै जाहर मेरी रे बात
माई चढ़ि घोड़ा की पीठि फेरि दरबज्जे पै आयौ
बाबा नाथु जाइ ठाड़ौ है पायौ
बाबा ऐ तू सब ना भायौ ।
इतनी सुनिकें बात ग्याडु जाहर नें दीनी
हाथ जोरि जाहर भए ठाड़े
चौवहुदी ध्यान ऊ बड़े भमारी
मौचक बातें करि रहु बो बात
सुनि रे जाहर मेरी बात
मरे बीर दास हमारे चलें मगार
नगरकोट की मात मनार
लीला घोड़ा ऐ देतु दबाइ
मज्जू चमरा करतु पुकार
मेरी सुनि लै भैया बात
इतनी सुनि कें बात बाबु संबाऐ आयौ ।
भैया पे दौलत ऐ पांच साहिबी कहावै आयौ ।
राजा ठाड़ौ मरै पुकार
मैं चेरा हु यौ तेरे द्वारि ।
मोहे जाहर लटकै मति हाल
कर मनि हम पै बनि मार्ई
है ठौमा हमनैं करौ बनाई ।
इतनी सुनिकें बात ग्याडु जाहर नें दीयौ
तैनें तौ राजा जब भीम नी कीयौ ।
इतमें परि गई खबरि जोर ज्वालासिंह दीयौ ।

जौ क्वारौ लै जाइ वात डिगि जाइ हमारी
हमनें रे सजा कीनी नाही
तैंने वावा हिरिगिजि मानी नाही
सो हटि हटि जुज्झु करौ तुदिल में
दादा मेरे
होन देउ रे लड़ाई।
वारौठी की कछवेनें कीनी त्यारी
सात लाख की भीर राउ कछवन की भारी
जौ गाडू वनि जाउ वात विगरि जाइ तिहारी
इतनी सुनि कें वात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
जौ गाडू अगारी परि जाउ तेगना भलै तिहारी
हसि हसि वात करै रे जाहर
दादा मेरे
सपने में है गई नारि रे हमारी
तुम टरि जाऔ अपने गढ आयरि देस कू ।
इतनी सुनिकें वात ज्वावु दुलहा नें दीनौं
जे क्वारौई ना जाँउ वात गहि जाइ हमारी
भज्जू चमरा तैग सम्हारै
सवु कछवाइनु हाल विडारै।
कछवाए लीने घेरि
काने तू चौं न तेग सम्हारै
हमारौ जाहर चल्तु अगारी
तुम वारौठी की कीनी त्यारी
वीरन की ऐ तुम पै मार
कहा चलति ऐ हमारी वार
सो हाथ जोरि तेरे करूँ निहोरे
दादा मेरे
व्याहि दीजौ सिरियल नारि रे हमारी
जाइ गढ आमरि कूँ लै जाँय
इतनी सुनिकें वात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
नरसिंग पाँडे चलतु अगार
वाला भानज करे जुवाव
सुनिरे मामा मेरी वात
कछवाइन ते खेलौ घात
कुर्सी मूँढा लए मँगाइ
सजा जोरैं ठाडौ हात
भैया भक्क भक्क वहि चली, जैसे मति वहि चली गगा ।

जो जाहर ऐ न लागैं दागु
अवकें कमठा फेरि सम्हारि
नरसीग वीरई म्वा खेलैं सार
भज्जू चमरा लडि रह्यो हाल
सुनि लै सिरियल मेरी वात
कन्यादान में आवैं न तेरो वापु
जार भमरिया लीजों डारि
फेंटा कटारी की नाए वात
सखियाँ गाओ मगलचार
हरीसीग कहो गैंल तू देउ हमारी
भज्जू चमरा ने घेरो अगारी
सुनि लेउ सजा वात हमारी
नातेदारी जुरी हमारी
अव तो सिंहु पौरि पै गाजै।
लीला घोडा करतु जुवाव
भामरि भैया चौं न लेइ डारि
सिरियल तेरे खडी अगार
पाँच—सात भामरि लै जो गया, जाहर उन महलन में।
साढे तीन भामरि मेरी रह जो गई, वागर के रे पीर।
वुही तौ रे हरिगिज लुगो, साढ़े तीन भामरि, है जांइ भया वीर।
वो सिरियल की मात फेरि माढए तर आई
अवकें माता करति जुवाव
मेरी सुनि लै जाहर वात
फेरा तैनें लीए वाग में डारि
सो जवई धीअ हमारी तू लै जातो
जाहर वागर वारे
मानि लें तो वात जो हमारी।
जे कुटमु नासु काए कू होतो।
ठाडी ठाडी सिरियल कहि जो रही, महलन के वीच
घोडा तूवी लीला सुनि लै धरिलै मोइ पींठि के वीच।
'भौजी तोइ तौ पींठि पै मैं ना धरू, मेरी जिही कुल की रीति
जाहर जो मेरा वीर है, वो चढि लेउ मेरी पीठि।
केस पकरि लै तू मेरी नारि के अरी भौजाई वीर
नरसिंग पाँडे हमारे सग में तुम मानौ मेरी वीर।
भज्जू वी चमरा साथ में, तुम मानौ मेरी वीर
नेग जो वाला वीर का, वुलेगो गोद में वीर।
व्वाते वी देही मैं ना लगाउगी, लीला मेरे पीर

इन्नें तौ चेताइ कें तू जिनमें दीजौ सास तू डारि ।
तैंनें दईऐ सवद की मार
तोप गोला चलन नाइ पाए, नांइ चलो पिस्तौल कमान
तैंनें दईऐ सवद की मार
सिर इनके कटे हुत नांए, जे पोटि रहे परे परे पांइ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु हरोसीग नें दीयौ ।
तेरौ कहा विगर्यौ ऐ लाल, लाल तैंनें सवके लीये
तैंनें सव दोए मरवाइ
मरे मराए कहां बगदि आगे, तैंनें दोयौ भेकु कटवाइ
तू तौ भौतु बनामतु ऐ वात
तेरी बात कहां रहि जाइगी, तेरी लई चौहाननु काटि नाक ।
हात जोरि देखि कहि रह्यौ बात
मेरी तौ रे कछू नाइ चलती, तैंनें मारी सबद की मार
कहा ऐ गोरखनाथु
ब्वानें तौ गूगुर दयौ, जालदर नें दीनी ऐ भभूती हाल ।
मेरे कौन जनम के पाप, धीअ ने सिरियल जाई ।
चौहानन की भीर आजु चढ़ि तुदिल पै आई ।
तुम बेटी ऐ लै जाउ
वात हमारो विगरि गई ऐ, नातेदारी जुरैगी हति नाइ ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
चौं सजा तू गरूर विचारै
तू इतनी वांधै हिम्मति वात तू अपनी विगारै
हम वागर कूं जात ऐं भाई ।
तेरी धीअ हम नें सिरियल व्याही
सजा तू अब कें तेग सम्हारै
हरोसीग ऐ वेगि बुलावै ।
घोडा पै ताखौ करै जुवाब
अरे सुनि रे सजा मेरी बात
खाई तेरी सिरियल नारि
मरि गई ऐ वू हालई हाल ।
तिरवाचा हमनें भरवाई ।
तेरी मरी कुमरि हमनें सिरियल ज्याई ।
सो बात कहै सुनि वात हमारी
सजा चाचा
तू महलन कूं चलि भाई
सोवे में कहा तू देइगौ ।
इतनी सुनि कें वात ज्वावु सजा नें दीनौं

दुबकि सुपकि जाइ जामी पठी नाँह तिहारी माई ।
सामुई ती तुम करी भड़ाई
सो साँची कहूँ मानि लै ताबे
बेटा मेरे,
मैं ती फिरि ठ मु मी सहाई
राजी है बेटी मा वर्छ ।
कछवाइन की कुमर फेरि की ताप धामी ।
म्याकी म्यारी रहि भस्मी मीच कहाँ ऐ बीर हमारी
सो साँची कहूँ मानि लै ताते
बात हमारी
म्याकी भामरि पर्छ करवाइ
म्याहि हू छोटी धीय ।
इतनी सुनि कैं बात म्यानु नरसीम नें बीनी
संजा मानी बात हमारी
सहर दलेले के राज हम सिरदार ऐं भारी
सुनि सेठ बाबा बात हमारी
म्यारी मा नें चाह म्याहि लई धीय तिहारी
सो सुपना सुपकी संग बताइ दै
सी सजा पापा
मानि लीजो बात रे हमारी
सो सोवें की ममूना तुम करी ।
म्याठे रे सजा भस्मी सम पाहर के मामी ।
संजा बाहर ते करनु सुभाव
तुम दैखि फाँसे लीजो डारि
जिन फेरनु मैं मानत नाहि
पलमाला लीजो करवाइ ।
तारा ऐ फीरैं लै बैठारि ।
सी मैं तौ बात मीति की करि रही
बाहर बेटा
मानि लीजो बात रे हमारी
तुम म्याहि दलेले लै चलयौ ।
रेमा है जीरैं बैठारैं
हम चौहान ऐं बीर
ये मांड ममवाए बीर
तुमरी मैंन भरिसे न धीर
सो साँची कहूँ बात सुनि लीजो

सजा राजा, चाचा मेरे
सो सिरु भुट्टा सौ लु गो तारा कौ काटि कें ।
परिकम्मा घोडा नें दीनी
एक ठोकर सजा में दीनी
सजा राजा चलतु अगार
जुलमी घोडा करै विचारु
गाँड् अब चौं चलतु अगार ।
मूज, वकौटा और चमारु
चौंचौ कूटै चौंचौ फारु
तो में दई ठोकर की मार
अब गाड्ू चौं चलतु अगार ।
तारे दै अब तू खुलवाइ
फाटिक की रस्ता लै जाइ
अब कछवाइनु लेइ जगाइ
वुनते हमारी तेग चलै फराइ
वे सवरे तुमनें डारे मारि
अमिरितु वूँद हम सवपै डारे
चाचा मेरे
अमरु सवनु करि जाइ
सो डोला में बीअ अपनी तुम धरौ
माढ़यौ पट्टा गाड्यौ नाहि
भामरि कैसें लीनी डारि
खयौ पकरि ब्वानें लीयौ डारि
महलन में रही रुदन मचाइ
तैनें जवरन लीनी डारि
वावा गोरख करै जुवाव
तौ जू आए जलधर नाथ
सो लै लीनी बीअ गोद में
दादा मेरे
तौ जू है गए नाथ जौ सहाई
सोवे की त्यारी करि रह्यौ ।
वेटा तुम सहर दलेले लै जाउ नारि है गई तिहारी
जूरी हमनें दई मतवारी
ठाडौ गोरख जोरै हाथ
सुनि लेउ वावा मेरी वात
एकौ देउ तुमऊ करवाइ
सोवे में लुटिया देतु गहाइ

खान पानी कछू चाहियतु नाए
बाबा मेरे
एक गुटिया बीबी रे बिवाइ
जे राम रमरमी स्यों करै ।
बचरें ते तुमतें ई जाउ
दोऊ जोगी भए सहाइ
नगरकोट की माता आइ
चौकी में जे सै माई हास
डोला में लीनी बैठारि
डोला जाको पचरना आइ जू गया दरवाजे के पास
सखिया मी सारो मेरो पामो जु नमस्कार ।
कपूआ की मैना तुम गाइ को सेउ वा नंबर की नारि ।
धरि लई बीप डोला में न्यारो
सबा राजा बड़ी पिछारो
मासुन की बधि रही धार ।
बीप हमारो जाति ऐ करि भामें पाइ-बजाइ ।
करि भामें पाइ बजाइ मात रहि गई तिहारी
स्याते तुम सै जाउ
बचनन की जे बीबी बीप हमारो फेरा लै गई ऐ बाम में जाइ ।
सो धरि लई नारि डोला में जामें
सो बागर देस कू चलि दियो
जामें जोड़ा ती खूब उड़ायो ।
सारद माइ सुरति करि दीक
ग्यान दिया मोकू परमेस
पति भरता बर बालक जनम्यो
बिकट भुम्मि त्या बागरदेस
जको महरी बनी पोर तैरो नवकोली भीर कनई सेत
जाएयो जू ट की भाजै मेदिनी कासिम खेत पीर तेरो भेंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन जामत ऐं तोइ जाएमी देस
नावन की करताई मान्ता राखी नाथ भेक की टेक ।
जेबर राजा सरग सिधारे
सै जाहर गादी बैठारे ।
खेलि सिकार जाहरे बीरा
फिर मौसी के धामें
जिहे भुम्मि हमक ई मौसी पिता को नामु चलामें ।
कूमा भीर बाबरो मौसी सायर ताम खुदामें ।
नाहरपना ते बसिकें मौसी न्यारी भिन्नी भिजामें ।

न्यारौ किलौ चिनामें मौसी छोटे छोटे बुर्ज वनामें
छोटे छोटे बुर्ज वनाइकें उनपै तोप धरामें
जवई जाइ गाम अपनें कू गाठि कछू ना बाधें।
सो हात जोरि तेरे करें निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
थोरौ सौ बिसवा बाटि दै।

लाला खेलन गयौ सिकार औलिया ऐ आमतई समझाऊ
ढिग लु गी बैठारि पोर ते भुम्मि की बात चलाऊ।
मन सन्तोक धरौ रे जौरा, उर्जन सुर्जन
बैहन के बेटा
करि दु गी तीनिरे तिहाई
सो आवे मेरौ औलिया।

माता तेरौ जाहर सिर्री दिमानौ
बागर देस में है रौ रानौ
तेरौं जाहर ऐसौ धीगु
मागे बिसे दिखावै सीगु
जैसोई जाहर ऐसोई सिरियल
सो हात जोरि तेरे करै निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
सो जापै तौ लिखवाई।
बाछल रानी कहत कहानी
मैं पतिभरता जगनें जानी
द्वात कलम महलनते लाइदै, जेठनु भुमि की ठानी।
बाला तन ते मैंनें पारे, अन्तर कछू न जानी।
वडे भए जव बिसे भुम्मि की ठानी
सो बाछल भोरी
समझी थोरी
व्वा मैया नें
द्वात कलम मगवाई
सो सजा की बेटी लाइ दै।

सीलमत सजा की बेटी
तैखाने में आई।
मनते अकलि उपाइ कुमरि नें द्वाति कलम दुबकाई।
सासुलि टूटी क़लम औंधि गई स्याही

मोइ महलन में ना पाई ।
सो हाथ जोरि तेरे करूं निहोरे
सासुमि मेरी
नरसीर्न पकराई
सो राति पुरोहित लै गए ।
५ दोमें सिरयस बड़े गुमान
तै तोरी मौसी की कानि
लै सिरोही बन कूं आइ
जाहर मारि मम्मु हम जांइ
तैमें सिरयस माइ मी मांड़
दोइ करै महलन में रांड़
मारें पीर करें हैं टूक
दोनें घर घर की मयचाइ दें मीक ।
पाप के बीच पाठि मति बावै
ऐ संवा की
तेरे नैननु ज्वाली छाई
मौसी ते नाही मति करै ।
बेठ बड़े मैं सिरिमल छोटी
मैंस अमत मोइ दैते मारी
मैंने जाने सूरे पूरे
तुम निकरे चूरे के कूरे
बाज बेठ उठि बाज सबारे
बे बावर कहा कारे
मेरी घर की सासुमि मैंरिन हुनई बाई ने तुम पारे ।
बेठ बड़े मैं सिरिमल छोटी
मैंने जाने मरद भये काजन के चोरी
मेरी बारी बलम वर नाइ करी महलन में चोरी
सो कुल बैम बीरन कूं मारैं
सासुमि मेरी
बीमनु छोई हलु नाई
सो मार्वे मेरी मौसिया ।
६ सीलमत राजा की बेटी रहवाने में रोई ।
बामर बारे पीर मौसिया मानु पंतिया बाई ।
माता भूम्मि लिखति ऐ तेरी स्याम चलैं कछ मेरी
प्रजमति होइ तौ माज मौसिया
बामर बारे
मू ना रामा

छिन भुमि हाँति रे पराई
सो डुकरिया वाटैं देंति ऐ।
देवी जाहर खेलैं सार
मीरा गाजी करैं जुवाब
जाहर पीर महलन कू जाउ
तिहारी वाँगर वाटी जाइ
छोड्यौ पासौ पटक्यौ दाउ
लीला घोडा तुर्त मगाइ।
जाहरपीर वडे परवीन
कसि वाघे घोडन पैं जीन
सुई सुरख सीस पैं पगडी
हाथ वनी भाले की लकडी
उल्टौ घोडा राह लगायौ
ठम ठम ताजी नचतौ आयौ।
उगिलिपरी तरवार, हाथ ते भालौ सटक्यौ
फडकै दाई आखि, होइ वागर में खटकौ
मारि घोडा महलन कू आयौ
दादा मेरे सो पौरी पैं झुलम्यौ आई
सो जाकौ लीलौ घोडा हीसियौ।
७ वजी खमखमी टाप, भये महलन हुकारे
भाई अजमत धारी पीर, टूटि गए वज्जुर तारे।
अव तौरी सिंहु पौरि पैं गाजैं, दरवाजे बाजैं तरवारि
वेटा समूही परिकें करियौं रैलौ।
तुम पहलैं वाटौ सहर दलेलौ।
जो कहू वाटैं आवैं आधु
मति मानौ जाहर की वात
तुम फेंट पकरि डारौ गलवाई
वागर वाटौ तीनि तिहाई
ठाडी माता अर्जु करति ऐ
उर्जुन सर्जुन
मन में दहसति चौं खाई
समुही वेटा ज्वाव करौ।
सुर्जन वात चटपटी कही
वाँह पकरि वाछल लै गई
जौ जौरा जिय में दहलाउ
तिहारी राह वनी मोरी मे जाउ
जो पाग उतारि काख में दीनी

छन बीरम्नें
बाबा मेरी
मोरी की राह रे सिधारे
बाछल मौसी राम् राम् ।

८ दोनों दौनी औधा निकरि को गए माथी रूप के वीरा ।
जाहरपीर महलों में थाइ गौ मया बाबा गोरख का चला ।
घोड़ा सवायी बुड़सार में सहरी मू ये में
सिरियल मारि बिछाइ दियौ पलिका ।
बैठि गयौ जाहर नर बंका
पगड़ी में सोने को झब्बा
मानि बरे थाकूत के डिब्बा
सिरियल नारि सजी गजबेली
थापु सजी मौर संग सहेली
पीए रे भंग भुचाए बली
ग्रब सिरियल नारि खड़ी मस्तमस्ती
फेंकी कलम पटकि दई हाति
वा थपने बीर को मूड़ सिरोहीते काटि।
ठाड़ी थोट थोक बंगला की
वो संजा की बेटी
बीरो रोवि रे लगाई
बलमा मेरे पाविसें ।

६. मैया देखि देखि कें मूरति अम्मा ढीक फोरिकें रोई ।
बेटा एकन के ऐं लाख लाग एकन के ना कोई ।
ग्रम्मा कौरम की तौ लाख लोग ग्रौर कौरस का ना कोई ।
उड़ न मुर्जन कें साल लोपुऐ तेरी बानि परेसी
माता मेरे तीऐं लाल लोमु ग्रौर पुत्ई कौना कोई
सो मोमें बिमे तलक तू दै दै
जाहर बेटा
ए बाबरिया
जाहर करिसे लड़ाई
बीरो नौ बिमला बांटि दै ।
माता में नामु भूमि की सौयी ।
जाहरपीर की भजरपो होपौ ।
बमु बग्द टूटि गए बाबा कै
दिल में मैना है गए राने ।
को कोई कहुंतो इतनी ग्रौर

वाकूँ मारि डार तौ ठौर
सो तेरी कुक्षा जनमु लियौ ऐ
वाछल मैश्रा
ए ठकुरानी
तोते मेरी कछू न वस्याई
मर्दन के विसवा न वटें।
१० मारें मारें रिसके मारें निकरि जो गया वावा गोरख का चेला
कासौ बी देंति लगाइ
सजा की वेटी भोजन लाई तू जैलें चित्तु लगाइ।
अव कें चलैगी दल में तरवारि
समझि बूझि लै मेरे वलमा तेरी वरनी रही ऐ खिमाइ।
वादर फारे जा राड नें
वहनौतऊ लीए पारि।
मौतु करिगे दिल्ली तक जागे वास्याइ लामें चढाइ।
हम पै गोरखनाथ सहाइ।
चौदह सै सोटा ऐसे चलैंगौ, व्वाकी एक चलै न तरवार।
एक न मानी वांगर वारे तौ जानें लीयौ जीनु सजाइ
फारिका डार्‌यौ जानें घोडा पै, भालौ लीयौ उतारि।
जाकी धनऊ खाति पछार
म्वांते चलतौ है श्रायौ, तौजू है श्रायौ परभात।
उर्जुन सर्जुन दोनो श्राए।
मौंसी वे रहे वात लगाइ।
बेटा नाश्रौ रिसके मारें पीयौ दूध
कांसौ लाई लगाइ कें
सो भोजन फेंक्यौ दूरि।
मेरे दिल में उठति हिलौर
वांधन कौ छौना गयौ, वांगर में नांइ मेरौ श्रोरु।
११ म्वांते सुर्जन चल्यौ पास मोदी के श्रायौ
सुनि रे मोदी वात मेलु बाबा नें खूब बनायौ
सुनि रे मोदी वात
भोजन करि तैयार बीरन कूँ, हमें लड्डू देइ वताइ।
वजन वताइ देउ ऐ सहजादे
जामें कितनौं देंइ किनकु हम डारि।
१२ सवा पांन सेर के चार्‌यौ लड्डुश्रा
नेंक जामें दीजौ जहरु मिलाइ।
हल्ला मति करियौ वांगर में, हम पीर ऐ देंइ खवाइ।
म्वांते घोडा दीए हांकि

मैल पढ़ी ऐ ब्या बनखड़ की
दोऊ जोत ऐं जोहन पै बैठे ध्यान ।
बैठे जोत ऐं ध्यान लिया जाहर की माई ।
माई ब्या जाहर ने लीनें जानि
कुमरि मई के बंधी कुसाई ।
जो जाहर में ब्यारि बिछाई ।
कुमरि कलेऊ महलन ते लाए
दादा मेरे
माता ने करी रे लड़ाई
सो बत्या तन में लगि रही
१२ मैया जाहर दमेले है जोरा हाँके
सगुन भए ऐं बाँके
कपटी माइ जाहर पै बैठी
अपने मूँ हुड़े मीमे ।
अपने मूँ हुड़े मारे—
पहलो लड्डू दयौ मरद क भई ऐ अमिरत की बूटी
पुन जौरान को मोठि दयौ हिरदे की फूटी
दूजौ लड्डू दियौ गहाई
जाहर अमकी गयौ चढ़ाई
जौ न मरैगौ पीर मोति दोऊन की भाई
एक लड्डू या में तै ई जौ करे
लै जौरान के हाथन धरे ।
देखत जोरा पीरे परे
जैसें मानौं नाग मूअनी में डरे
मौ देखन लड्डू या पीरे परि गए
दादा मेरी
गरद गरम भई भारी
जौ लड्डू या दादा जाहर के ।
११ जाहर नाम बनि भारत जपाए
जेतनु नाम सूरंगो आए ।
गेंदि पहर मरदन को सीयी ।
बिल की प्याली पीर ने पीयी ।
पीयी प्याली पायी न लहरि
जाहर पीर काढ़ारखौ जहर ।
लहरि सिरोही नीचें आई
मारि झारि फौलादे भाई ।
पर बनि हम पै बनि आई ।

विसके लड्डू लाए वनाई ।
ठेंठर खोटी जाति जहर लडउन में दोयो
तुम मेरे नगर मे रहो रोग सुरई न को पीयो
जो जोरन कूँ देइ सहारो
गधा पै देउ चढ़ाइ, करूँ जाकी मुहडो कारो ।
हम लैन कहत ऐं भुम्मि, उलटि भयो देस निकारो ।
वांधन कूँ मडोल कडे पहरन कूँ तोरा
वैठन कूँ सुखपाल ग्रोर हायो ग्रौ घोडा ।
सो करत ए ऐस पराए पोछें
उर्जुन सर्जुन ए मौसाइते
दादा मेरे
खातए हम पान रे मिठाई
सो ग्रापुनि जोरा निकरि गये ।
१४ म्वांते सुर्जन कहे वात एक मेरी कीजो
तुम दिल्ली कूँ चलो सहारो ब्वाऊ को लीजौं
तुम ग्रच्छे कसि लेउ जोन
दिल्ली ज्याते दूरि ऐ
सजा जू पहुँचिगे कितनी दूरि
१५ धरि मसक्यो सुर्जन नें घोडा
घरि मसक्यौ वोरनु घोडा
घोडा पैते भरतु उसास
एक डोकरी ऐ पूछन लाग्यो न्या कौन की ऐ राजु
रा राजा को काऊ ऐ मति पूछैं
वो सहजादो लाल ।
वनन में वोह खेलतु ऐ, काऊ पैते नाइ लेंतु भेजऊ दाम ।
ऊटन केऊ हलकन वारे ज्वान
जे सवरी देखि राजुऐ जामें जाहर ऐ सिरदार ।
ऊचे कू चाहे नजर परि जाइ
जे मौसाइते दोऊ ऐं ज्वान
मेरी तौ जे हरि फोरि जागे, मोरे सुनि लेउ घोडा वारे ज्वान ।
थोरौ सौ राजु ऐ उर्जन सर्जुन को, वे मौसी पै लैंइ लिखवाइ ।
जा डोकरी नें वादर फारे, जाऊते पहलें हम है ग्राए ठोकि वजाइ ।
व्वाकी एक चली हुति नाइ
जहर के लड्डू हम लै गए वनी के वीच में
व्वापै है गयौ नाथ सहाइ ।
स्यापन के जहर ते बुनाग्रो मर्यो मात ।
हम दिल्ली सहर कू जननी जात

हम बिस्सी कू जांइ, बास्या के औरें पहुँचें
जौ कहूं बरि ले पीर
बारनी बियान के राजा मामें बागर की उठाइ दिये कूरि।
बेटा मेरी कही तू मानि
अब कें तो माता ते मिलि भामो सेवी बहू ऐ समझाइ।
मानि कह्यो मेरौ उनु लई बीर
बो कही काऊ का मानति नाइ बामा को उड़ाइ मयौ कूरि
बाहर कहता है—

१६ 'माता सुत काका की होती भैया
करि देती ब्याह तीनि तिहैया
सुत फूफी को होंती बीर
सब फौजन को कर्रे अमीरु
जौ कहूं होंती तेरी जम्यौ
सब बागर को मालिक बन्यौ
मामें बिसे समक माउयो
बाग्रम माता
ऐ ठकरानी
बोलु रही सिर बाई
मरवन के बिसबासा घटें।

१७ आगें घोड़ा भयौ सजाइ
घोड़ा भयौ ऐ सजाइ
बिस्सो शहर कू जात ऐं बागर माऊ और हाथ
जौ कहूं बिस्सी पकरें बाह
नो करें मऊन के बाग
म्याते लाला चले फेरि बिस्सी में धाए।
औरा धाए बिस्सो खेत
चमरि रहे लाला के महल
बौ तला निरदार है
ब्याके सग सर्बंगो बू बाकी है ऐ निरदार
तो एक सिपाही ऐ बूझन लागे
राजा मेरे
कहा होति ऐ ऐ बाम्रमाई
सा बाम्रमाई भक्ता कहां मिलै।

१८ हरी हरी मिलम बिछी ऐ दर्याई
प्याली गिरें भरि रहे ऐं सिपाई
नो दूटति तान धार तबलन पै
स्या होति ऐ बाम्रमाई

वाछ्याई झडा म्वा मिलै
म्वाते सुर्जन चल्यौ फेरि दरवाजे पै आयौ
पहुच्यौ ऐ रमनीक
तखत पै पहरे दारुऊ पायौ
पहरेदार कहै मेरे बीर
कैसें औ मन दिल गीर
हम कहा पूछतु बात
व्वास्याइ ते दादा हम मिलें
सो हमें दीजौ गैल बताइ
कौन रजन के पूत कहा गढ-किले तुम्हारे
रौतिक रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ वास्याइ लागतु चाचा
महम किले पै बज्यौ नगाडौ
व्वा दिन पाग राजा रूप ते पलटी ।
सो परि गई लाज पाग पलटेकी
दादा मेरे
का हौंति ऐ बाछ्याई
वाछ्याई तबला कहा ठुकै
१८ इतनी सुनिलई वात ज्वाव ज्वानन नें दीयौ
पिरथी राज भयौ मन फूल
चार्यौ दिसान में जाकौ राजु रह्यौ चार्यौ खूट
सो जानि अजाही तेरी जाइगी
व्वा चौहानीन में
दादा मेरे
मरिगे जहरु विस खाई
सो तेगा हमारै ना फलै ।
१९ "लम्वौ की यौ हाथ
सलाम वाछ्याइ ते कीनी
वाछ्या ठाडौ ऐ करजोरि
कौन रजन के पूत ओ तुम भौतु मलूक रखत औ मोइ।"
"रौतिक रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ बास्या लागत चाचा
महम किले पै वज्यौ नगाडौ
लाख खिचौ तरवारि पीठि दै व्वा दिन भाज्यौ
मेरे पिता नें झुकाइ दए हाती
व्वा दिन पाग राजा-रूप ते पलटी
सो परि गई लाज पाग पलटे की

बाबा मेरे
खोजी फिरावि रे हमारी
मावे में मतीजे सपत एँ ।
२१ कै कोई जाहर जिन्दु मरे राठौरी रामा
जो दिए हात की बाइ बरें बोड़न को रामा ।
मू जमींदार अपनी भूम्मि की
जा में कितनी जोर ।
हटिया गाडू बोरमा तैने कहा मचायो सोर
सो ठाडो वास्या कहि रहू यो
जाहर मलवेसो हा
बाद रह्यो अका रेतु
पुण्डीर, कीए मसल मिजार, बाकडे सब माहारे
बे खबर वारे कौन बिचार
बे चाकर है रहे हमारे
सिकरवार परवार
किए कछवाहे तड़कर
पुण्डीर कीने असलि मिजार
बे परे कैदि में बत्ते बार
कैदि किए जामो कमराई
बाद्यो दिसम में फिरति दुहाई
सो इतनी जोर दयो थो बाबा मेरे
दिल्ली के बावे बरि रह्यो
२२ जीमतु छोई हतुनाए
बात सुनिलेउ हमारी
तुम बापर की करि लेउ त्यारी
हम बात मडू एए ठीक
मू मरदानो ऐसो ऐ
सो दिल्ली की उडाइ देगो धूरि
ठीक लेगो मारि करै तेरी दिल्ली बस में
तारा पड़ सो नइ नहीं नहीं किंगु सो पोता
मीरा गाजी सो मरदु नहीं सो बाने तारागढ़ तोरा
बादशाह में लिखवाई पाती
चारि रूकन चारि चिट्ठी डारीं
लै चिट्ठी महरी को चल्यो
बीच मुराम् मड़ ना करयो
मेरठ के दरवज्जे पै गयो ।
मेरठिया बूझै बात

कहा को चौकीदारु ऐ, मो साचुई साचु वताइ
नौरग तौ सिरदारु है, व्वाके हैं पहरेदार
चिट्ठी दीनी हात में तुम वाचिलेउ सिरदार
दरमनिया कहि रह्यौ वात
लौटि पाछे कू जइयौ
ञ्या नाइ हमारौ सिरदार
हस विनास होइ वागर मे
सो हमारी नाइ फलै तरवारि
नाइ फलति तरवारि
चेला गोरखनाथ कौ वो दे सोटन की मार
हम चढि कें कैसें जाइ
चौहाने में हमारो भैनिएँ, राठौरीनु लगि जाइ दागु
सो कहतु ऐ वात, लौटि जा ।
दादा मेरे, पिछमनौ
ठाडौ अहदीते कहि रह्यौ

२३ म्वाते अहदी चल्यौ फेरि रौतक कू आयौ ।
रौतक पूछै वात कहा हरआनी आयौ ।
वौ हरिआने कौ जाटु
ऐसौ तौ मिरदारु ऐ जाहर ऐ लेगौ मारि कें
तुम म्वाई करौगे फिरादि ।
जे आमें दखिन के दक्खिनी
नाचें घोडी झूमें हतिनी
जे आयौ हरिआने कौ जाटु
जाइ पर्‌यौ जमुना के घाट
जे आए विंदावन मुडिया
मुडि रही मूछ, कटाइ आए चुटिया
सो नरवर खेर जुरी दिल्ली में
चाचा मेरे
लखु आवे लखु जाई
सो फौजन की गिन्ती ना रही ।

२४ हवलदार वास्याइ वुलवावै
वागर के जानें करे पिहाए ।
चलित अगारी फौज
हम लडिबे कू जांत ऐं, सो वेगि सजाइ लेउ फौज
इतनी सुनि कें वात ज्वाब लाला नें दीयौ
गो छोटौ सौ सिरदारु
व्वापै कहा फौज पल्टनि ऐ मूडन में करै अपनौ राजु

दल बादर तम्बू तन्यौ जोति गइयौ झगमाल
लसकर भारौ पीर कौ
सो दहलान बढ़ पाताल
सो फटि फटि धूरि गई अम्बर में
सूरज में जोति छिपाई
या की भान गरद में घटि गयौ
बादशाह के जोर लड़ी
सुनि बछमा मेरी बात
तुम बागर के पीर भौ तिहारौ नाह करौं तरवारि
नाह छजाए जाँउ ऐ मिचल जानि कें मोहि
हिरदै में तें बाउये धरम् बदु भी तोहि।
जिमक हुरमी है गई, जिन गई पलटनि तेरी मोल
ऐसी जौवतु ऐ मोह,
बोलो किते ठोह
—सो इस बिनास होइ बागर में
—बछमा मेरे
—अबौ बादशाहजादी कहि रही
२५ म्हारे लसकर चल्यौ फेरि दुनी में भायौ।
बाद बादसाह पूछें बात कौन को रे जिरस्यौ भायौ ?
बाबा मेरे, जो म्हारौ ऐ नातेदार
म्हारौ मानजौ लगतु ऐ सुनि लै मेरी बात
डेरा दै दै सीम में सो हम है माय म्हाके पास
बाछमाह करि रह्यौ म्यान
तुम हिन्दू बलवीर
कहुँ तुम भिडि मति जइयौ
हमारें कोई नाह बिगाड़
मेरा जोबन की बाँधि गई
सो तुम जीयौ बाबा अपने आपु
हाँसी जोगी भए हिसार
भाई जौफर की म्हाँ लग्यौ बजार
बादसाह में भिजवाई पाती
आइ मिलि भानज मेरी छाती
बड़ौ भरोसौ बाबा मोइ
इज्जत करूँ फौज की तोइ
बाम परगने बैठ्यौ जाई
जौरल ते मेड़ सीमि सिहाई
माचि बाद बनि ढेड़ लराई

ज्यों तौ कोपि चढ़ी वाछ्याई
लै चिट्ठी अहदी कूँ दोनो
दादा मेरे
वाँचिली जौ हुरमरे सवाई
सो परमानौ वास्याके हात कौ ।

२५ लै चिट्ठी अहदी कौ चल्यौ
चल्यौ चल्यौ हाँसी में गयौ
नीचें चाहि नजरि फिरि जाई
जाकी वस्तो वडी लग्यौ परकोटा
अव सवु हासी कौ एकु लपेटा
नीचें चाहि नजरि फिरिजाई
दरवाजे पै तारी पाई
लै तारो जानें तारौ खोल्यौ
वाला के वो जौरें गयौ
जाइ वाला पूछतु वात
कहाँ के तुम सिरदार औ, कैसें आए हमारे पास ।
कैसे आए पास
सुनौ मेरी वात
अहदी दैरह्यौ ज्वावु खवरि तोइ अवऊ न सूझौ
जे दल तो पै आए घूमि
घेरि तेरो हाँसी लीनी
चिट्ठी फेंकि तखत पै दीनी
वो वालानें वाचि हात में लीनी
मसि भीजत रेख उठान
लिख्यौ वास्याइ कौ फार्‌यौ
अहदी मीड़ै हात, कहा गजवानौ फार्‌यौ
सो चनन के भोरें मिरच चवाइगौ
वाला दादा मेरे
करुगौ हलकु भयौ जाई
परवानौ वास्याइ के हात कौ ।

२६ जानें अहदी लीयौ घेरि फेरि गलवाही डारी
अहदी दयौ खम्भ ते वाँधि
जामें दई कुरेंन को वानें मार
मोइ मति मारै दादा मेरे, मोइ मति मारै
जे गजवानौ वाला तू चौ फारै
मैं ऊ तौ नौकरु वास्याइ कौ भैया
चिट्ठो लायौ वास्याइ के हात की

तुम परवानौ अपनौ देउ
तुम परवानौ लिखि देउ
सो महली ठाड़ौ कहि रह्यौ
जामअस्त दीवान बैठि पालकी में आयौ
जामअस्त की कैसी कीजै
हटिवौ कैसो होइ जंग चौरे में कीजै
हटिवौ कैसो होइ युद्ध सरवरि की कीजै ।
बैरी आवै द्वार बैठ्या जाऊ ऐ कीजै
सो हटि हटि युद्ध करै हासी पै
सो दादा मेरे
बोलि रह्यौ सिरदाई
हासी पै साको हम करें ।
२७ लै चिट्ठी महली को चल्यौ
बीच मुकाम कहूँ ना करयौ
चल्यौ चल्यौ तम्बू पै आयौ
चोठी फेंकि तखत पै दीनी
जाधूजाने बाँधि हाथ में लीनी
देखत चिट्ठी परियो बूझा
भोर करै हासी पै जूझा
सो जगन के भोरें भिरन चलाइ गयौ
बाला दादा मेरे
मरगी हलकु भयौ जाई
तम्बू मे ते बाल्या कहि रह्यौ ।
२८ चारि पहर रजनी के बीते
तुम करी रसोई भोजन भी के
बिगुल बज्यौ बाल्या बजवाई
सूबेदार ऊ फौज सजाई
तुम बाँधि खेड गुलमान कटारी
सू बेदार ऊ चाली पैच
अब घेरि लेउ बाला के महल
सो कटि कटि ज्वान गिरैं धरती पै
बाला दादा मेरे
फौज रही सिरदाई
तू भाग्या बागर देस कू
२९ जामें हाथो लीनो तोरि लूटि दिल्ली पहुँचाई
बाला बागर माग्यौ जाइ
जामअस्त ने करी पुकार

सुनिरी नानी मेरी बात
अब जौरन नें हम डारे री मारि
जौरा आए हासी खेत
म्वा दीखि रहे ताला के महल
जानें हासी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुचाई
सो ऐसा जुलमु कर्यौ ऐ नानी
उर्जुन सुर्जन नें
रूप मत के
मन में दया नाँइ आई
जानें भानज डार्यौ मारिकें ।

३० म्वाते पल्टनि चली फेरि बागर में आई
सासुलि गढति पडापड देखि, मेख
घोरा पडलि सेत, तूतौ मौंहरे ते बाहिर चलि कें देखि ।
नाहक रारि करी जौरान ते
फौजैं लै लै आए माजनि मौहरे ते वाहर चलि कें देखि
अपने बलम कौ मैं तो घोडा पाऊ
घोडा पाऊ, पाँचौ कपडा पाऊ
कपडा पाऊ, पाँचौ हतियार पाऊ
लैकें बीकू वास्याइ ते मिलि आऊ
ऐसे बचि जाइगौ सासुलि हेरौ तेरौ बेटा
औरु अब बचिबे कौ सासुलि नाइ
जापै जे दल आए घूमि
गोरख तुही
'अरी मेरी री जाहर नाहर भया ऐ
सजा की बेटी,
जाइकें चौं न देइ जगाइ
अरी बहू आजु देइ चौंन जगाइ
गोरख तुही ।

३१ नासिका में बारी चुन्नी
मोतिन की तोतादार
जापै घाघरौ घुमकदार
टेडिया हमेल हार
रानी पायल की झनकार
गोरी बलमै जगायन गोरी जाई
सो पिउ की प्यारी वल में जगामन गोरी जाइ ।
थारऊ सजाइ लियौ
चौमुख जराइ लियौ

मैया सब घेरि लीनी
बच्चन पै परी भीर
जिनको कौन बचावै बीर
बलमा सोइ रह्यौ चित्त दबकाई ।
तैंने जाहर बैर कर्‌यौ चौहान पै
कोपक चढ़ी बास्याई
सोइ रह्यौ चित्त दबकाई ।
जब सिरहाने जमि पाइत जावै
ठाड़ी ठाड़ी रानी पै बलमै जगावै
कबऊ तौ ठाड़ी तरवारें सहरावै
मेरे तौ जागें बलमा बागर तेरी बैरी
जीते हौसुमिमा में पूती मेरी बैरी
बली जम्मौ बलमर्द बली की पूती देही
ज्यादे किद पई सुन्दर नारि खड़ी मोह रानी देही
माई टूटे पलग के तास महल को खिचि परि रेही (बम्म)
पाटो उडि गई फिरच-फिरच टूटगी सिरहानो
सो ठाड़ी मोट चौक बलमा की
बो संघा की बेटी
बीरो दीठि रे लगाई ।
बास्याइ चढ़ि आयौ तेरी सीम में ।
१२ 'मानि लै बचन पूत मेरी
पाच गाम चौहान कू दैदै जाको सहर बसैगी बेरी
सो मानि लै बचन पूत मेरी ।"
मरी कैसी हौसुए रांड मुम्मि दैदै
मैं टूकड़े है है जाऊ भुम्मि पै
जे चौहानी बेरी
सो कैसी हौसिए रांड मुम्मि दैबी
मरे जाहर ठाढ़ी करै जुबाब
तू नरसीम पांड़े ऐ सौंति बुलाइ
वानें नरसीम् सीयी बुलाइ
जे पस्टमि चढ़ि भाई बेटा
बागर बैरीऐं सबरी तेरी जाइ ।
तेरी बागर बैरी जाइ
मज्जू चमरा बोमिनैं तेरी लूट चली तरवारि
तेरी बाना सीधी घेरि लूटि हांसी की करवाई
गुम पै नाथु सहाइ

फौज हम पै हति नाईं
वे कछवाए भरि रहे जोर
मांगे लायौ व्याहिकें सो वो खूबु दिखामतु जोर
मो सोमत सिंघु भयौ कछवायौ
लडिवे कू ठाडौ है रह्यौ
सो सुनि ठाडी माता कहि रही
इतनो सुनि कें बात ज्वाबु लीलीनें दीयौ
वागर वारे पीर तैंनें डरू काकौ कीयौ
मैं तो ऐसी भरू उडान
नौ जोजन मरजादै जाऊगी फारि
ऊपरते छोडौ तरवारि
नरसिंगु पाडे देंतु जुवाव
अरी माता कहा लीला वो ऐ सिरदारु
लीला नें तोरि कें रस्सा ऊ लीनौ
वढि कें पासु महल में दीनौ
एक गुरु की पैदाति
नरसिंगु भज्जू और चमारु
हम पै तौ जाहर सिरदारु
भैया देखि चलैगी गुपत की मार
सोटा वारौ आवै वावाजी
माता रचादे (घोडा)
वुसवनु डारैगो मारि
तुम कसि वाधौ अव जीन
वोलि लेउ नरसीगु कू नीर
भज्जू चमरा चलै अगार
जाहर तौ लीले के गात
खूबु फलै वीरन तरवारि
हलकारो जानें फौजन में वोल्यौ
वे गजवानौ कैसौ वोल्यौ
नौसै नवासी तगु जो टूट्यौ
तुम सुरजनै लेउ वुलाइ
राजा पै लायौ काऊ देवता पै
सव की हात में तें छूटि गई एँ तरवारि
आजु सवकी छूटि परी ऐं तरवारि
भैया मेरे घोडा लेंतु वढ़ाइ, पिछमनौ तू मति करियो
नरसींगु कूदि पर्‌यौ कर जोरि
कछवाए लीये घेरिकें, मारि मारि कें भजाइ दए सवरे और

मज्जू चमरा करि रह्यौ जोर
घेरि जानें गाके लीयें ।
दोऊ मचाइ रहे सोर घेरि जानें सबरे लीये ।
कर जोरें सिरदार
उज्ज न सुर्जन लीजों मारिके
माई म्हारी माई फली तरवारि
जब दल में जानें जोधा हंकार्‌यौ
सोमलु तो बास्याह जानें बाम्यौ
सब दलु लीयौ वाकौ मारि
भरे अबौ बास्या जोरें वाके हाथ
बास्याह पै महरी बनबाऊं
अब मोह मति मारै बीर
हैमुसहाय बनिया जानें जाते पाते चढ़्यौ
हैमुसहाय बनिया जानें पइया परलु छोड्यौ
बास्याह पैर महरी बनाबाऊ
बनिया ने कलस चढाए भारी
गोरख तुही
बे कहूं देखे तुमनें उर्जन सुर्जन
अजु न सुर्जन दोऊ मौसाइते रे माई ।
कहा रौवन के वे सिरदार
बास्या नें बंदी करि दयौ हाथु
दोऊ मैया जात ऐं पकरि लेउ महाराज
इा तिहारी महरी बनबावें
कलस चढावें दिनराति
उजु न सुर्जन जानें जात जात घेरे
जात जात घेरे दोऊ मौसाइते माई ।
दोऊन का लीया सीस काटि
दोनों रे सीस चुरजी में धरि लीए
उजु न सर्जन दो मौसाइते भाई
याइकें सलामु अपनी अम्माजीते कीनी
'कै दल हार्‌या बछड़े कै दल जीत्या
कैई दल हार्‌यौ अम्मा कैई दल जीत्यौ
मरसीस पाऊं तेरी बांतु जात चूझ्यौ
दूजो भजायौ बास्याई झूट्यौ
मज्जू चमरा तेरौ काम को भायौ ।
जब दल में जोधा हकार्‌यौ
दीयौ भजायौ बास्याह को भायौ

लीले घोड़ा के पैर घावु-घावु आयौ
दुपटा री फारि व्वाकौ पैरु मैंनें वाध्यौ
दिल्ली कौ वास्याइ मैंने पैया परती छोड्यौ
हेमूसाह वनिया मैंनें जात जात घेर्यो
व्वापै तौ महरी वनवाऊँ
वनिया कलस चढावै भारी"
गोरख तुही
"अरे वे कहू देखे तैनें उर्जुन सुर्जन
उर्जन सुर्जन दोऊ मैंनि के वेटा
मैंनि के वेटा वेटा वद रे तिहारे
वेटा उनकी कहौगे खुसराति
सौने की थारी अम्मा माजि-माजि लैयौ
जौरन की री सौगाति दिखाऊ
थारी लाई माजि
जाहर के आगें धरी, थारी में धरे एँ दोऊ सिरदार"
"मैंने तौ पारे वछड़े तैंनें चौं मारे
जिनकी तौ कामिनी वेटा कैसें कैसें जोमें
लवे लवे पट्टे इनकी खुली सी वतीसी
जिनकी रे कामिनी वेटा कैसे जोमें
तोइ नेंक तरसु आयौ हतु नाइ
तेरौ रे मुखड़ा वेटा कवऊ न देखू
तोइ तौ रे दूधु मैंनें वकडी कौ प्यायौ
मैंनें दीये आचर कौ इनकौ दूधु
अपनौ खीरु मैंने इनकू प्यायौ
बकडी कौ दूधु वेटा तोइ जौ पिवायौ
नेंक तरसु तोइ इन पै नाँइ आयौ ।
तेरौरी मुखडा मैं तौ कवऊ न देखू"
"अरी मैया मैं तौ तोइ दिखाइवे कू नाइ"
घरतें चल्यौ ऐ जुलमी
जाकी देखि व्याही खाति पछार
'तुम तौ रे जातौ, राजा, चेला जोगी के
मेरौ देखि कौन हवाल
आजु वलमा मेरौ कौन हवाल
गोरखजी ।
"मन में उदासी तू तौ मति री लावै
अरी व्याहता नारि
वचन तौ पूरौ मैं तो, व्वाते करूगो

मेरी बालक मैया
मेरी करमु फटि जाय'
माता सुही ।
'घोड़ा चढ़ावी आगें खबर सुनावी
तुम धनि भूखी बैठी राजू ।
'दोही न रहेगी बालमा
राज पलट है जाय
भाजु बलमा राज पलट है जाय'
चौरानी जिठानी रे
बोलु बो दिनी रे बालम प्यारे रे
मोहि घर-अंगना न सुहाइ ।
गोरखजी
'जिन तो री टूटे भगती
भगतन की तो सीख्यी
अम्मा की प्यारी
आगें जाई ए घरकार
भाजु राजा जातु जिमी में पसार'
तुम तौरो रानी मोक
बानी बनाइबे रानी
फांसी लगाइ है
मोहन फैसो तेरे हात के भाव
मारें मार रिस के मारें जुलमी डिगरिजु गया
चेला जोगी का
भाजु आगें रोहिमो की देखि सैन
घर में तो कामिनि आगें रोमथि खोबी
मभी भजु न से के तो पास
तू तो रे बैसें मेरे जीरें भायी
चौहानी ऐ माणि थाइ तेरी बागू
तेरे घर में बैठा सुन्दर कामिनि
माता तो रोमथि खोबी मानु
'मोषु तो तू तोरो ठौर न दीजी
मय न ले मैया
भाजु जिमी पै ठौर मोषु हुइ गाइ ।"
इतनी रे सुनिकें आगी घोड़ा हींस्यो
बागर बारे सुनि लै पुकारु
भाजु जाना सुनि लै पुकारु
तूनी सुनाइ दै अपनी खबरु बताइ दै

लीली के गुरु भाई भैया ज्वान
तु'दिल नगरी मैंने वातजु राखी
व्याहि फें लायौ सिरियल नारि
तोकू फिरि व्याही ऐ सिरियल नारि
वो तौ री कामिनि तैनें रोमति छोडी
छोडें तौ जातु ऐ मोऊ ऐ आजु
"तोइ ना रे छोडू मेरे लीले वछेडा
तुही तौ लगावै नैया पार।"
"तोकू जिमी में वेटा ठौर जु नाइ
चौहानन कू नाए दादा ठौरु
अरे मक्के कू जाना, वेटा
कलमा पढ़ि आना
चेला जोगी के
मौलवी के जैयौ भैया पास।"
घोडा तौ रे खोल्यौ जानें करी ऐ सवारी
घोडा उडावै जुलमी आजु
कारी तौ बदरी में घोडा समानौ
उडि उडि घोडा लगतु अगास
मक्के में आयौ याकू, मौलवी पायौ
जाइ दै रह्यौ धरकार
"हिन्दू धरमु तौरे चौंरे विगारै
उम्मर के नाती आजु
कहा तौ रे असनौ तोपै आनिकें पर्यौ ऐ
चौं आयौ हमारे पास
जाहर चौं तौरे आयौ हमारे पास
"मेरी रे अम्मा नें वोली जो मारो
गु समाइ गई गोरे गात
आज वुही समानो गोरे गात
कलमा सिखाइदै मोकूँ
मक्के पहुँचाइदै
तेरौ जनमु न भूलूँ अहसानु।"
कलमे "पाक कदर वेली पाक ऐ
पाक साईं तेरौ नाम
पाक साईं केजे कलमा
कलमौं से उतरौगे पार
कुजो कलम कुरान को
कलमा मुख कू नूर।

पात पात पै मिलि गए
बाबा नबी रसूल ।
पश्चिम सहर माता ईसुरी
पूर पूरब साहु मदार
मक में टगी का पीर घौलिया
झगड़े का कमाल खाँ पीर ।
पीर विवहुना बठिगो
हाती रहु मी बसु जाइ
सीसे बारा बावड़ा सु
बरठो में जाइ समाइ ।
म्हाते बरसी ऐ रे
खेमा जोमी की भमा माजु
घोड़ा डबाबी मजु न ले पै मामी
माता ते करनु जुबाब
जीरें रे मामी जानें गुरु की फारपी
माजु बेटा माइजा बरठी के बीच
माजु होइ है रही ऐ मजु न मे ठौर
'क्याँ तौ न माऊँ मेरी मजु न ले मैया
मैं तौ मन मावै बहाँ रैहउ
तो में समायो कामिनि साऊ
घर नारी ऐ लेकें जामो समाइ
मरी माता कू बचन दीमी माजु ।"
बारह बारह बर्स भई ऐं गुजिस्ता
माजु बनी के बाड़ू बीच
सुधि औरे माई घर की बाढ़ू
घोड़ा पचाने माधी राति
'कहा रे मसनी तोपै परयी ऐ
घोड़ा पचानै माधी राति
घर क री जाऊँ कामिनि ते मिलि माऊँ
मेरी मजु न ले मैया
मेरी सु सुनि लै बुलाइ
माधी रैनि मानें बछड़े माधी राति पाछें
माधी राति महलन में बड़ा कामु की
राजा सम्भक के चौकीदार भी जगिये
चोर चोर कहिकें डारें मारि की
चौकीदार भी हमारे गस्तीमान भी हमारे
मजी क मैया जामो मैं तो माधी राति

दिन में री जाऊ ससार लखैगो
दरवाजे पै पावै वाछलि माइ
घोडा वी खोल्यौ जानें जीनु निकार्यौ
चेला जोगी के
फरिका लीयौ डारि
कूदतु आवै जाकौ उलल बछेडा
मोरतु आवै दादा वाग
म्वाते चल्यौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयौ ।
म्वाते उडायौ, घोडा उडायौ
आयौ सहर दलेले अपने गाम
अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
मूगा दे वादी,
दरवज्जे पै ठाडे जाहर वीर जी ।
अजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिगे
पहरेदार जगिगे
तुम कू चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
गस्तीमान वी हमारे
चौकीदार बी हमारे
क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम वजुर किवार
अरे करानी खोलौगी बजर किवार
तू तौरो वादी हमनें टूको से पारी
अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
मैं तौ रे राजा नैनें टूको से पारी
गैल वटोहीरा सुनिलै वात
तू तौ जाहरु ऐ चिरने बताइदै मैया आजु
जौरे हमारी तूतौ सिर कौ साईं
अरे तुम हौ सिरियल के भरतार
गगा रे जमुना तेरे ताख विराजैं
जे ही महलन में चिरने आजु
अजी मैं खोलू नांइ वजरु किवार जी
और सरापु री कहा तोइ दुगो
घरकी कमेरो
भोर परें कोडो की तोपै मार
गोरख जी ।
भोरु भयौ चिरही चौहचानी
भयौ तौ सकारौ अरे हा
सोमत ते जागी सजा की वेटी

अरे चढिकें महल पै मैं कूक मचाऊ
सोता नगर रे जगाऊ
का गस्तीमान रे जगाऊ
क्या तू भया था दिमाना
तो में लगवाऊ कुत्तों की मार
म्वाते चली ऐ धन सिरियल आई
जाहर ते करै री जुवाब
मेरे देह को, मेरे रे सिर केरे साई, चिरने बताइदै तू आजु
दाई ओर तेरे देखि लहसनु काँहि ऐं
म्हारे बाप के तू तौ रह्यौ तौ मजूरा
तैनें मैं गोद तो खिलाई
सुनि लै परदेसी जुवाव
बदी खोलै नाइ बजर किवार
जौ तू हमारे सिर कौ साई
अरे चेला जोगी के
खोलो तुम अपने बजर किवार
घोडा उडायौ रे, घोडा कूदि कें आयौ
जाकौ उलल वछेरा
आयौ महल के बीच जी।
जिन बातन्नें मैं तौ कवहू न मानू मेरे सिर के साई
ठोकर ते खोलो जी किवार
दुनिया ऐ क्या दोसु ऐ
मौपै घर की तिरिया परचौ मागै
मेरे लीला वछेडा
गुरु तौ मनाइलौ जानें आपनौ
ठोकर मारी बाए पाम की, खुलि जाइ बजर किवार लोहे सार की
घोडा लगायौ घुडसार में
हसि हसि कें बातें होइ
नारीरे पुरिष की
भोजन लाओ तुम तौ कहा बतराओ
वेटी सजा की
अपने पीया ऐ देउ न जिमाइ, हाँ।
आधी रैनि गई ऐ रे, आधी खसि आई
राजा नाए भोग विलास जी, हा
अब तौरी जाइ रहे रानी
फिरि तौ आमें
सजा की बेटी

रोजना आमें तेरे पास भी
बाछल— अरी बहू तैनें अच्छी पढ़ दीनी
सहर बसेसे की बस्ती दीनी तैनें मामतई भुल दीनी
भई ना बेटा की साथी
बोराम पीछें पिया निकार्यो गाली भी मारी
अरी रॉड तू कौन की होइगी
राजपाट गए छोड़ि पीछे भये बनोवास वासी
सिरियल—फेंकि दए बाला काप बेंदा
कबरी बन के नाम मिलाइ दै सिरियल की जोड़ा
सासु तू अबकी हो रानी
वे तौ सासु मेरी हरी हरी चुरिया अब तो हो रानी।
सास बहुरिया दोनों तू बन निकसी
ढूढ़िबी बिकट उजार
सवरीरी चमचड़ मूची री पामी
तू डूंगर मैना
कहां पुन हरियल तेरी डार
चोंच री नार की पामी ना सिपाई
सीसा सीला जोड़ा
चारों चरद बुलासा
मन में मातियों की माला
नथी तो मासी थाके हाथ।
बाधे को चावरि बो तो मारिकें बिखारे
बचपु भलकची की तो नाम्
चांदू रो टूटि म्याकी चरखो फिरंगी
बेटी संजा की
मेरी चाई पुन हरियल डार
मैं तौरी डूमर मेरी जोड़ी कूं मिलाइ दै
नहीं हति तू भी तोई पै पिराम
अब ती री बामो मैना
फिर भी तू चाबें में म्याई से करेंगी जुबाब
सासु बहुरिया रोऊ ढूढ़ति डोलें
तू कहां दुबकी बैठा रानि
अब नूं भये तोरी भरी अर्जुन से भैया
अब आइबे के हल नाह।
अरज करैंगी बहू सासु तै
मैं अब पीहर है जाऊं
पूनम की सिरियो

न आयौ नाऊ बाम्हन कौ
न आयौ मा जायौ वीर
राजा की बेटी
बिगरि बुलाई बहु जाउगी
तेरे न होइ आदर भाउ
इन महलन में
जो तेरो भैया कहूँ आमतौ
मैं जांत न बरजू तोइ
राजा की बेटी
घर झूलौ री घर पालनौ
महलन में सामनु होइ
राजा की बेटी !
रानी धमकि महल पैं चढि गई
खाती कौ लालु बुलाइ
लालु बिसकरमा
अरे वीर कहू, कै तोते बाढई
तोते देवर कहू कै जेठु
रे नवल खाती के
एकु पालनरौ गढि लाउ
काइ कौ तेरौ पालनौ
काए के वान मगावैं
राजा की वेटी ।
भैया अगर चदन कौ पालनौ
वही लाइ दै रे सुमवान
सुगढ खाती के
गुहि लैयौ लहरिया वान ।
अरी आक-ढाक गढि लागो
मोपै चदन पैदा नाइ
धीअ राजा की ।
लाला और बाग मति जइयो
जइयौ ससुर के बाग
वा बीजा वन में
लाला आठ कुठारो नौजनें
गहि लई ऐ गैल वा बीझा वन की
भैया रे आमत देख्यौ विरछ नें
वो विरछा दीयौ रोइ
चंदन कौ पौधा

हम तौ आए तेरी आस करि
मन कौ खोयौ ऐ रोइ
चन्दन के बिरवा
जौ तू आयौ भैया आस करि
मेरी लैजा गुदिया काटि
नवल डाली के ।
भैया रे हरिया काटें ना बनै
तेरी चलैगी पीढ़ि ते काम
चन्दन के पौधा
डाली पहली कुठारो मारियौ
वामें निकरी दूध की धार
चन्दन के पौधा
दूजी ते दीनी दई
तीजी में दीनी लुढ़काइ
चन्दन की बिरवा
लाला रे भरि गाड़ी चन्दन चल्यौ बे
लै गयौ सिरियल हार
नवल डाली कौ ।
गड्यौ हिंडोलौ बाग में
वे कायल-बाबल जोड़ दोऊ भानु भूलि वे
कायल भूलै बाबला बहू सिरियल लेइ न भुलाइ
राजा की बेटी ।
ग्वालि बाँदी चलि दई
तू जाहि कैरी ऐ बापु
राजा की बेटी
मेरी सासु ते क्यौं कही
दस दस दिन आमनु जाइ
बीरम राजा की
संग की सहेली बुलामती
पै सिरियल भूलन जाइ
क्या लाला बन में
भैया रे जाइ छायौ भई बाग में
जाने भूल ते बोलति नाइ
बीरम राजा की
बाबल भूलै बाबला
बहू सिरियल झोटा देइ
राजा की बेटी

भैया नरसीग मार्‌यौ रोरिका
पलरंयन में उरभ्‌यौ हारु
वहू सिरियल कौ
टूटि हारु धरती गिर्‌यौ
ऐ मन रोवै पछताइ
रे घर सासु लड़ैगी।
भैया रे भूलि भालि भ्वांते चले
दोऊन अधवर परिगो वादु
सासु वहून में
कौन पै पहरी जे चुरी
तैनें कौन पै कर्‌यौ सिगारु
राजा की वेटी
धरी अपने वलम पै जे चुरी
वलमा पै कर्‌यौ ऐ सिंगारु, सासुलि प्यारी
मरि जइयौ री डुकरिया
मेरौ री वेटा मरि गयौ धरती में समान्यौ
रग-जग नें जान्यौ
तैनें महल कर्‌यौ ऐ भरतार
तू मोइ जाइ न वतावै।
तेरे जानें मरि गयौ
मेरे नित श्रावै नित जाइ
सासु तेरौ वेटा
जौ तेरें श्रामतु जातु ऐ
मोइ इक दिन देइ न वताइ
लाल मेरे कू।
इतमें लजायौ वहू सासुरौ
तैनें दोऊ कुल खोइ दई लाज
राजा की वेटी
श्राजु सकारौ हौन दै
मरवाइ दु गी ढोल वजाइ
तैनें कुटमु लजायौ
राजा की वेटी
जौ वेटे की सादिली
तौ इक दिन पहरौ देइ वैठि श्रागन में
हाथीदात की पलिकिया जानें लई मरुए तर डारि
मैया पहरे पै वंठी
इतकौ पहरौ इत गयौ चढ़ुगयौ पिछवार

पीर मोह बसबे
बेटा हो तो माम दी
चोर बगादिबे की मांह
तू ब्याहे नाही करि मारै
मात् सकारी मांग्यी मिलै
कस्सि बताइ कठ लाम्
कहा ऐ परि पाछें ।
सिरियल मांगन कैपरी
दरिया पै बोस्यी कामुरे
भवर रतुनारी
सौने मढाऊ तेरी चोंचुरी
पामन में पदमु लगाऊं
नेंकु चीपी पीर पै
चैंगी रे बलम पै ।
मुख कि वचन मात् नहीं
कोई सिखि लिखि चीठी बांधि
बलम अपने की
काया कागद की टोटी परयी
कलम न में परि गई बांधि
बनवासी काया ।
पीर फारि कागद करयी
पंमदीम की कलम बनावै
राजा की बेटी
क्या बाहर ते क्यों कही तेरी बन नामु न बाइ
मरें के चीपें ।
बोली रे भूरि-भूरि पिवरा है मरें
ब्याके नाइ चीबे की माथ
नरकिया देवा
और पास लिखी मरमी
बाढ़ें बीच में वै वै राम
बलम अपने कूं
बोलु मारि काया उड्यी
महरी पै बैठ्यी बाइ
ग्यां बाहर बैठ्यी
बोली ती काया कहा रही
तेरी बन नामु न बाइ
मरें के जीवें ।

मैया झुरि झुरि पिंजरा है गई
व्याकी नाइ जीवे की आस
लकड़िया दैश्रा
मरि गई ऐ मरि जान दै
मैं चलत जिवाऊ राजा की बेटी
फागु दियौ ऐ बहकाइ कैं
पीरु आप भए असवार
व्वा लीले से बछेडा
घोडा उडायौ जाहर वीर नें
पौरी पै झुलम्यौ आइ
जाकी सिंघ पौरि पै ।
रानी सोमति ऐ कै जागत्यैं
तुम धन खोलौ वजर किवार
जाहर म्वा ठाडे ।
जाहरु ऐ तौ खोलिलै
नही चोरु वगदि घर जाउ
मेरी मासुलि जागैं ।
लीला दुनिया ऐ कहा दोसुऐ
घर की तिरिया परचौ मागै
मेरे लीले से बछेडा
ठोकर मारी वाए पाम कौ
खुलि गई वजर किवार म्वा लोहे तौ सार की ।
घोडा लगायौ घुडसार में
खुटियन पै धरे हथियार
पीर मरदानौ
मैया रे भरि लोटा जलु लै चली
जे धोवै वालम के पाइ
नैनन भरि रोवै ।
रानी और दिन हंसती खेलती
आजु कैसें मैलौ भेसु कहै चौ न मन की ।
तेरी मैया मोते जारु लगावै
भरतार लगायौ
चुरिया उघटी
मैं सहर करौ ऊ वदनाम
तेरी मैया नें, हा
आमन ऐ सो आइ चुके
तेरे अव आइवे के नाइ

वाभ्मन के छौना
जोगी सेयौ तैंनें भली करी
करि दु गो मुलिक में नामु मेरी वाछल माता
मेरे जिय की कहा परी
तेरे लगी महल में श्रागि
मालु जर्‌यौ जातु ऐं
वेटा महलन कौ तौ कहा जरै
सोटि लकडिया ककरा पथरा
मेरी लगी ऐ कोखि में श्रागि
पीरु भाज्यौ जातु ऐ
श्ररे मूडन पै पहुँच्यौ गयौ ।
यौं घोडा गयौ समाइ
धुर वागर वारौ
रानी तौ रोवै जाकी गोरी रे रोवै
वाछिल खात पछार
वारह वारह वर्स रे धोई तौ लगोटी
ठाडौ तौ रह्यौ ऊ दिन-राति
तोइ निरमोही ऐ मोहु न श्रायौ जी
तैंनें भैया डारे मारि
वेटा वीरन डारे दोऊ मारि
ऐसौ री जुलमी तैंनें जुलमु गुजार्‌यौ
रोमति छोडी तैंनें नारि जी ।
रुदन मचावै रे सासु वहुरिया
श्राजु श्रपनी सासुलि ते करैंगी विलाप
राड जो कीनी तेंनें जुलमु गुजार्‌यौ
वहनौतनु भूलति वैरिनि नाइ ।
जिनके काजें मैंने जोगी सेयौ
मेरो वहुश्ररि प्यारी
सेवा तौ करिकें व्वाइ लाई मागि ।
नामु जु डूव्यौ रे जातु सुसर कौ
मैंने जोगी सेए दिन-राति
मेरो सासु नें ऐबु लगायौ
सिरियल वहुश्ररि री
मेरौ पिया तौ घर ना श्रोरी
हम तौ निकासे मेरे उम्मर राजा
तोसी तौ वहुश्ररि जाइ समाइ री
मेरौ री वलमा री श्राजु तौ समानौ

इस मुलक में
मैं तो ब्याईं करंगी गुजरात
गोरख जी ।
दाईं दाईं ओर तो सिरियल मौगी
बाईं ओर बाछलि माय
बाछलि रानी बाकी माइ री
सिरियल पै तो रे चूरियाँ चढति एँ
बाछल पै गागर पान
इस मुलक में
रानी को ब्याव पूरौ भयौ
सुनि लेउ रानी